धधकती हवायें

सिकन्दर बाग़ की कहानी किताबों की ज़ुबानी

के.के. रावत

धधकती हवायें

सिकन्दर बाग की कहानी किताबों की ज़ुबानी

के० के० रावत

प्रकाशक :-
मनीराम रावत एण्ड हरीराम रावत
पी० एस०³ ९१/९२, संजयपुरम, इन्दिरानगर
लखनऊ –१६

सर्वाधिकार लेखक के अधीन

प्रथम आवृति – १०००
नवम्बर १९९५
मूल्य – सौ रू०
मूल्य सजिल्द – एक सौ पंद्रह रु०

मुद्रक :– शिल्पी आफसेट
थापर हाउस, ५ पार्क रोड, लखनऊ
फोन :– २२४०७०, २१३३९९

कवर डिजाइनिंग : मोहन वर्मा इन्दिरानगर, लखनऊ

कम्पोजिंग एवं डिजाइनिंग
फराही कम्पयूटर्स,
जगत नारायन रोड,
गोला गंज , लखनऊ

धधकती हवायें

सिकन्दर बाग की कहानी
किताबों की जुबानी

"प्रात : स्मरणीय - माँ एवं पिता जी

की

पावन स्मृति में !"

अनुक्रम

१-पहली नज़र में	ix
२-आभार	x
३-प्राक्कथन	xi
४-सिकन्दर बाग़ की कहानी किताबों की ज़ुबानी	xv-81
५-धधकती हवायें	83-103
६-सहायक ग्रंथों की सूची	105-106

मानचित्रों एवं दुर्लभ चित्रों की कुल संख्या सोलह है।

پہلی نظر میں ----

کے کے راوت صاحب کی کتاب "دھدھکتی ہوائیں" کے اکثر حصے اشاعت سے پہلے میری نظر سے گذرے۔ یہ کتاب ان کے بیس سالہ مطالعہ کا نچوڑ ہے جس میں انگریزی اور اردو کی متعدد مستند تاریخی کتابوں سے استفادہ کیا گیا ہے اس لیے اسے معلومات کا خزانہ کہا جائے تو بیجا نہ ہو گا۔ پوری کتاب میں انھوں نے اپنے قلم کا جادو جگایا ہے جس سے قاری کی دلچسپی شروع سے آخر تک برقرار رہتی ہے۔ اودھ خاص طور پر انگریزوں کے خلاف مشترکہ جدوجہد کی تاریخ کے طالب علم اور محقق اس کتاب کو نظرانداز نہیں کر سکتے۔

اگرچہ یہ راوت صاحب کی پہلی تصنیف ہے لیکن وہ لکھنے کے گر اور اس کی خوبیوں اور خامیوں سے بخوبی واقف ہیں۔ سب سے اہم بات یہ ہے کہ ایک نیک مقصد ان کے پیش نظر رہا ہے جو اس کتاب میں جا بجا اجاگر اور نمایاں ہے۔ یہ مقصد ہندو مسلم اتحاد ہے جسے انگریزوں نے اپنے حقیر مفادات کی خاطر اور دائمی کشمکش و کشاکش میں بدلنے کی منصوبہ بند کوشش کی تھی۔

امید ہے یہ کتاب قبول عام حاصل کرے گی اور اس نیک مشن کی تکمیل میں ایک اہم سنگ میل ثابت ہو گی جس کے لیے یہ کتاب شائع کی جا رہی ہے۔

ظفر

ظفر زاہدی

سابق نیوز ایڈیٹر "قومی آواز" دہلی

पहली नज़र में

के० के० रावत साहब की किताब धधकती हवायें के अधिकतर भाग मेरी नज़र से गुज़रे। यह किताब उनकी बीस साल की मेहनत और अध्यन का निचोड़ है, उन्हों ने अंग्रेजी और उर्दू की कई अच्छी किताबों से फ़ाइदा उठाया है इस लिये अगर इसे मालूमात का ख़ज़ाना कहा जाये तो ग़लत न होगा। पूरी किताब में उन्होंने अपने क़लम का जादू जगाया है, जिस से पढ़नेवाले की दिल्चस्पी शुरु से आख़िर तक बनी रहती है। अवध, विशेष तौर पर अंग्रेज़ों के विरूध हिन्दू मूस्लिम जद्दोजेहद की तारीख़ पढ़नेवाले और रिसर्च इस्कालर इस किताब को नज़रअंदाज नहीं कर सकते।

यह रावत साहब की पहली पुस्तक है लेकिन वह लिखने के गुर और उसकी ख़ूबियॉ और ख़राबियाँ भलीभांति जानते हैं। सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि एक नेक मक़सद उनके सामने रहा है जो इस पुस्तक में जगह जगह दिखाई देता है। यह मक़सद हिन्दू मूस्लिम एकता है जिसे अंग्रेज़ों ने अपने हक़ीर फ़ाइदे के लिये नफ़रत और झगड़े में बदलने का पूरे मन्सूबे के साथ प्रयत्न किया।

आशा है कि यह किताब सब लोग पसन्द करेंगेऔर इस नेक मक़सद को पूरा करने में एक अहम ''संगे मील '' साबित होगी जो रावत साहब के पेशे नज़र है।

ज़फर ज़ाहिदी

पूर्व समाचार सम्पादक

दैनिक क़ौमी आवाज़, दिल्ली

आभार

सामाजिक उत्थान की कामना कोरी कल्पना नहीं होती है, यथार्थ के वातावरण में उसकी चेतना का उत्कृष्ट रूप बनाने के प्रयास भी महत्वपूर्ण होते हैं।

श्री काशी प्रसाद पूर्व अति० निदेशक कोषागार, श्री मोती लाल पी० सी० एस० एवं श्री भुइयांदीन पी० सी० एस० जी ने सच्चे मन से सोचा एवं सहयोग दिया। मै इन सबों के सामाजिक लगाव के लिए बधाई एवं सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूं।

संगणकीय योगदान के लिए, अपने सुपुत्र श्री प्रमेन्द्र कुमार रावत की सराहना एवं आशीर्वाद देते हुए आशा करता हूं कि भविष्य में सामाजिक चेतना के लिए पारिवारिक परम्परा को जीवित रखेंगें। मैं अपनी पत्नी शैलबाला रावत के योगदान को नहीं भूलूंगा, जिन्होंने मेरे लेखन एवं सम्पादन कार्य के समय में पारिवारिक उत्तरदायित्व को निभाते हुए मुझे उनसे दूर रखा।

मैं उन सभी शुभेच्छुओं का भी आभारी हूं जिन्होने मुझे सहयोग दिया एवं प्रेरित किया।

के० के० रावत

लखनऊ

प्राक्कथन

अतीत यानी बीते कल की स्मृतियाँ समाज संजोकर रखता है, ये स्मृतियां साये की तरह लिपटी, कभी न कभी मन को व्यथित कर जाती है। मेरे मानस सागर में अतीत की स्मृतियों की लहरे उठती रहती है। जिनसे स्मृति के भंवर जाल में फंस कर मन अतीत की गहराइयों में पहुंच जाता है और वही से वर्षो पूर्व की एक धुंधली छवि शनैः शनैः स्पष्ट होने लगती है। आज सबसे महत्वपूर्ण अनिवार्यता यह है कि कोई उसे बोध दिलाये, उसके अतीत ने उसके साथ विश्वासघात किया है।

सड़क पर वाहनों का शोर, और एक सुन्दर बगीचे को चीरती धुयें की लकीर, सामने की छलनी हुई टूटी बिशाल दीवार, जहां कभी हवेली थी, उसका मुख्य द्वार सिकंदरबाग की अतीत की गरिमा को लिए निर्निमेष रूप में मूक खड़ा, दुःख, पीड़ा को आत्मसात् करता हुआ, उन वेदनाओं की याद दिला रहा है जिनको उसने झेला है। लुप्त उन घटनाओं को एकत्र करके इतिहास के अंधकार को हम कहां तक चीर पाये हैं, यह हमारे सुविज्ञ पाठक ही निर्णय करेंगे। उन्नीसवीं शती के मध्य में जब अंग्रेजों ने सम्पूर्ण भारत पर अपना अधिकार कर लिया था। भारतीय जन आत्मा अपनी स्वतंत्रता को पुनः प्राप्त करने को कसमसा उठी, सर्वत्र एक बेचैनी थी, इस महान राष्ट्र की जनता में विप्लव की आग धीमे-धीमें धधकने लगी थी, भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम अभियान अपने आप आयोजित होने लगा था, इसका विस्फोट हुआ अट्ठारह सौ सत्तावन के विद्रोह के रूप में।

मूल निवासियों की सचल मातृभूमि अवध थी, इससे बेदखल

होने के बाद, अव्यवस्था और निराशापूर्ण वातावरण में उनको संगठित बनाये रखा। पराजयों में, उन्हे उत्साह और नया बल प्राप्त हुआ था,इसी कड़ी में एक टूटी बिखरी हुई जाति की राष्ट्रीय परम्पराओं को संगृहीत और सुरक्षित करने का लघु प्रयास भर किया है। क्योंकि हर तरह की मेहनत का लाभ होता है, लेकिन सिर्फ जबान की मेहनत अर्थात् सिर्फ बात करते रहने से आदमी ही नहीं, सामाजिक गरिमा से समाज भी कंगाल हो जाता हैं इतिहास की प्रारम्भिक मांग, व्यक्तिक और सामाजिक चेतना के निर्माण में सामाजिक न्याय की होती है। इनके न प्राप्त होने पर विद्रोही भावनाएं उभर कर सामने आती हैं, जब इन भावनाओं को दबाया या कुचला जाता है तो स्वतः ही बगावत जन्म लेती हैं।

किसी राज्य का अधिक दिनों तक बने रहना सम्भव नहीं होता, क्योंकि उसके निर्माताओं में जो शक्ति होती है, वह उसके उत्तराधिकारियों में उस समय तक नष्ट हो चुकी होती है, जबकि उन्हे अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति अवध राज के सामने आ गई थी। मैं इतिहासकार नही हूँ, हां अपने देश और अपने समाज के इतिहास के प्रति जिज्ञासु अवश्य हूँ। लेखन कला के माध्यम से, एक के बाद एक आने वाली पीढ़ियॅा एक दूसरे से सम्बद्ध हो जाती है और गुजरने वाली पीढ़ी अपना यश, गौरव गाथा, आगे को सौंपती जाती है। यह भी देखा गया है कि बुद्धिमान लोग दुनिया से कूच करने के पहले अपनी विरासत के सूत्रों को संजोकर, उन्हे अपनी संतति, जाति को सौंप जाते हैं।

सन् १८४९ से सन् १८५६ तक के दमन चक्र में पिसती पासी जाति

ने सन् १८५७ के गदर में पूर्ण सहयोग किया, उसके योगदानों को भुलाना बेईमानी होगी, क्योंकि उसकी कुटियां/ झोपडे. से आरम्भ विद्रोहनगरों में फैलने लगा था। गदर में छापे मार युद्ध का प्रयोग अवध के मूलवासिंदो (पासियों) की ओर से शुरू किया गया था। छापेमार लड़ाई हमारे देश की बड़ी पुरानी चीज़ है, बड़ी-बड़ी संगठित सेनाओं का परिचायक नहीं बल्कि पासी जातीय अथवा ग्राम संगठनों के द्वारा व्यवहार में लाया जाने वाला युद्ध कौशल था। सत्तावनी क्रांति में सभी समुदायों के साथ मिलकर पासी तिलंगों ने भी स्वदेश की इंच-इंच भूमि के लिए अंतिम बूंद तक रक्तदान करने वाले असंख्य रणवाकुरों में शामिल थे।

मैने चेष्टा की है कि पुस्तक में जो कुछ लिखा जाय वह प्रमाणिक तथा प्रमाणित हो इसके लिए जगह जगह उद्धरण देना पड़ा हैं किसी द्वेष भावना के कारण नहीं। मैंने किसी भी प्रतिष्ठित समाज व जाति के प्रति कोई सम्मति देने की धृष्टता नहीं की है। भाषा, शैली के सम्बन्ध में भी निवेदन है कि सरस तथा सूचना पूर्ण बनाने की चेष्टा में कहीं एकाध शब्द गलत हो गए हो जिससे हो सकता है दोष आ गया हो। मैं अपने विज्ञ पाठकों से त्रुटियों और जाने अनजानें की भूलों के लिए क्षमा याची भी हूँ। मेरे इस प्रथम प्रयास में, मैं अपने उन सम्मानित बुजुर्गों, सहयोगियों, तथा मित्रगणों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होने अपना सहयोग व मार्ग दर्शन देकर मुझे प्रेरित किया। उन सभी बन्धुओं का भी आभारी हूँ जिनके सहयोग से यह कार्य पूरा हुआ है।

के० के० रावत

नकशा जुग़राफ़िया अवध इम्पीरियल कोर्ट १८४९

१– अधिपत्य राज्य २– घिरा हुआ कब्जे का

३– वह जिले जो खलीफा के कब्जे में थे जो सवर्गीय हो गये

LUCKNOW

Scale—1 Inch = 8 Miles

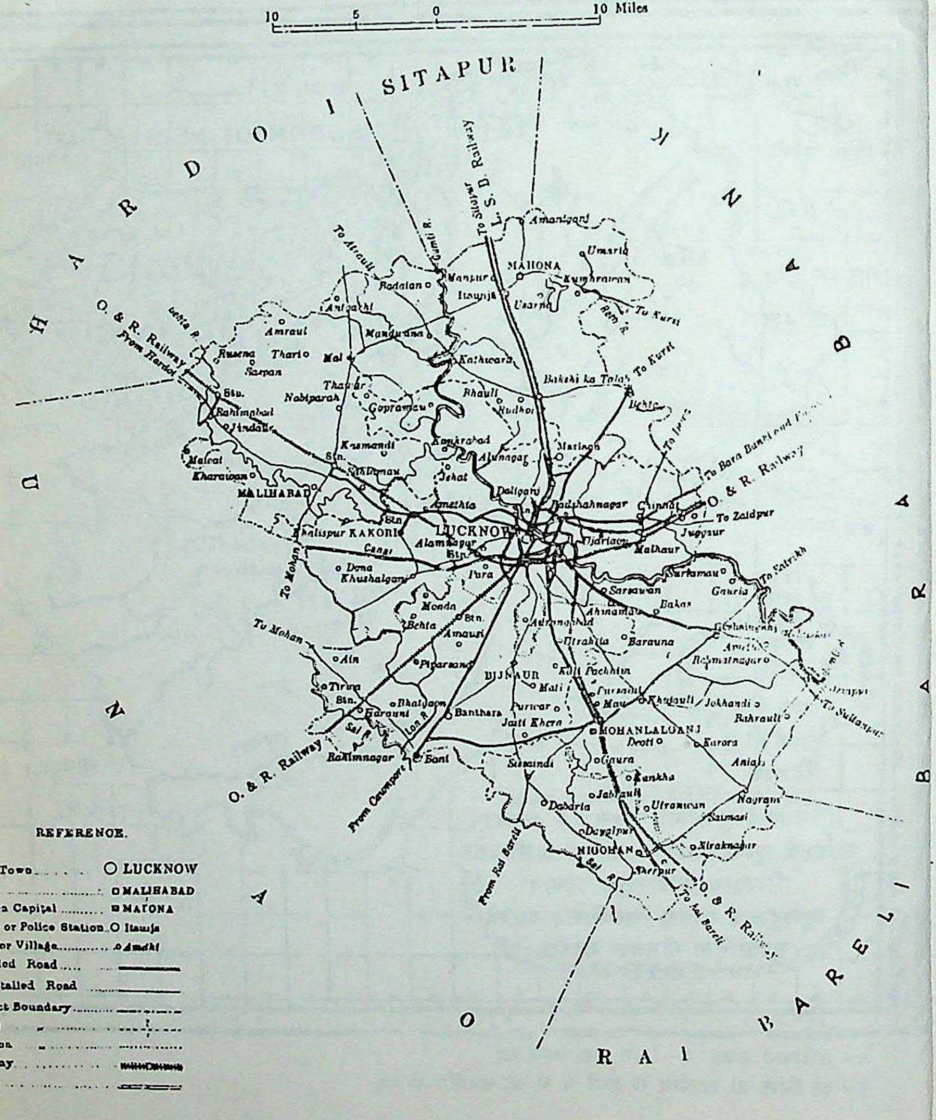

सिकन्दर बाग़ की कहानी,
किताबों की ज़ुबानी

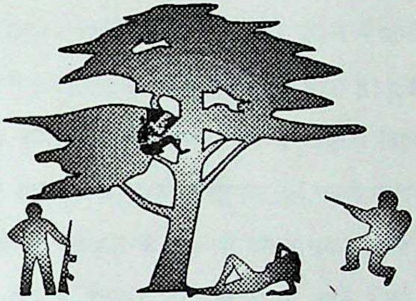

प्राकृतिक वनस्पतियों से भरपूर, राष्ट्रीय वानस्पतिक,
अनुसंधान संस्थान का केन्द्र सिकंदर बाग, यहाँ
के फूल सिकंदर बेगम की कमनीयता और
रक्ताभ होंठों की याद संजोयें है, वही
नारी साहस और शहीदों के पवित्र
खून की चमकती लालिमा की
अमर गाथा की याद ताज़ा
करा रहें हैं। उन्ही की
कहानी, किताबों
की ज़ुबानी।

''वीरता'' लिंग, जाति समूह या व्यक्ति विशेष की बपौती नहीं है।

.... इसी में से ....

एक

लखनऊ शहर, जहाँ कभी सांस–सांस में मोगरे की महक थी, अब नफस नफस टेम्पो का धुवाँ। चौक और पाटानाला ही नहीं – कैसरबाग़ तक फैली तहज़ीब की चॉदनी के कुछ हिस्सों की याद मेरे ज़ेहन में अब भी है, इक्के, तॉगों का आखिरी दौर मेरी ऑखों के सामने ओझल हुआ है। देखते – देखते तिमुहे टेम्पो की मार को अभी भूल नहीं पाया, कि धड़धड़ाते विक्रम बैताल ने इक्के, तॉगों को दुल्लती मार करके, शहरे लखनऊ को काले मखमली दुपटटे से ढांप दिया। नफ़ासत और नज़ाकत के लफ़्ज़ों को सुनकर दिल में गुदगुदी पैदा हो जाती है, ख्वाबगाहों के किस्से अब ख्वाबों में नहीं आते हैं, क्योंकि मिटती ख्वाबगाहों की जगह ईंट, चूने और सीमेन्ट के समागम से ऊँचाई की ओर बढ़ती अट्टालिकाएं पुरानी बुलंदियों को नीचे दबा गईं। खंड्हरों से जहॉ याद ताजा हो आती थी, वहीं उनके नामोनिशान का पता लगाने के लिये कई प्रकार के आयोग/कमीशन बैठा दिए गए हैं, शोध कार्य करने के लिये। कागजी घोड़ों का इस्तेमाल अब कल्लू भटियारिन की जगह बन्द ताप नियंत्रित कक्ष में हो रहा है। तबले की थाप की जगह ड्रम की बेतरतीब सुरीली, कानफोडू ध्वनि में असुघढ़ कूल्हे थिरकते हैं, अतीत की गरिमा आज की विभिषिका में लुप्त होकर घुट रही है।

सूर्य वंशी आर्यो ने जब तथाकथित 'लखनऊ के लखन टीकरे' पर कब्जा किया, तो टीकरे पर रहने वाली मूल जातियों, जिसमें प्रमुख पासी जाति को, बलपूर्वक हटाया गया। 'यह लखन टीला' पासियों के कब्जे में था, इसी जाति में एक लखना नाम का व्यक्ति था जो घर/गृह बनाने की कला में बड़ा माहिर था, उसने इसी टीकरे या टीले की भूमि पर अपने रहने का एक स्थायी निवास

बनाया था। जिसको लखना की गढ़ी कहा जाता था। बाद में लखना ने इसे किले के रुप में परिवर्तित कर लिया था। शेखज़ादों के आने तक इस पर पासियों का अधिकार था। कालांतर में इस किले में तबदीली करके मच्छी भवन का नाम दिया गया। अमृत लाल नागर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''गदर के फूल '' में इसका जिक्र पृ० १९७, १९८ में किया है।

''जिस भूमि पर आज मेडिकल कालेज अस्पताल और होस्टल इत्यादि बने हैं; वहाँ सौ बरस पहले पुरानी गढ़ी लखना उर्फ मच्छी भवन की इमारत मौजूद थी।

लखना पासी जाति के आरख गोत्र का था, यह गोत्र शक्ति के रूप में सूर्य की पूजा करता था। सूर्य को अर्क या अरख भी कहते हैं । इस कारण अरख 'सूर्य ' की पूजा करने वाले पासियों को अरख पासी या अरख वंशी भी कहते हैं जो आज भी विद्यमान है। आस – पास की बस्तियों में लखना काफी मशहूर हो गया था, तथा टीले पर और उसके नीचे अपने परिवार व कुटुम्बयों के लिए घरों का निर्माण भी किया था इसकी वजह से इस बस्ती को लोग लखनापुरी/लखनापुर के नाम से पुकारने लगे थे। लखना कुशाग्र बुद्धि का था, बार–बार बाहरी आक्रमणकारियों से सामना करना पड़ता था। इसके लिए ऊँचे टीले पर बने अपने घर को एक मज़बूत किले के रूप में परिवर्तित कर लिया था। साथ ही उसने अपने परिवार के नवयुवकों को सैन्य शिक्षा से शिक्षित भी कर दिया था। इन सबों को किले में चोबीसों घंटो रक्षा करने, एंव बस्ती की ओर आने वाले बाहरी लोगों पर कड़ी निगरानी रखने की हिदायत भी दे रखी थी। अब इस टीकरे को लखना टीला के नाम से जाना जाने लगा था। जब

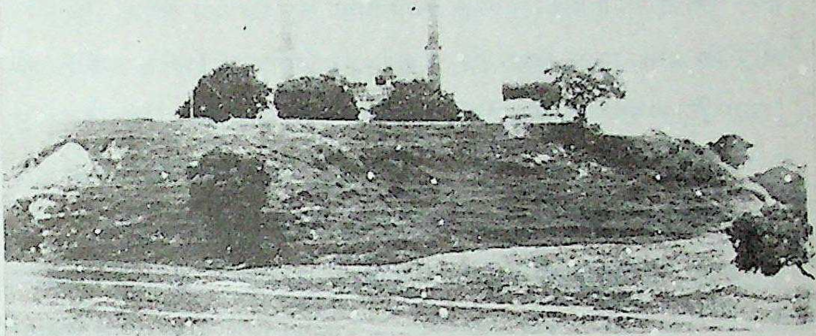

4 Machi Bhavan Pre-Mutiny photograph

5 Shaikhan Gate, Machi Bhavan Pre-Mutiny photograph

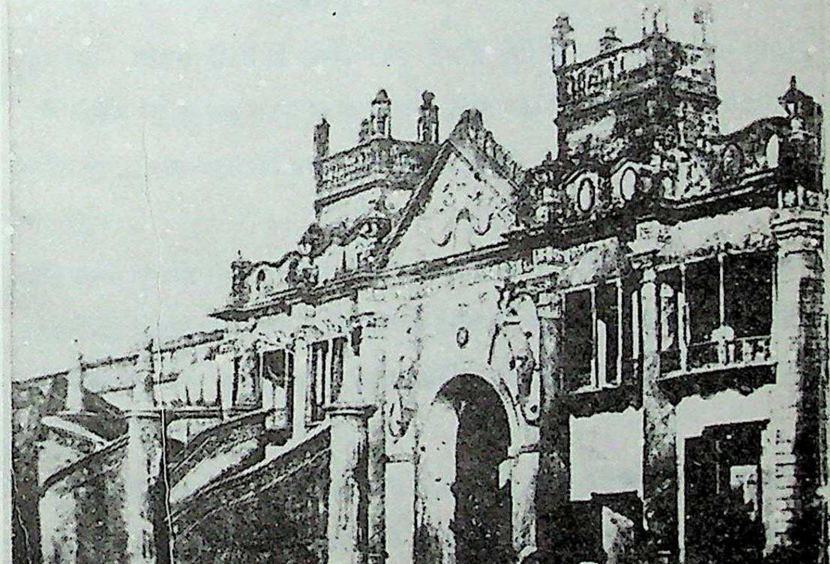

अयोध्या के सूर्यवंशी राजा यहाँ पर अपनी स्थिरता कायम करने में असमर्थ हो गए तो यह भाग ऋषियों और मुनियों को दान में दे कर एक कूटनीतिक चाल चली थी, क्योंकि यहाँ की मूल जाति 'पासी' बार–बार अपना राज्य छीन लेती थी, लेकिन ऋषियों या मुनियों को परेशान नहीं करती, वरन् आदर की दृष्टि से देखती थी। सुत्रिक (सतरिख–बाराबंकी) मिश्रिख में नैमिषारण्य (नीमसार) जैसे हिन्दू केन्द्र इसके प्रमाण हैं।

बौद्ध साहित्यों से यह ज्ञात होता है कि बौद्ध युगीन में अवध जंगलों से आच्छादित था। जातकों में भी जैतवन, नागवन एवं अंजन वन का वर्णन मिलता है।

जैतवन – यह श्रावस्ती में है जहाँ पासी राजा सुहेलदेव का किला साहेट–माहेट आज भी सरकार द्वारा संरक्षित है।

नागवन – लखन टीकरे के आस–पास गोमती नदी के दायें किनारे का भाग। इसी टीकरे पर आरख वंशी पासी लखना रहता था। यह गृह बनाने में बड़ा ही माहिर था, आस–पास की बस्ती को बसाया, जिसे आज नखलऊ या लखनऊ कहते हैं।

अंजनवन – सचान कोट/सातन कोट/राम कोट के नामों से प्रसिद्ध पासी राजा सातन का किला सई नदी के किनारे पर संडीला, बांगरमऊ के मार्ग में स्थित १ ऐतिहासिक रूप से बड़ा महत्व रखता है। यह भाग अंजनवन के नाम से जाना जाता था।

नब्बे एकड भूमि में से मात्र तीन बीघा भूमि उत्तर प्रदेश सरकार ने पासी समाज को किले के नाम पर देकर इति श्री कर ली है। कदाचित जैसे उसने पासी

समाज पर बहुत बड़ा उपकार किया हो? किले पर सुचैना देवी का वर्तमान मंदिर एवं राजा सातन पासी का अधूरा स्मारक आज मी आकर्षण का केन्द्र है। उक्त भूमि को ग्राहय करने में इलाहाबाद के पासी समाज का योगदान सराहनीय रहा है।

सचान कोट को आर्यों ने पासियों से छीन कर इसका नामकरण शची नगर 'इन्द्र की पत्नी शची के नाम पर' किया था। पासियों के पुन: लेने पर और नगर के बनने व बिगड़ने की कई प्रकियाओं में आज यह खण्डहर टीले के रूप में आ गया है। इसकी खुदाई के समय हर परत पासी इतिहास की कहानी दोहराती है! नब्बे एकड भूमि पर बिखरा टीला आज भी दृष्टिगोचर है।

लखनापुरी/लखनापुर का विकास होने लगा था। पासी राजगीरों को मकान बनाने के लिए बाहरी लोग बुलाने लगे, जब बाहरी लोग यहॉ आते तो लखनापुरी के बदले स्वरूप को देखते थे। इस बदलाव से इसका नाम नखलऊ पड़ गया था, साथ में यह कहना भी गलत न होगा कि न+खल+ऊ से यह तात्पर्य भी निकलता है कि जो खले नहीं, अर्थात जहॉ पर कोई परेशानी न हो। न परेशान करने वाला हो। लखनापुरी/लखनापुर के बदलाव को देख कर आम जनता में इसका नाम नखलऊ पड़ गया था। बाद में लखनऊ के नाम से प्रसिद्ध हो गया। अधिकांश पुराने लोग आज भी इसको नखलऊ के नाम से ही पुकारते हैं। यहॉ की प्रमुख पासी जाति को बाहरी आक्रांताओं के आक्रमणों को निरन्तर झेलना पड़ा, उस में जीत के मुकाबले ज्यादातर शिकस्त का सामना करना पड़ा था। यह जाति टूट गयी लेकिन झुकी नहीं, बलात् नीच कार्य कराये गये, परन्तु आक्रांताओं द्वारा इनका धर्म परिवर्तन नहीं कराया जा सका। इस जाति के किले

गढ़ियाँ, इनकी बस्तियों को उजाड़ कर मटिया मेट कर दिया गया था। यह जाति बे–घरबार होकर जंगलों में छिपकर रहने लगी थी। पेट की क्षुधा शांत करने एवं स्त्री बच्चों के पालन पोषण के लिए जब कोई रास्ता नहीं मिला, तो मौका मिलते ही हमला बोलते और अपने खोये/छीने राज्य को पुनः हासिल करने का सतत प्रयास करते रहते थे।

दो

छतर मंजिल से एक मील पूर्व और मार्टिन कोठी से पश्चिम का भाग उस समय घने जंगलों से भरा पड़ा था। इन्हीं जंगलों में लखना टीले के तथा उसके आस-पास के उजाड़े एवं खदेड़े गये पासी परिवार छिपकर रहने लगे थे। इन्हीं जंगलों में अपने घर भी बना लिये थे, सर विलियम सालोमन ने यू० पी० के पासियों के किलों की बाबत लिखा है – " कि यह बड़े और छोटे भी होते थे और बॉस तथा सदाबहार के वृक्षों से ढके रहते थे, यह बड़े मज़बूत होते थे, जिनमें सशस्त्र पासी रहते थे। यह पासी बचपन से ही युद्ध कला एवं किलों की बनावट की शिक्षा पाते थे, क्योंकि यह जानते थे कि एक दिन उन्हें युद्ध करना है।"

"जब अयोध्या का राज्य सूर्य वंशी राजाओं के हाथ से निकल गया उस वक्त इस देश में आरख, भर और पासी राज्य करते थे, आरख व भर, पासी जाति के गोत्र हैं। और इनका राज्य अवध के समस्त भारत, और सई नदी, जो लखनऊ के दक्षिण एवं पश्चिम दिशा में है, अर्थात् समस्त भाग पर पासियों का ही राज्य था .... उस समय पासी राजा, आरख भरों का काकोरी और मलीहाबाद में बड़ा जबरदस्त राज्य था और यह बिजनौर तक फैले हुए थे। "

इस राज्य के जाति का विस्तार सई नदी से लेकर सिसेन्डी तक फैला हुआ था। पासी, आरख और भर यह तीनों कौम एक ही हैं।

''सर एच० एम० इलियट-हिस्ट्री ऑफ अवध

भाग-१८६८ पेज नं०-३५ से ५३ तक'

अवध का नवाबी शासन शुरू हुआ था। नवाबी काल में अवध के प्रथम बादशाह गाजीउद्दीन हैदर थे। बड़े ही शौकीन मिजाज के बादशाह थे, लखनऊ

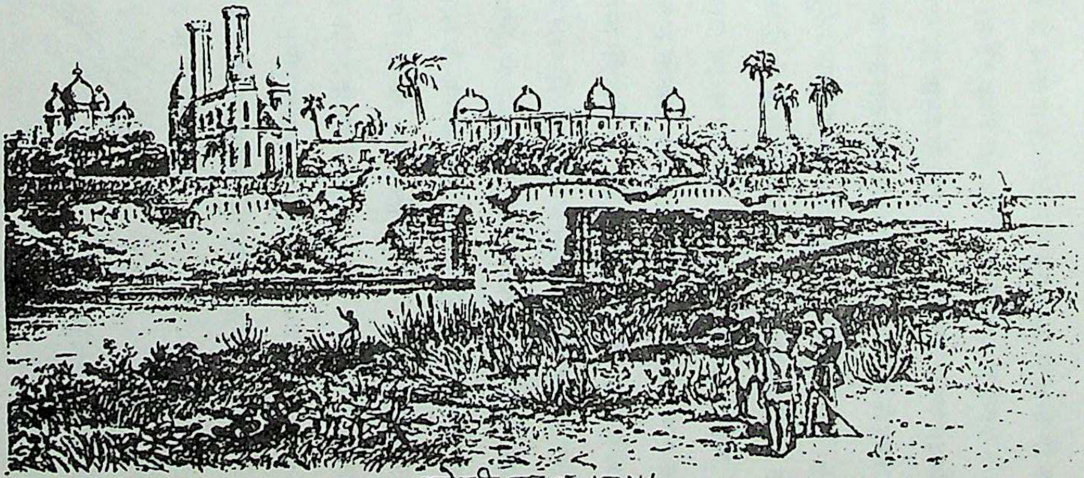

MOTI MAHAL मोती महल १८५८

में बड़ी–बड़ी ईमारतों के अलावा हैदर कैनाल बनाने की योजना भी बनायी थी। अपने मकबरे को भी तामीर करने की सोंची, तो उस वक़्त उनके ज़ेहन में यह आया कि पैग़म्बर मोहम्मद साहब के दामाद का मकबरा नज़फ पहाडी पर बना है, उसी तर्ज पर मैं भी अपना मकबरा तामीर कराऊँ। कई देशों से कारीगर बुलाये गये विचार–विमर्श हुआ बादशाह की इच्छानुसार ''माडल'' बना। अब सवाल यह उठा कि नज़फ पहाडी की ही तरह लखनऊ में जगह खोजी जाये। मोती महल के पृष्ठ भाग में बादशाह बैठकर हाथियों एवं शेरों की लड़ाई देखकर आननदित होते थे, उसी के पूरब में गोमती नदी के दायें किनारे के ऊँचे भाग को देखकर मकबरे की जगह पसन्द की गयी थी। यह वह जंगली भाग था जहॉ लखना टीले के उजड़े पासी रह रहे थे। बड़ी लड़ाईयों एवं चालों से इस भाग को खाली कराया गया था। यहॉ के उजाड़े, भगाये गये पासियों ने अपना, आज के सिकन्दर बाग और उसके आस–पास के जंगली भागों में बना लिया था। उस समय सिकन्दर बाग नहीं बना था। पासियों की इस बस्ती को गगनापुरवा/ हगनापुरवा के नाम से लोग पुकारते थे। बादशाह गाजीउद्दीन हैदर ने १८१४ में यह मक़बरा बडे ही कलात्मक ढंग से तामीर कराया था, इसका गुम्बद अपने अलग ढंग का ही बना, जिसको आज भी देखा जा सकता है। इसका नाम "शाहनजफ़" रखा गया। इसकी बनावट आज भी अद्धतीय है।

Shah Nujjeef or Shah Najaf is the Mausoleam of Gaziuddin Haider, the First king of Awadh in 1814, and was built by him self. It is situated - about 150 yards to the east of Moti

Mahal and 180 yards to the south of thu right bank of the Goomtee. It was called Najaf toun the to on which is built the tomb of Ali, the son in low of Mahomed, of which the mousoleum of Ghazi-ud-din Haider is said to be on exact copy.

G. W. Forrest - A hixtory of the Indion Mutiny - Vol - 2 - Page 153

भगाये गये पासियों को न जमीन, न पैसा, नहीं कोई सुविधायें दी गयी थीं। केवल अत्याचारों एवं प्रताडनाओं को सहते नये बसेरे की टोह करते हुए, साथ ही अपनी स्वतन्त्रता एवं स्वाभिमान को संजोथ संघर्षरत रहते थे। समय बीतता रहा।

अवध की बादशाहत फल फूल रही थी, अंग्रेजों के कदम अवध की सरज़मीन पर जम चुके थे! अवध की अकूत धन दौलत उनकी ऑखों में चमक रही थी, अंग्रेज धीरे–धीरे अपने शिकंजे को फैला रहे थे। जब इस शिकंजे को समेटने का अवसर आया तो उस समय अवध की बादशाहत की डोर ''रंगीले पिया'' जाने आलम वाजिद अली शाह के हाथों में थी। बिलाश्िता के उस दौर में बादशाह वाजिद अली शाह की एक बडी खूबसूरत बेगम थीं, जिन्हें जाने आलम बहुत चाहते थे, उनका नाम सिकन्दर बेगम था। नाजों नखरों से भरपूर सिकन्दर बेगम अपनी काली जुल्फों, रसीले होंठों और कटीले नयनों से, अपने रंगीले पिया वाजिद अली शाह को अलग नहीं होने देती थीं। हर समय उन्मुक्त बिहार और अकेले बादशाह का साथ उनको पसन्द था, इसके लिए एक अच्छी

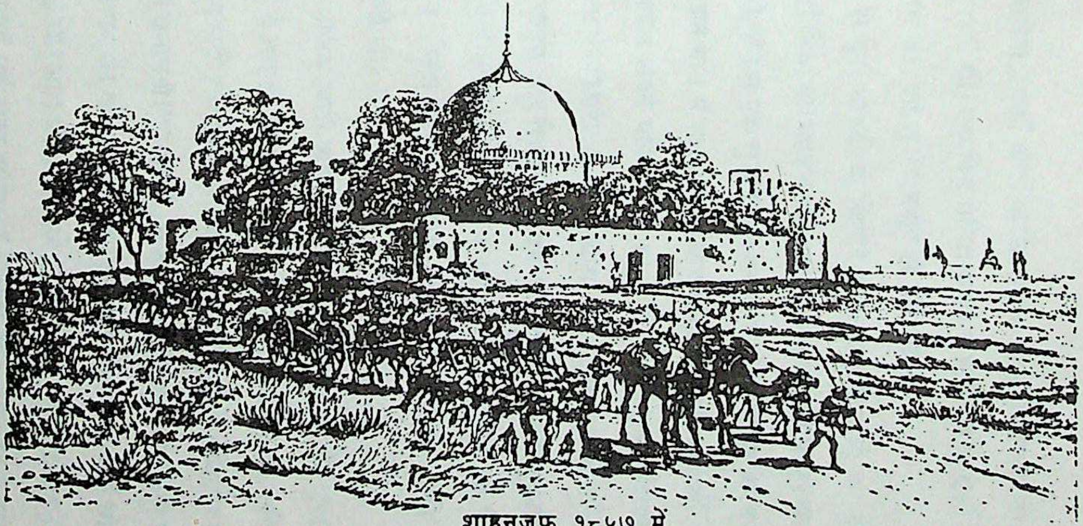

शाहनज़फ १८५७ में

THE SHAH -NUJJGEA

सैरगाह की ख्वाहिश, (जहॉ दोनों के सिवा कोई न हो) सिकन्दर बेगम हर वक्त महसूस करती रहतीं थीं। एक दिन उचित समय में बादशाह से ऐसी सैरगाह को बनवाने की मांग की, जो तुरन्त मंजूर हो गयी थी।

महलों से दूर, गोमती के किनारे शाहनजफ के आगे का भाग बड़ा ही उपयुक्त दिखाई दिया था। यह हरा भरा प्राकृतिक़ सम्पदा से भरपूर था। .जलवायु भी ठीक थी।ऐसे भाग में एक सुन्दर बाग बन जाने से सिकन्दर बेगम को एकान्त मिल जायेगा। इस भाग में घना जंगल और बॉसों की घनी बाड़ें थीं, जिनके मध्य में पासी सरदार अपने परिवारों के साथ रह रहे थे। इन पासियों के कारण बादशाही शासन काफी परेशान भी रहता था, अतः इनको कभी नहीं छेड़ा जाता था। जगह का चुनाव और सिकन्दर बेगम की पसन्द के आगे मुसाहिबों/वज़ीरों की आना–कानी ने अपना दम तोड़ दिया था। आखिर कार एक बार फिर पासियों से युद्ध एवं उस स्थान को खाली करवाने की योजना बनाई जाने लगी थी।

नवाब वाजिद अली शाह के समय में जनानखाने की सुरक्षा के लिए जानानी फौजों में साहसी महिलाओं को भर्ती किया गया था, जिनकी बाकायदा रोजाना कवायद होती थी। इनके ओहदे दार पद थे जिसके अधिकार फौजी पदों के अधिकारों के समान थे।''अख्तरी , नादरी और नजीब'' जैसे नाम इन जनानी फौजों को दिये गये थे। बाद में हसीन और जवान औरतों की एक़ छोटी जनानी फौज बनाई गई थी। आम फौज को भले ही तनख्वाह न मिलती, इन फौजों को समय पर तनख्वाहें एवं अन्य सुविधायें मिलती रहती थीं। बेगमें इन फौजों से बड़ी परेशान रहती थी, समय–समय पर यह बादशाह सलामत के लिए जासूसी

भी करती थीं। सिकन्दर बेगम इन जनानी फौजों को कतई नापसन्द करती थीं। बादशाह सलामत को सैरगाह बनाने में जो दिक्कतें थीं, उन्हें वह जानते थे, इस कारण कुछ देरी भी हो रही थी।

एक दिन सिकन्दर बेगम ने बादशाह से गुजारिश की कि हज़ूर मेरी बात को अमल में लायें तो दिक्कतें दूर हो सकती हैं बादशाह ने बयान करने को कहा–सिकन्दर बेगम ने बड़े ही नाजो अदा से यह बात रखी, कि "हज़ूर मेरे सरताज सैरगाह की जगह पर पासियों का कब्जा है, अगर उनको उसकी सुरक्षा और उनकी औरतों को बनने वाले सैरगाह की रखवाली/चौकीदारी की जिम्मेदारी दे दी जाय तथा सैरगाह को छोडकर और बाकी का भाग उनके लिए स्वतंत्र कर दिया जाय, तो मैं समझती हूँ कि मुश्किल आसान हो जायेगी। साथ ही महलों की जनानी फौजों को महल के अलावा तथा बाहर बनने वाले सैरगाह की सुरक्षा जैसे अतिरिक्त बोझ से निजात भी मिल जायेगी। इन पासी औरतों को केवल पिस्तौल/विदेशी हथियारों की ही ट्रेनिंग देनी पडेगी, जिसमें खर्च भी कम आयेगा"। बादशाह सलामत को यह बात मौजूं लगी, तुरन्त ही इसी के अनुसार कार्य करने के हुक्म जारी कर दिये थे। सिकन्दर बेगम अपनी इस कामयाबी पर बडी खुश थीं। इसकी एक वजह और भी थी कि जनानी फौजों में जब कोई हसीन महिला बादशाह की निगाह में आ जाती थी, तो उससे तुरन्त 'मुतआ' करके बेगम की पदवी देकर महलों मे जगह दे दी जाती थी। पासी महिलाओं की ओर बादशह कभी ऑख भी उठा कर नहीं देखेगें और न ही पासी औरतें इस प्रकार की थीं। वे सहसी एवं अच्छे चाल चलन की होती हैं, यह जनानी फौजैं महलों से दूर रहेंगी। इस प्रकार सिकंदर बेगम ने एक तीर से दो शिकार कर लिये थे।

पासियों पर एक बार फिर कहर वरपा हुआ, कुछ को ले दे कर, कुछ से लड़ाई करके, कुछ को अन्य जगह देकर, अन्य को भगा कर जगह खाली करवाई गयी थी। पासी महिलाओं की एक फौजी टुकडी बना कर ट्रेनिंग शुरू कर दी गयी थी। उजाड़े गये पासी परिवार तितर बितर हो गये थे इस उखाड पछाड़ में यहॉ के पासी भाग कर चक्कर पुरवा, बाबा पुरवा, भीखम पुर, गोपाल पुरवा, (उमराव सिनेमा के पीछे) उजरियावं व जुगौली और कसैला आदि जगहों में वस गये थे। कुछ बाकी बचे पासी परिवार उसी गगना पुरवा/हगनापुवा में रहने लगे थे। यह पासी संगठित होकर या एकत्र होकर फिर से हमला न बोल दें इस वजह से ''सुल्तान गंज में एक शाही पुलिस की चौकी खोली गयी थी, जिसका नाम सुल्तानगंज चौकी रखा गया था''। यह जापलिंग रोड पर थी। ब्रिटिश मिलेट्री के १८५७ के नक्शे में यह चौकी एवं स्थान दर्शाया गया है। भीखा नाम का एक पासी गोमती नदी के पार के जिस स्थान पर रहता था उसे भीखमपुर कहने लगे थे, जो आज भी भीखमपुर के नाम से विद्यमान है। हमें जन श्रुतियों एवं बडे पुराने लोगों से यह पता चला है। श्री छोटे लाल गूजर जो उ० प्र० पासी जागृति मण्डल के संस्थापक सदस्यों में से हैं इनका कथन है कि हमारे पुरखे इसी गगना पुरवा से भाग कर इस पार आकर बाबा का पुरवा में बस गये थे। उस समय की उखाड़ पछाड़ व मुगलों के आक्रमण से बचने के लिये श्री सुन्दर लाल सरोज जो उत्तर प्रदेशीय पासी जाग्रति मण्डल के सदस्य एवं महाराजा बिजली पासी स्मारक एवं सांस्कृतिक ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष भी हैं उन्हों ने भी इस बात की पुष्टि भी जनश्रुतियों के आधार पर की है इसी प्रकार की जानकारी श्री होनहार सोनी को भी कई जगह से सुनने में मिली हैं।

पासियों के साहस एवं वीरता की बात की सत्यता में कोई मतभेद नहीं

है, वहीं पर यह भी सत्य है कि पासियों के स्वभाव में परिवर्तन केवल अन्य लोगों के व्यवहार एवं पर्यावरण के कारण है। इनकी निश्चलता बार–बार इनके पराजय का विषय बनी। जंगलों में रहने की वजह से इनके स्त्री व बच्चे बचपन से युद्धकला एवं गोरिल्ला युद्ध में विशेष पारंगत हो जाते थे धूप बरसात को सहते–सहते इनको रंग स्याह रहता था। पासी औरतैं बलवती एवं अदम्य साहसी होती थीं और घरेलू कार्यों के अतिरिक्त कड़ी मेहनत और पति के कार्यों में हाथ बटाने से पीछे नहीं रहतीं थीं और न हैं। आज पासी स्त्रीयों के प्रति जितनी हीनता है उतनी पहले कभी नहीं थीं। जब तक नर नारी में समानता नहीं आयेगी तब तक हमारा समाज तो क्या देश भी प्रगति के पथ पर नहीं बढ़ पायेगा। निरन्तर लड़ाई करते–करते पासियों के पास जीविकोपार्जन के लिये भूमि नहीं रह गयी थी। यहाँ इतने शासक आये,पर हर किसी ने पासी समाज को हमेशा अपने से दूर रखा, उनकी छीनी ज़मीनें नहीं दी गयीं। यही कहा गया कि, खेती करो, बिना जमीन के। जब–जब शाही फौजें आगे बढ़तीं तो मुठभेड़ पासी सैनिकों से या उनके न रहने पर उनकी पासी स्त्रियों से युद्ध करना पड़ता था। बादशाह के निर्णय के मुताबिक काफी सूझबूझ के साथ यह तय हुआ कि इन पासियों के इलाके को इन्हीं को दे दिया जाये। जब इन्हों ने अपनी मर्जी से कुछ भाग खाली करके सैरगाह बनाने को दे दिया था। तब इनके आस–पास का भाग स्वतन्त्र कर दिया गया था। यह जाति टूटने के बावजूद झुकी नहीं थी, न है। यदि इनके परिवार को छेड़ा जाता है तो इनकी स्त्रियाँ सिंहनी की भाँति टूट पड़ती थीं।

पासियों को इस बात पर राजी किया गया कि बनने वाले सैरगाह और उसके आस–पास सुरक्षा की जिम्मेदारी अपनी स्त्रियों द्वारा करवा दें, क्योंकि बेगमों की उस सैरगाह में पुरूष रक्षकों से बेगमों की स्वच्छन्दता नहीं रहेगी। इसके बदले उनसे किसी प्रकार की माल गुजारी नहीं ली जायेगी वरन उस भाग

की सैरगाह की चहार दिवारी बनना शुरू हो गयी थी, तरह–तरह के फूल पौधों व बेला गुलाब की क्यारियॉ लगायी जाने लगी थीं बाग के बीचो–बीच में १२० वर्ग गज़ का एक आराम गृह भी बनाया गया था जिसको देश–विदेश के सामानों से सजाया गया था। मूल बाशिन्दों की जनानी फौजें इसकी चौकीदारी में तत्परता से लग गयीं। सिकन्दर बेगम की ख्वाहिश पूरी हो गयी थी। पुरूषों का जाना वर्जित हो गया था। इस सैर गाह में वाजिद अली शाह शांति से दूर आमोद–प्रमोद में डूबे रहते थे। इस मनोरम बाग को सिकन्दर बेगम के नाम पर ''सिकन्दर बाग'' रख दिया गया था।

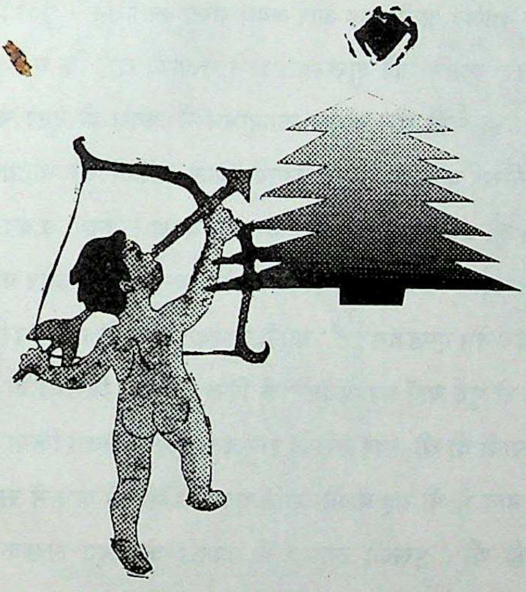

तीन

अंग्रेजों ने अवध को ७ फरवरी, १८५६ को वास्तविक रूप से हड़प कर बादशाही हुकूमत को मटियामेट करके १३ फरवरी १८५६ को अपना यूनियन जैक छत्तर मंजिल पर फहरा दिया था। कम्पनी ने पहले इसकी सूचना इस प्रकार दी थी ४ फरवरी १८५६ को लखनऊ में ईस्ट इंडिया कमपनी के रेसीडेन्ट (राजदूत) जनरल आउट्रम सुबह आठ बजे ज़र्दमहल पहुंचे, और अब्वुल मुज्जर नसुरु द्दीन, सिकंदर जाह बादशाहे आदिल क़ैसरे जमॉ सुल्तान आलम वाजिद अली शाह बादशाह को सूचना दी कि ''अवध की प्रजा पर सुशासन की भावना से प्रेरित होकर ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अवध का शासन अपने हाथो में ले लिया है। और बादशाह गद्दी से उतार दिये गये हैं।

(परिपूर्णानन्द वर्मा – वाजिद अली शाह और अवध राज्य का पतन – पृ०१)

अवध में स्थिर शान्ति की शुरुआत होने न पायी थी, कि एक नये अध्याय की शुरुआत हो गयी थी। कर्नल सालोमन ने अवध के सारे पासी राजाओं/सरदारोंको नीस्त व नाबूद करके उनके किले गढ़ियों को मटियामेट करके पूरी पासी जाति को डकैत, चोर घोषित करवा दिया था। जनता में बदनाम करके नीचा दरजा दिलवाने में कामयाब हो चुके थे। बदनाम करो और फॉसी लगवाओं ''गिव दी डाग नेम एण्ड हैंग इट' वाली कहावत को चरितार्थ कर दिया था। अवध को हड़पने से पूर्व यहॉ पर अंग्रेजों के विरुद्ध प्रबल विरोधी के रूप में पासी जाति ही दिखायी दी थी, जब उसका समूल,समूल–उछेदन किया तभी अवध को ले पाये थे बाद में भी यह पासी जाति एक विद्रोही के रूप में सामने खड़ी दिखायी दे रही थी ''इसकी ज्यादा जानकारी के लिए लेखक की ''अवध विलीनीकरण के पूर्व'' नामक पुस्तक को पढें' पासियों पर अत्याचार

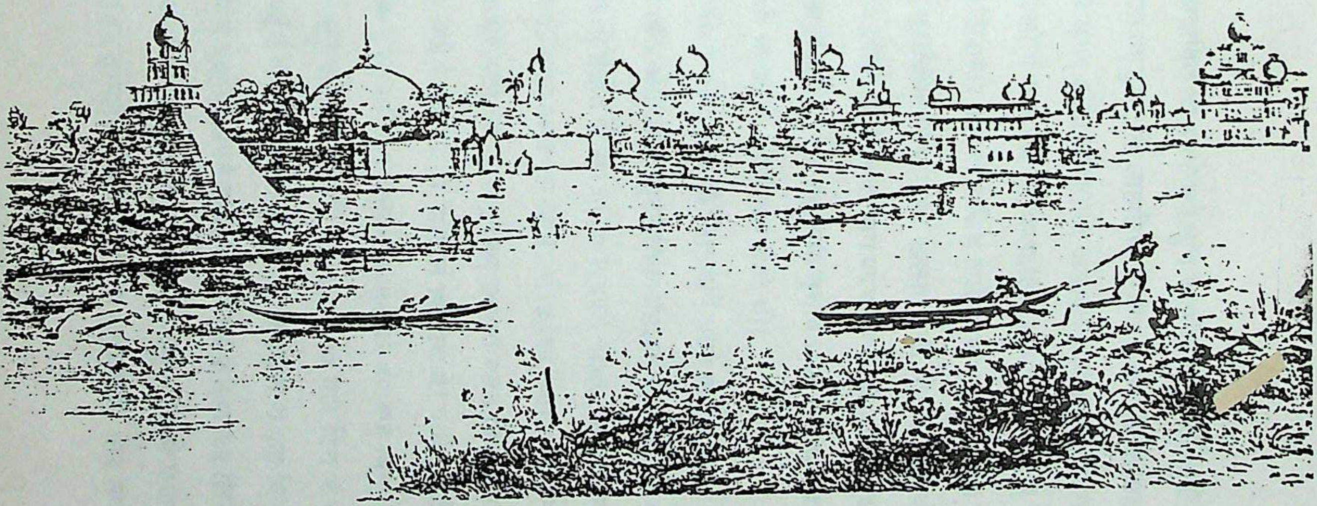

कदम रसूल और शाह नजफ़ छतर मन्जिल सन् १८५७

बढ़ना स्वाभाविक था इनके बचे खुंचे स्वाभिमान को युक्तियों से रौंदा जाने लगा था, नतीजा यह हुआ, कि साहसी पासी बीरों, पासी वीरांगनाओं और पासी बच्चों ने फ़िर से अमर क्रॉति की ज्योति जलाकर सामने खड़ी हो गयी थी। नफरत की ज्वाला दिलों में जल रही थी, अत्याधिक जुल्मों के बढ़ने से ही बगावत पैदा हो जाती है। सिकन्दर बाग से बाजिद अली शाह का लेना देना कुछ बाकी नहीं रह गया था। पूरा सिकन्दर बाग का हिस्सा पासी वीरांगनाओं के अधिकार में था। अंग्रेजों की ऑखों में सिकन्दर बाग पर पासियों का कब्जा अखर रहा था। अंग्रेजों के लिए पासी महिला सेना एक नयी मुसीबत बन गयी थी। क्योंकिं यह महिलायें अग्रेंजों को देखते ही गोली मार देती थीं।

पाठकों की सुविधा के लिए आगे बढने के पूर्व सन् १८५६ के कुछ खास घटनाओं और अंग्रेजों के कुटनीतिक आदेशों का वर्णन करना उचित ही नहीं आवश्यक भी प्रतीत हो रहा है। ३० जनवरी १८५६ को कलकत्ता से सब आदेश प्राप्त कर आऊट्रम लखनऊ आये, तो उनका स्वागत कप्तान हेज़ ने किया था बाद में वजीर नकी खॉ आऊट्रम का स्वागत करने दिन में १२ बजे के बाद गये थे। जो ३ बजे रेजीडेन्सी में दाखिल हो पाये थे। वजीर नकी खॉ से आऊट्रम ने कहा कि कल यानि ३१ जनवरी १८५६ को १० बजे दिन में मुझसे रेजीडेन्सी में मिलो। गुरूवार ३१ जनवरी १८५६ को १० बजे दिन में नकी खॉ आऊट्रम के पास पहुँचे थे। वहॉ पर नकी खॉ से साफ–साफ कह दिया कि ''बोर्ड आफ डायरेक्टर ने हूकूमत अपने हाथों में लेने का फैसला कर लिया है' इस आशय का पत्र बादशाह के पास भेजा जा रहा है। तुम उनकी रजामन्दी की स्वीकृति दिला दो। हम तुमको अपना शुभचिन्तक समझते हैं, और समझते रहेगें। तुम्हारा

कस्बा मछरटा ''सीतापुर'' की एक लाख रूपये की जागीर कायम रहेगी, यदि बादशाह से स्वीकृति न दिलवाओगे तो बिट्रिश सरकार तुमको दोषी समझेगी। मछरटा जागीर में पासियों का बाहुल्य था गवर्नर जनरल ने आऊट्रम को कलकत्ते में जो आदेश दिये थे, वह बादशाह के लिए काफी कठोर थे। उनके आदेश थे कि –

(१) बादशाह तथा उनके निजी कर्मचारियों के लिए १५ लाख रुपया सालाना पेन्शन मिलेगी।

(२) अगर बादशाह खुशी से आत्म समर्पण नहीं करते हैं तो उनसे जवाब तलब किया जायेगा।

(३) उनका तोपखाना पहले जब्त किया जाये।

(४) वे चाहें तो दिल्ली आगरा में रह सकते हैं, लेकिन जहाँ भी रहें, शहर में रहें, जहाँ जिले के कलक्टर का दफ्तर हो।

(५) अगर वह ग्वालियर जाना चाहें तो सोंचकर जवाब दिया जायेगा।

(६) उनके रिश्तेदार व दोस्तों को बादशाह के साथ जाने की इजाजत है, पर शहर छोड देना होगा।

(७) अवध में दो साल फौजी कानून यानी मार्शल ला रहेगा।

(८) दो बरस तक बादशाह के रिश्तेदारों की, कम्पनी की हुंडियों में लगे रुपये या उससे आमदनी की अदायगी नहीं की जायेगी।

(९) लखनऊ के व्यापारी केवल ब्रिटिश राज्य में ही व्यापार कर सकेंगे।

(१०) सभी प्रमुख सरकारी कर्मचारी (अवध सरकार के) गिरफ्तार कर लिये जायें।

(११) अवध की इस समय जो भी आमदनी हो, उस से पहले फौज की तनख्वाहे अदा की जाये।

(१२) अच्छे सरकारी कर्मचारी, काम से न हटाये जायें।

(१३) बादशाह जाहां रहना चाहें, दो महीने में अपना सामान उठा ले जायें।

(१४) बादशाह के रिश्तेदारों की नानकार यानि छोटी जागीरें ले ली जायें।

(१५) सब जमींदार दो साल के लिए बेदखल कर दिये जायें।

(१६) तहसीलदारो, किलेदारों (हाकिम परगना) से जमानत लेकर काम पर रखा जाये, आदि।

इसी प्रकार की अन्य हिदायतें ''तारीखे अवध'' में दर्ज की गयी थीं। ''सलातीने अवध'' के अध्याय में इसकी बाबत लिखा है कि बादशाह बड़े सब्र व जब्त से सब बातें सुनते रहे, और बोले– ''मैं ऐसे जब्र जुल्मसरी पर राजी न हूँगा। अगर मुलाजिमों ने गड़बड़ की है तो उनको बदल सकते हैं। ताज्जुब है, जो गड़बड़ी बाप, दादा के समय से होती चली आ रही है, वह मेरे पर लादीजा रही है। मैंने कभी कोई पक्षपात नहीं किया..........आपने आसफुद्दौला से २२ लाख रुपया का मुल्क बनारस जौनपुर, गाजीपुर वगैरः लिया था.......... अमीरुद्दौला, हैदरबेग कलकत्ता गये तो रियासत का आधा करा लिया..... ....वालिद से एकरार नामा लेकर छठी मद उसमें बढ़ा दी............फौज का छः लाख रूपया हम पर लाद दिया........सलीमन के दौरे का खर्च हमसे लेकर, हमारे वफादारों व पासी रियासतों को मटिया मेट कर डाला............हमने कभी कोई एतराज नहीं किया।''

चिलमन की ओट से बैठी हुई मलिका किश्वर बोलीं–हमने वफ़ादारी

की तो हमको यह इनाम मिल रहा है। ''इस भेंट का कोई फल नहीं निकला था। बादशाह ने राजीनामा पर मोहर करने से इन्कार कर दिया था। और अपनी बात पर क़ायम थे।

बादशाह ने तीन फरवरी, १८५६ को ही पल्टन का पूरा वेतन चुका कर, सेना तोड़ देने का आदेश दे दिया था तोपें चर्ख से गिराकर, गारद के सिपाही अपने हथियारों को गोदामों में दाखिल कर चुये थे। बादशाह ने स्वयं अपनी सेना को नि:शस्त्र कर दिया था। बादशाह के नि: शस्त्र करने के शाही निर्णय से आऊ ट्रम बहुत परेशान हो गया था। राज महल सूना हो रहा था। नाकों से पुलिस हटा ली गयी थी आऊट्रम के सभी प्रलोभन बेकार हो गये थे। ब्रेडन नामक अंग्रेज के समाचार पत्र ''सेन्ट्रल स्टार '' ने भी संधि पर हस्ताक्षर न करने के निर्णय का स्वागत किया था। 'सलातीने अवध' में लिखा है कि – ''जनरल आऊट्रम ने वजीर से कहा कि दस्तखत करा कर लाओ, वरना तुम्हारी शान किरकिरी कर दूँगा। ''

वे बादशाह के पास गए और राजीनामा सामने रखकर और करौली निकाल कर कहा कि – ''या तो दस्तखत कर दीजिए, या मेरा सर काट लीजिए '' पहरेवाली ने करौली देखी तो समझा कि या तो वजीर खुदकुशी कर रहें हैं, या बादशाह सलामत पर हमला कर रहे हैं। वह चिल्ला पड़ी तो शोर सुन कर महलात से बेगमें भागती हुयी आई। सब वज़ीर को गालियॉ देने लगीं। बादशाह ने उनको, वजीर को, गाली देने से रोका। जनरल सिकन्दर हशमत इतने निराश थे, कि एक दिन बोले कि ''जिल्लत बर्दाश्त नहीं होती। इससे बेहतर है कि करबला जा कर झाड़ू लगायें ''। बादशाह ने जनरल तथा राजमाता को सब

अधिकार सौंप दिया और कहा कि ''कभी मुहर न करूंगा।'' मुहर रखने वाले मिफ्ली उद्दौला को आदेश हुआ कि मैं भी मांगू तो मुहर न देना। उन्होने कहा कि जब तक जान है ऐसा न,न होगा। और यह कहकर मल्का किश्वर को मुहर सौंप दी। मुहर खास संदूक में रखकर उसपर दूसरी मुहर लगाकर जेनरल सिकन्दर तथा वली अहद के दस्तखत हुए थे। वजीर नकी खाॅ की यह दुष्टता कही जायेगी, या अंग्रेजों के डर या अपनी जान बचाने के लिए, बादशाह की दूसरी मुहर इकरार नामें पर लगा दी थी।

७ फरवरी १८५६ को दिन के बारह बजे रेसीडेन्ट ने सभी उच्च अधिकारियों का बुला भेजा था। उन्हे बताया कि अवध कि हूकूमत कम्पनी सरकार ने ग्रहण कर ली है। सभी प्रथम श्रेणी के अधिकारियों कि जमानतें लेकर उनके घरों पर पहरा बैठा दिया गया था। दूसरी श्रेणी के कर्मचारियों को आदेश हुआ कि यथावत् कार्य करते रहें, कम्पनी के विरूद्ध कार्य करने पर दंड के भागी होंगे। वित्तमंत्री महाराजा बालकृष्ण को लगान का हिसाब और भूमी सम्बंधी आंकडे प्रस्तुत करने के आदेश दिए गए थे। बादशाह की सलामी जब्त करके, उनके गवर्नर जनरल से एकान्त में मिलना वंद कर दिया गया था। बादशाह को अपने अमले व उनके बकाया वेतन का भुगतान करना होगा, जमीदारों की नानकार तथा ''सीर'' जब्त कर ली गई थी। जेनरल आऊट्रम प्रथम चीफ कमिशनर अवध नियुक्त हुए, उनका वेतन पूर्ववत् रहा। उनके सिकट्री श्री आर० कूपर तथा सैनिक सिकेट्री कप्तान हेज़ नियुक्त हुए। खैराबाद मुहम्मदी, लखनऊ, बहराइच तथा फैजाबाद की चार कमिश्नरियॉ एक – २ कमिश्नर के जिम्मे की गई थीं। जिलो को प्रथक करके हर जिले का हाकिम डिस्ट्रिक,''डिप्टी कमिश्नर'' के नाम से नियुक्त किये

गए। डिप्टी कलक्टर–परगना हाकिम को असिस्टेंट कमिश्नर का नाम दिया गया था। दो केन्द्रीय कमिश्नर की भी नियुक्ति की गई थी – १, न्याय शासन के प्रबंधक अर्थात् ''जुडिशियल कमिश्नर'' श्री एम० सी० ओननी तथा वित्त मंत्री माल विभाग के कमिश्नर ''श्री गॉबिन्स'' बनाए गए थे। लखनऊ के कमिश्नर ''मेजर बैंक्स,'' उनके सहायक ''कप्तान वेस्टन तथा सिटी माजिस्ट्रेट ''कप्तान कार्नेगी'' बनाए गए थे। कमिश्नरों का वेतन ३५०० रू० मासिक डिप्टी कमिश्नर का रु० १५०० से १००० रू० तक तीन श्रेणियाँ बनी थीं। असिस्टेंट कमिश्नर की तीन श्रेणियाँ बनी, ६०० रू० से ४५० रू० तथा २५० रू० मासिक की।

२३ फरवरी १८५६ को तअल्लुकेदारों को एक माह के भीतर अपने कागजात और सनदें दिखाने के आदेश हो गए थे, ताकि उनकी भावी सम्पति निर्धारित हो सके। कम्पनी के कर्मचारियों ने रईसों, जमीदारों को लूटना शुरु कर दिया था। ३० वर्ष की आयु के ऊपर के सिपाही तीन माह का वेतन व पेंशन दे कर अलग कर दिए गये थे। अन्य सरकारी नौकरियों से ४९ वर्ष की उम्र के सभी कर्मचारियों को निकाल बाहर किया जा चुका था। हजारहा मन बारूद पानी में बहा दिया गया था। बेलीगारद – जहाँ बादशाह परेड करवाते थे, गिरा दिया गया। बेगमातों की जायदाद, छान–बीन के लिए अफ़सर नियुक्त किए गये थे। बादशाह के बड़े भाई मुस्तफा अली शाह को मड़ियाहूं की छावनी में कैद कर [illegible] गया था। इन्हीं दिनों कम्पनी के लंदन के दफ्तर में पार्लियामेंट के लिए [illegible] किया गया था, उसका विवरण ''सलातीने अवध'' के अध्याय ६९ में इस प्रकार [illegible] सन् १८०१ से १८५५ तक कम्पनी ने अवध सरकार से कुल रू० ४ करोड़ ७३ लाख कर्ज लिया था, जिसमें एक करोड़

रू० का भुगतान नैपाल की सरहदका इलाका देकर हो गया था। १९३८३७६५ रू० नकद वापस किया गया था। १८००७२३५ रू० कर्ज बाकी रह गया था, जो अवध का राज्य जप्त हो जाने के कारण अब देना नहीं रहा। यह एक हल्की सी झलक थी, अवध को हड़पने के बाद की।

परिपूर्णानन्द वर्मा की पुस्तक ''वाजिद अली शाह और अवध राज्य का पतन'' के अनुसार :– ६ मार्च, १८५६ को लार्ड डलहौजी भारत से लंदन के लिए रवाना हो गये थे उनके स्थान पर लार्ड कैंनिग गर्वनर जनरल नियुक्त हुए थे। जनरल आऊट्रम को लकवा मार गया था, यह २२ अप्रैल १८५६ को सायंकाल ५ बजे कलकत्ता के लिए रवाना हो गये थे। एक खुशामदी ने उनकी यात्रा के समय उनके हाथ में शगुन के लिए अशर्फियाँ बाँधी थीं। आऊट्रम कलकत्ता से लंदन चले गये थे। ८ मई १८५६ को उनके स्थान पर चार्ली जैक्सन आगरा से आये थे। जैक्सन के थोडे दिनों बाद ही सर हेनरी लारेंसे ने उनकी जगह ले ली थी। ८ अप्रैल १८५६ को ९ दिन में अपनी वजारत की पगडी पहने नकी खाँ अपनी बेटी नवाब अख्तर महल (ये नवाब वाजिद अली शाह की बेगम थीं इन्हीं का नाम अख्तर बेगम था) के साथ शाही महल से घोड़े गाड़ी पर सवार बंद झिलमिली में निकले तो लखनऊ के निवासी गाड़ी के पीछे–पीछे, वजीर को भद्दी–भद्दी गालियाँ दे रहे थे। पुलिस न होती तो लोग पत्थर भी मारते। १५ जुलाई १८५६ को गर्वनर जनरल की अनुमति से १० घोड़ा गाड़ी व २० बैलगाडी पर सामान तथा परिवार के लोगों को लेकर वजीर नकी खाँ कलकत्ता रवाना हुए थे, जो २९ जुलाई १८५६ को कलकत्ता पहुँचे थे। बादशाह गर्वनर जनरल की इजाज़त न मिलने के कारण, अपनी बेगम अख्तर महल को नकी खाँ के पास

लखनऊ में छोड़ गये थे। २९ जुलाई १८५६ को कई स्टीमर व बजरे गोमती नदी के मार्ग से बादशाह का सामान लेकर कलकत्ता के लिए रवाना हुए थे। अंग्रेजों ने रास्ते में तलाशी ली। जब यह काफिला कलकत्ता पहुँचा तो वहाँ पर ५ हजार रू० घूस दे कर सामान उतर पाया था! तब कम्पनी ने हजरत अब्बास की दरगाह (लखनऊ) का चॉदी सोने का सामन जब्त करना चाहा, पर किसी प्रकार बचा रह गया था।

नवाब वाजिद अली शाह १४ मार्च १८५६ को कलकत्ता जाने के मार्ग से कानपुर होते हुए गार्डन रीच – मटिया बुर्ज (मोची टोला) महाराजा वर्धमान की कोठी में १३ मई १८५६ को दाखिल हुए थे बादशाह सलामत १३ मार्च १८५६ को अपने फूफा नवाब हिशामुद्दौला को अपना ''मुखतारे आम'' बनाकर जब लखनऊ से रवाना हुए थे तो चारों ओर देखा था और यही कहा था कि:

दरो दीवार पर हसरत की नज़र करते हैं।

खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते है।

उसी समय एक गवैया रोते हुए यह गा रहा था :–

''बालम मोरा नैहियर छूटा जाए''।

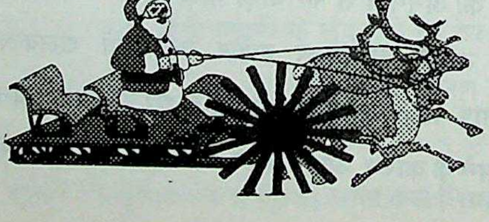

चार

२० मार्च १८५७ को सर हेनरी लारेन्स ने लखनऊ आकर चीफ कमिश्नर का पद संभाला था, और अप्रैल १८५७ महीने में, इन्होंने बड़े परिश्रम के साथ एवं गहन अनुभवों के साथ सभी विभागों में परिवर्तन कर डाले थे। लखनऊ आते ही नवाबी दरबारियों के मरियल मुख मण्डलों को दरबार में देखते ही सब कुछ समझ गये थे। स्थितियों को देखने के तुरन्त बाद ही १८ अप्रैल १८५७ को अपनी असन्तुष्टी की अभिव्यक्ति लार्ड केनिंग को लिख भेजी थी।

ड्राईविंग करते समय मेरे ऊपर एक ढेला (मिट्‌टी का) फेंका गया, और ४८वीं बटालियन के रंग ढंग ठीक नहीं हैं, और न ही वह अपने किसी अधिकारी को सेल्यूट करती है। गवर्नर जनरल ने २७ अप्रैल १८५७ को उत्तर लिख भेजा कि: ४८वीं बटालियन को या अन्य जिसे आप उचित समझते हों मेरठ भेजा जाए, इसके लिए किसी अन्य के आदेश की प्रतीक्षा न की जाए।

जी० डब्ल्यू० फोरेस्ट- द हिस्ट्री ऑफ म्यूटनी, वायलूम – १ पेज नं० – १०५

उसी समय लखनऊ में एक आम दरबार का आयोजन किया गया था। जिसमें सभी देशी सैनिक व अधिकारी बुलाये गये थे, और मौजूद भी थे। सर हेनरी लारेंस उस समय शहर के संभ्रॉत व्यक्तियों और कुशाग्र बुद्धि वाले यूरोपियन अधिकारियों एवं अहलकारों से घिरे हुए थे। उस दरबार में देशी अफसरों के लिए एक बड़ा ही अर्थपूर्ण भाषण/अपनी अश्लील जबान में दिया था।

लारेन्स ने हिन्दू मुस्लिम दंगों का बीज बोना शुरू कर दिया था। यह कह कर कि :-

" दिल्ली के मुस्लिम शासकों ने यहाँ के हिन्दुओं को सताया एवं प्रताड़ित किया। जब कि लाहौर के हिन्दुओं ने मुसलमानों को प्रताड़ित एवं सताया है "।

"Musulman ruler at Delhi has persecuted Hindoos said Sir Hanry" Hindoo rullers at Lahore have persecuted the Mussulmans.

G.W. Forrest. History of Indian Mutiny Vo 1 I (Page 183)

(जि० डब्ल्यू० फारेस्ट – द हिस्ट्री आफ म्यूटनी, वायलूम–१ पेज नं० १८३)

इसी दरबार में हेनरी ने उन हिन्दुस्तानी सिपाहियों को और देशी अफसरों को सम्मानित किया, तथा उपाधियाँ और इनामात भी बाँटे थे, जिन्होंने अंग्रेजी हूकूमत के लिए बडी ईमानदारी एवं निष्ठा के साथ काम किया था, भले ही भारत माता या अवध की भूमि को दासता की जंजीरों में जकड दिया गया था। ऐसे वीरोचित कार्य करने वाले वीरों को सम्मानित न करना कितनी बड़ी असभ्यता होती। अंग्रेज असभ्यता की श्रेणी में नहीं आते थे। कावे ब्राऊन ने इनके नाम भी दिये हैं। "सूबेदार सेवक तिवारी, हवलदार हीरा लाल दूबे, सिपाही राम नाथ दुबे और सिपाही हुसैन बख्श यह सभी १३ मई को सम्मानित किये गये थे। सुरेन्द्र नाथ सेन ने भी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक १८५७ में पृष्ठ – १८१ में इनका जिक्र किया है।

" Sir Henry addressed the gathering before dresses of honour and purses were presented to the sepoys and native officers who had given

unmistakable evidence of the kindness which they had always received from the British Govt."

The full text of Sir Henry Lawrence's address has been reproduced in this book from the "Central Star" newspaper of may 13th " The persons rewarded were Subedar Sewak, Tiwari,Haridar, Hira Lal Dube, Sepoy Ram Nath Dube and Sepoy Husein Baksh."

"Cave - Browne G. Cit. Vol. I pp. 31-37"

'गदर के साल भर पहले आलम गीर और हैदर अली ने हजारों हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया, न मालूम कितने मन्दिरों को तोड़ा गया। कितना घरेलू सामान लूटा या बरबाद किया गया '' सर हेनरी ने आगे यह भी कहा कि :– अभी साल भर पहले तक लखनऊ में कोई हिन्दू मन्दिर बनाने का साहस नहीं कर सकता था पर अब सब बदल गया है ''।

"Sir Henrey said - "Alumgeer informer times and Hyder Ali in later days forcibly converted thousands and thousands of Hindoos, desecrated their fans, demolished their temple.

and carried ruthless devastation amongst their house hold goods came to our time. Many here preeent will kmeir that Ranjeet Singh never permitted his mohammedan subjects to call the pious to a prayer never allowed the muezzin to sound from the lofty minarets which adorn Lahore, and remain to this day a moment of their magnificant founders the year before last a Hindoo could not have dared to build a temple in Lucknow. All this is changed."

Surendra Nath Sen Eighteen fifty seven (Page No. 181 and 33)

(सुरेन्द्र नाथ सेन १८५७ पेज नं० १८१)

नवाबी काल की उस घटना का वर्णन करना असंगत न होगा जिसके कारण अवध और लखनऊ के पासियों को बे घरबार करके बाहर निकाला गया था। अवध के शासकों ने इन मूल बाशिन्दों पर बड़े जुल्म ढाये थे। अक्तू० १८२९ घटना की रिपोर्ट रेजीडेन्ट ने कम्पनी सरकार के सिकेट्री को की थी ''अवध के शासक अपने इस्लाम धर्म की ज़रा भी बेइज्जती बरदाश्त नहीं कर पाते थे। किसी भी अफवाह पर तुरन्त विश्वास कर लेते थे। बिना किसी सोच विचार या सहानुभूति के। जैसे हीएक अफवाह फैली कि लखनऊ की एक मस्जिद में एक सूअर का

वध किया गया है। तुरन्त ही तीन, चार हजार हिन्दू मूल निवासियो (पासियों) को लखनऊ शहर से निकाला गया उनके देव स्थानों/मन्दिरों को मिटा दिया गया था।''

"The Avdh rular tended to react sharply to perceived insults to his religion, and without much sympathy for those of the vast majority of the inhibitant even of his Capital. When reports reached the Awadh ruler that a pig had been slaughtered as a gesture of defilment in one of Lucknow's mosques, he ordered the three to four thousand Hindu inhabitants (Mostly Pasis) of the locality expelled from the city and all their temples demolished."

Michael. H. Fisher - A clash of Culture (The End of the Awadh Imperial court (1847 - 1856) Page No. 221

हिन्दू और मुसलमान सिपाहियों को पूरी तरह दिखाई दे गया था कि अंगरेज किस प्रकार हमें पुराने झगड़ों की याद दिला कर, और आपस में लड़ाकर दोनों को गुलाम बनाए रखने की तरकीब कर रहे हैं। लखनऊ दरबार के दो दिन बाद ही जब यह खबर कि :- मेरठ में मुठभेड़ हो गयी, और उसी दिन दिल्ली पर विप्लवकारियों का कब्जा हो गया है, लखनऊ

पहूँची, तो सर हेनरी लारेन्स ने तुरन्त ही सुरक्षा की कार्यवाही शुरू कर दी थी। तीन तोपें, १८ पौंड, २४ पौंड, ९ पौंड की और ८ इन्च के मोर्टार रेजीडेन्सी की सुरक्षा के लिए लगा दिये गये थे। उस समय लखनऊ की आबादी १० लाख थी और शहर ७ वर्ग मील में फैला हुआ था।

पाँच

तीस मई, १८५७ की रात, ९ बजे लखनऊ में छावनी की तोप छूटी, लड़ाई छेड़ने का यही निशान नियत था, सबसे पहले ७१वीं पल्टन की बन्दूक की आवाज सुनायी दी थी। फिर आगजनी, मारकाट शुरू........... ३१ मई, १८५७ को सुबह सर हेनरी लारेन्स ने कुछ गोरी सेना और सात नम्बर की देशी सवार पल्टन को साथ लेकर विप्लवकारियों पर हमला बोला था। दोपहर होते-होते शहर के चौथाई भाग (हुसैनाबाद, उसके आस-पास आदि) में क्राँति की मशाल जलने लगी थी। विद्रोहियों को दबाने के लिए जा रही सातवीं देशी पल्टन ने क्रॉतिकारियों की फौजी भीड़ को देखकर कम्पनी का झण्डा फेंक कर क्रॉति का हरा झण्डा हाथ में ले लिया था। हेनरी लारेन्स घोड़े पर सवार अपने कुछ बचे सिपाहियों के साथ छावनी से भागकर लखनऊ की रेजीडेन्सी में शरण ले ली थी। ३१ मई १८५७ की शाम तक ४८वीं पैदल , ७वीं सवार और अन्य देशी पल्टनों में स्वतन्त्रता का हरा झण्डा फहराने लगा था। १० जून १८५७ तक सारा अवध अंग्रेजी राज्य के चंगुल से निकल गया था। सिर्फ लखनऊ रेजीडेन्सी में, जहाँ अंग्रेजों ने शरण ले रखी थी वहाँ लड़ाई चल रही थी। लखनऊ के अन्दर सारी अंग्रेजी सत्ता रेजीडेन्सी में कैद थी। जिसमें एक हजार अंग्रेज और आठ सौ हिन्दुस्तानी थे। क्रॉति का श्री गणेश होते ही लखनऊ मे तअल्लुकेदारों, जमींदारों, पासी तिलंगों (उस समय शाही फौजों और पासी सरदारों के सिपाहियों को तिलंगा कहते थे।) ने मलीहाबाद में कम्पनी की सेना को हरा दिया। अयोध्या, फैजाबाद, सुल्तान पुर बाराबंकी, दरियाबाद, सण्डीला, रसूलाबाद आदि के चकलेदारों, सरदारों की सेनायें व पासी तिलंगे अवध की राजधानी लखनऊ में एकत्र हो गये थे। बाराबंकी जिले की पासी रियासतों पसका, कमियार,

शाहपुर, धनावा और परसपुर के पासी सरदार मिलकर, अंग्रेजी सेना के बार–बार छक्के छुड़ा रहे थे। रेजीडेन्सी की घेरा बंदी सुदृढ़ होती जा रही थी। ३० जून, १८५७ को चिनहट में विजय के बाद विद्रोही सेना ने लखनऊ शहर पर अधिकार कर लिया था।

२५ जून से फतेहपुर होता हुआ नदी के रास्ते से कानपुर के लिए रवाना हुआ था। रास्ते में उसे लड़ाईयाँ लडनी पडी थीं। १६ जुलाई, १८५७ को हैवलाक कानपुर में दाखिल हो गया था। १८ जुलाई, १८५७ को अपनी विस्वश्नीय सेना को नवाब गंज (उन्साव) की और मोड़ा, तभी विठूर के जासूस ने खबर दी कि नाना साहब अवध की ओर चले गये हैं और विठूर खाली हो गया है, तुरन्त ही मेंजर स्टीफेन्सन को रवाना किया था। २० जुलाई, १८५७ को हेवलाक की फौजों ने गंगा को पार किया था। २१ जुलाई १८५७ को कमान्डर–इन–चीफ को तार भेजा कि ''मैं गंगा पार करने के लिए स्वतंत्र हूँ विठूर में नाना की फौज तितर बितर कर दी गयी है।'' गंगा पार करने के बाद २९ जुलाई १८५७ को जब लखनऊ की ओर रूख किया तो उन्नाव के पास ही विप्लवकारियों से मुठभेड़ हो गयी थी। यहाँ भी सख्त लड़ाई लड़नी पड़ी थी। उन्नाव से आठ मील की दूरी पर स्थ्ति '' बशीरतगंज '' में पहुँचने पर वहाँ पर जमे क्रॉतिकारियों से भयंकर युद्ध करना पड़ा। जिस में हैवलाक की काफी युद्ध सामग्री समाप्त हो गयी थी। यह 'बशीरतगंज का प्रथम युद्ध था। उन्नाव व बशीरतगंज में सफलता मिल तो गयी, पर अधिक संख्या में अंग्रेजी सिपाही मारे गये थे। अब लखनऊ की ओर बढ़ना और रेजीडेन्सी में फंसे अंग्रेजों को छुड़ाने का मंसूबा दूर दिखाई पड़ रहा था। फौज की कमी तथा हैजा पेचिश से पीड़ित सिपाही आगे बढने में आना कानी

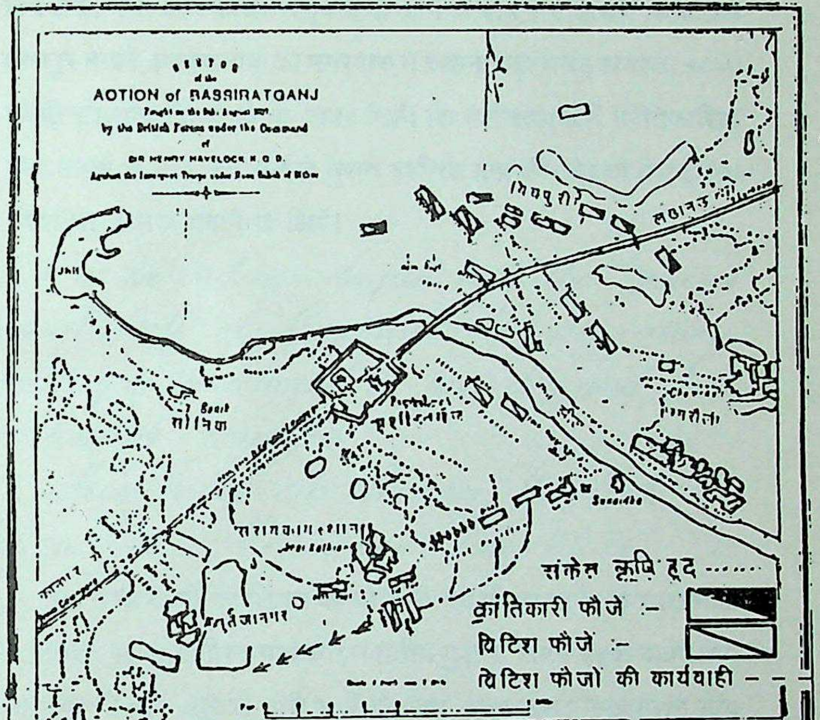

५ अगस्त १८५७ को वशीरतगंत में ब्रिटिश फौजों की कार्यवाही का मानचित्र – जो सर हेनरी हैवलाक द्वारा नाना साहब बिठूर के विरूद्ध था।

कर रहे थे। परन्तु हेवलाक के सख्त आदेश के आगे झुकने को मजबूर हो गए थे। हथियारों, गनों और फौजी सहायता के आने से बीमार व घायल सिपाहियों को कानपुर भेजने तक हेवलाक को मगरवारा में रूकना पड़ा था। ३ अगस्त, १८५७ को फौजी सहायता मिलते ही यह खबर मिली कि बशीरतगंज में कॉतिकारियों का पुनः कब्ज़ा हो गया। हेवलाक ने तुरन्त बशीरत गंज की ओर दोबारा हमला कर दिया था, वलवा दबाने के लिये।

On the 3rd of August 1857 the General received half of Captain Olpherts vattery, consisting of three horsed, 9 - poundors and Like wise tow 24 - pounders".

Memoirs of Sir Henery Havelock "by Johan Clark Morshwuon Pege 340

नेल ने भी ८४वीं वटालियन की दो भारी गनें,फील्ड मोर्टर के साथ भेजी थीं। ५ अगस्त १८५७.वशीरत गंज के इस द्वतीय युद्ध के समय ६४वीं वटालियन मुर्तजा नगर के बाऐं ओर से भारी गनों के साथ, तथा सराय कायस्थान गांव के बॉयी ओर से ८४वीं रेजीमेंट ने आकमण किया था। इस लड़ाई में बेगुनाह ३०० कॉतिकारियों ने अपने प्राणों की आहूती दी थी। अंग्रेजों के २ सिपाही और २३ घायल हुए थे। हैवलाक काफी घायल अवस्था में बीमार था। कॉतिकारी हतोत्साहित नहीं थे, हर जगह गांवों में विरोध करते रहते थे। अंग्रेजी सेना लगातार लड़ते–लड़ते पस्त हो गई थी।

डंकाशाह मौलवी का नाम आज भी लखनऊ में बड़े अदब के साथ बड़े

कर रहे थे। परन्तु हेवलाक के सख्त आदेश के आगे झुकने को मजबूर हो गए थे। हथियारों, गनों और फौजी सहायता के आने से बीमार व घायल सिपाहियों को कानपुर भेजने तक हेवलाक को मगरवारा में रूकना पड़ा था। ३ अगस्त, १८५७ को फौजी सहायता मिलते ही यह खबर मिली कि बशीरतगंज में कॉतिकारियों का पुन: कब्ज़ा हो गया। हेवलाक ने तुरन्त बशीरत गंज की ओर दोबारा हमला कर दिया था, बलवा दबाने के लिये।

On the 3rd of August 1857 the General received half of Captain Olpherts vattery, consisting of three horsed, 9 - poundors and Like wise tow 24 - pounders".

Memoirs of Sir Henery Havelock "by Johan Clark Morshwuon Pege 340

नेल ने भी ८४वीं वटालियन की दो भारी गनें,फील्ड मोर्टर के साथ भेजी थीं। ५ अगस्त १८५७-वशीरत गंज के इस द्वतीय युद्ध के समय ६४वीं वटालियन मुर्तजा नगर के बाऐं ओर से भारी गनों के साथ, तथा सराय कायस्थान गांव के बॉयी ओर से ८४वीं रेजीमेंट ने आक्रमण किया था। इस लड़ाई में बेगुनाह ३०० कॉतिकारियों ने अपने प्राणों की आहूती दी थी। अंग्रेजों के २ सिपाही और २३ घायल हुए थे। हैवलाक काफी घायल अवस्था में बीमार था। कॉतिकारी हतोत्साहित नहीं थे, हर जगह गांवों में विरोध करते रहते थे। अंग्रेजी सेना लगातार लड़ते–लड़ते पस्त हो गई थी।

डंकाशाह मौलवी का नाम आज भी लखनऊ में बड़े अदब के साथ बड़े

बूढ़े लेते है। ये घसियारी मंडी में रहते थे। इनका पूरा नाम मौलवी अहमदुल्ला था जो गदर के बाद फरवरी १८५७ तक लखनऊ में ही क्रांति का डंका बजाते रहे थे। सैयद कमालुद्दीन हैदर ने लिखा है कि ये ''नक्कार शाह '' के नाम से भी मशहूर थे। शैदा बेगम ने अपने ख़त जाने आलम के नाम–तारीख २६ जमादुल–आखिर सन् १२७३ हिजरी में भी इनका जिक्र इस तरह किया है :–

'' पिया जाने आलम, जब से आप लखनऊ से सिधारे, ख्वाब हराम है। रोना धोना मुदाम है । यहाँ शबोरोज़ आहोबुका में गुजरती है। .... नई – नई बातें सुनने में आ रही हैं। दिल को हौल है, कि देखिए फलक क्या – क्या रंग दिखलाता है। घास मंडी में मौलवियों का जमाव है। सुना है कि एक सूफी अहमदुल्ला शाह आए हुए हैं। नवाब चीनाटीन के साहबजादे कहलाते हैं। आगरे से आए हैं। ये भी सुना है कि उनके हजारहाँ मुरीद हैं और पालकी में निकलते है। आगे डंका बजता है। पीछे इजदेहाम बडा होता है।...''

आवाम में डंकाशाह का बड़ा प्रभाव था, सत्तावनी गदर में इनका बड़ा अहम हिस्सा था। ये फरवरी में फैजाबाद चले गए थे, फिर जुलाई में लखनऊआए थे। रेजीडेन्सी पर पासियों के बराबर हमले हो रहे थे। कुछ पासी वीर पुरूष अपने धनुषें से बाणों की बौछार कर रहे थे। कुछ तो सुरंगें उडा रहे थे। कुछ सुरंगें खोद रहे थे। पासी क्रांतिकारी बेलीगारद को काफी नुकसान पहुँचा रहे थे। अगस्त तक कानपुर से हैवलाक की सेनाओं के इधर आने की खबर गर्म थी। सभी क्रंतिकारियों ने यह तय किया था, कि उसके पहले ही बेलीगारद पर कब्जा कर लिया जाये। सुरंगी विस्फोटों और पासियों की भंयकर गोलाबारी से २ जूलाई १८५७ को हेनरी लारेंस, बुरी तरह से घायल अवस्था में गोला लगने से मारा गया था। ७ जूलाई

१८५७ को गोले से 'जहानी हाउस ' के दरवाजे को उड़ा दिया गया था। दस अगस्त ५७ तक सभी पलटनें और रिसाले व पासी तिलंगे धनुष–वाण से लैस, हाथो में नंगी तलवारे लिए अपनी–अपनी जगह धावे के लिए तैयार थे। पासियो ने सुरंगों को खोद–खोद कर अपने पासी तिलंगों को बेलीगारद की दीवार तक पहुँचा दिया था। पासियों ने एक सुरंग में बत्ती दी, पर वह न उडी, तो कुछ पासी तिलंगे दीवार खोदने लगे थे। पर कोई भी बेलीगारद का बेध पाने में सफल नहीं हो पाया था। यह एक अजीब बात थी; कि उस दिन फौज चुप थी। अंग्रेजों ने भीतर से जवाबी कार्यवाही की थी, जिसमें २२० पासी तिलंगे और १०५ अन्य तिलंगे घायल हुए थे।

विजयी स्वदेशी सेनाओं ने अंग्रेजों को खदेड़ना शुरू किया। लोहे के पुल तक अंगेजी सैनिक बेतहासा भागते चले गए। वहाँ रेजीडेन्सी की तोपों ने विकट मार मारी। पत्थर वाले पुल के पास स्वदेशी सैनिकों को ''मच्छीभवन'' की तोपों का सामना करना पडा। स्वदेशी सेनाओं ने भी अपनी तोपों के मोर्चे साधे। देखते–देखते ही स्वदेशी सेनाएं सारे नगर पर छा गईं। कोठी फरहत बख्श, छतरमंजिल, बादशाह बाग, सिकंदर बाग, मुहम्मद बाग, शाद मंजिल, खुर्शीद मंजिल, मुबारक मंजिल कोठी रसद–खाना, हजरतगंज दिलकुशा, आसफी इमाम बाड़ा, जिधर देखिए, उधर ही विजयोल्लास मग्न भारतीय सैनिक दिखलाई पड़ रहे थे।......'' रेजीडेन्सी घिर चुकी थी। उसके आस–पास के घरों में घुसकर दीवारों में बन्दूक के लिए छेद बनाकर रात होने के पहले ही सिपाही रेजीडेन्सी में गोलियां बरसाने लगे। ''

अमृत लाल नागर– गदर के फूल– पृष्ठ १९९

चांदी वाली बारादरी में ७ जूलाई १८५७ को बिरजीस कदर की ताज पोशीं हुई थी। स्वदेशी सेना के जनरल बरकत अहमद ने बिरजीस कदर को राजमुकुट पहनाया था। अफसरों ने तलवारों की नज़र दिखाई, २१ तोपों की सलामी दी गई। शहर में पुन: शाही राज्य स्थापित होने की खुशी में जश्न मनाया गया था। सैनिक पंचायत, बिरजीसी सरकार ने बेगम हजरत को अपने कमसिन बेटे की संरक्षिका नियुक्त किया था। १३ नई पलटने बनाई गयी। महलों की बांदिया बेगम हज़रत महल की निगरानी में कवायद करती, स्त्री जासूसों का एक अच्छा संगठन भी तैयार किया गया था। जूलाई अगस्त और आधे सितम्बर तक तूफानी समुंद्र में सल्तनत की झंझरी नाव लेकर बेगम बड़े साहसपूर्वक आगे बढ़ रही थी। छ: अगस्त १८५७ को हैवलाक ने कमांडर–इन–चीफ को एक तार भेजा था ''मुझे बड़ी अनिच्छा ओर दु:ख के साथ लखनऊ अधिकार करने की आस छोड़नी पड रही है, अब परित्याग करने की तेयारी है, क्योंकि मेरे पास तीन ही अफसर बाकी बचे हैं। ''

जी० डब्लू० फोररेस्ट–दी हिस्ट्री आफ इण्डिया म्यूटनी वाल्यूम१ पेज– ४९६

''मेरी फौज के बहुत से आदमी लडाई में और बहुत सारे आदमी रास्ते में भयंकर हैजे में मारे गए। मुझे अवध के अतिरिक्त ग्वालियर की पांच हजार सिपाहियों व तीस गनों वाली फौज ने धमकी दी है। मै युद्ध करने को तैयार हूँ,.....।'' जी० डब्ल० फाररेस्ट–दी हिस्ट्री आफ इण्डियन म्यूटनी–वाल्यूम. २–पेज –१२

हैवलाक कानपुर लौट गया था।''२३ अगस्त १८५७ को कमाण्डर–इन–चीफ ने आउट्रम को पूरी स्थिति बताते हुए ९०वी : पॉचवी रेजीमेंट को तुरन्त भेज देने

के आदेश दिए थे। लार्ड कैनिंग ने कैम्पवेल को जल्दी रवाना होने को कहा था, ''आप छोटे प्रदेशों को विजित करने के चक्कर में न पड़ो। मेरा यह सुझाव है, कि पूरा ध्यान लखनऊकी घेराबन्दी तोड़ने और वहॉ से विद्रोहियों को समाप्त करने में रखो।''

जान पियाम्बल–राज–इणडियन, म्यूटनी एण्ड किंगडम० आफ० अवध पृष्ठ २२४

१८ सितम्बर १८५७ को हैवलाक की सेना ने गंगा नदी को नावों के बने पुल से पार किया था। हैवलाक दूसरी बार लखनऊमें फंसी सेनाको मुक्त कराने के अभियान पर चला। भयंकर वर्षा के बावजूद सेना आगे बढ़ रही थी। २१ सितम्बर ५७ को शाम के समय मगरवारा में उन्नाव के आस–पास के विद्रोही पासियों से मुठभेढ हो गई थी। यहीं पर १२वीं बटालियन के कैंप्टन जानसन और लेफ्टीनेन्ट ''डाउसन'' आ मिले। इनको कड़े आदेश थे कि तुरन्त हि हैवलाक से सम्पर्क करें, इसी कारण दिन भर बिना कुछ खाये पिये घोडों को सरपट भगाते हुए लखनऊ अभियान को सफल करने के लिये आ मिले थे। इनके पिछले कारनामों को देखकर इनकी नियुक्ति की गई थी। (बाद में डाऊसन ने सिकंदर बाग में अपने जौहर दिखाये थे।) बरसात थमने का नाम नहीं ले रही थी। २२ सितम्बर १८५७ को सई नदी से एक मील पहले पड़ाव डाला था। २३ सितम्बर १८५७ को २ बजे आलम बाग से तीन मील पहले पासी विद्रोहियों से कड़ा मुकाबला करना पड़ा था। आखिरकार हैवलाक इस बार लखनऊअपनी बड़ी सेना के साथ आ ही गया था।

छः

पच्चीस जूलाई १८५७ की अंग्रेजी सेना और २० सितम्बर १८५७ की अंग्रेजी सेना में बहुत अन्तर था। आउट्रम, नील कूपर, जैसे–जैसे अनुभवी सेनापति व जानसन, डाऊसन, वैलस सरीखे कुशल लेफ्टीनेन्ट इस समय हैवलाक की मदद के लिए मौजूद थे। ढाई हजार अंग्रेज,एक सिखों की रेजीमेंट और बढ़िया तोपें हैंवलाक के साथ थी। आलमबाग में दिल्ली पतन की खबर सुनकर अंग्रेजी सेना के हौसले और भी बढ. गए थे।

'When the pickets had been posted and the troops. preparing to bivouac for the night were drawn up in the live. outrane told them the glad tiding- Delhi had been taken! ......''

G.W. Forrest- A History of the indian Multiny vol.2 page. 328 and 33.

आलमबाग में क्रांतिकारियों की एक बड़ी पलटन उहरी हुयी थी। जिनमें राजा बिजली पासी और पासी राजा सातन के वशंज पासी तिलंगे, औरंगाबाद, बिजनौर, पहाड़पुर टिकुरिया, मोहनलालगंज गौरिया हुलास खेड़ा आदि गांवों के ग्रामवासियों के साथ, हाथ में हरा झंडा लिए डटे हुए थे। श्री अमृतलाल नागर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गदर के फूल' में पृष्ठ २१५ पर आलमबाग युद्ध का वर्णन इस प्रकार किया है।

''आलमबाग में बड़ी भीड.थी। जनता सिपाही सभी अपने नगर की सुरक्षा के लिए लडने को उमड.आये थे। पानी भी बडे.जोर से बरस रहा था। दोनों ओर से करारी मार चल रही थी, मुंह–मेल लड़ाइ हो रही थी। बेगम हजरत महल को

लखनऊ का मानचित्र १८५७–५८

→ - → सितम्बर १८५७ में हैवलाक की रक्षक सैना का मार्ग

→→→ नवम्बर १८५७ में कैम्पबैल का सैनिक मार्ग

→→→ मार्च १८५८ का अंतिम मार्ग

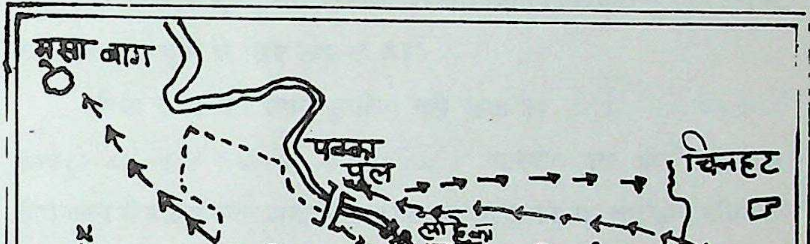

नोट:- सिकंदर बाग के यहाँ गोमती नदी के घुमाव में बाग, महल और मस्जिदें बनाई गयी थीं।

चैन नहीं था। शहर में चारों ओर जा-जा कर सरदारों को उत्साहित कर रही थीं। अख्तर महल कलकत्ते में थीं उनको सरफराज बेगम ने खत में लिखा था। ''मै नहीं समझती थी कि ''हज़रत महल ऐसी आफत की परकाला है। खुद हाथी पर बैठकर तिलंगों के आगे-आगे फिरंगियों से मुकाबिला करती है।'' धन्य है उस स्त्री के जीवट की! हजरत महल से सचमुच राजमाता के पद गौरव की प्रतिष्ठा बढ़ी है। उनकी प्रेरणा और भयानक शत्रु का सामना सैनिकों में अद्‌भुत उत्साह भर सका, वे भूख, प्यास आपसी शिकायतें आदि सब कुछ भूलकर अपनी एक-एक इंच भूमि के लिए लड़ रहे थे।''

सीधा रास्ता हर समय सुरक्षित नहीं रहता है। *The Shortest way is not always safest.''* चारबाग पुल और नहर तक सीधे जाने में बडी भयंकर लड़ाईयों का सामना करना पड.रहा था। सभी गलियाँ, सड़के क्रांतिकारिथों से भरी पड़ी थी। हैवलाक और आऊट्रम मिल कर आगे बढने की योजना बनाने लगे थे। उनके सामने रेजीडेंसी तक पहुंचने के लिए चार रास्ते दिखाई पड.रहे थे। -१- कानपुर रोड से सीधे चारबाग और शहर के बीच से होकर बेलीगारद के गेट तक। (जिसकी दूरी डेढ मील है) २- दूसरा रास्ता चारबाग पहुंचने के बाद, नहर के बायें किनारे होते हुए चक्कर काटते हुए मैदान तक, जहां से बाये मुड़ कर कैसरबाग की ओर बढ़ा जाय और कैसरबाग तथा गोमती नदी के मैदान में मोर्चा बंदी की जाय। ३- तीसरा आलमबाग से दाहिने मुड़कर दिलकुशा पहुँच कर कैसरबाग के मैदान में पहुँचा जाय। ४- दिलकुशा से गोमती पार करके कुकरैल के पुल होते हुए, बादशाह बाग और लोहे वाले पुल (डालीगंज) पहुँचा जाय। इस प्रकार से काफी मंत्रणा के बाद दूसरा रास्ता

ही आगे बढ़ने के लिए तय किया गया था।

"The safest way was to proceed east, and march, as far as Dilkusha and cross the river Gomti, and them to turn left, seize the Iron bridge and recoross to the city side occupy Badshahbagh and relieve the Residency. But heavy rain had made part of the road impassable for heavy artillery, and this route had also to be rejected."

S.N.Sen- Eighteen Fifty Seven Page 219 & 220.

"It was therefore, resolved to advance by the second route: that meant to force the Charbagh, Bridge, turn to the right, half circle rounnd the city, and establish themselves in the Fured Buksh, a palace adjacent to the Residency."

G.W. Forrest- H. History of the Indian Mutiny vol.2- page 35 & 36.

हैवलाक दूसरे रास्ते से सहमत नहीं था, वह चौथे रास्ते से और हल्की गनो के अलावा भारी गनों को ले जाना चाहता था। हैवलाक के पुत्र ने अपने पिता की इच्छा के बारे में बताया था।

''Sir Henery Havelock- Allan: ''My father was always of the opinion that no.4, viz, the trans-Gomtee routs was the one that ought to be followed, but he desired to take the heavy guns with us''- ''History of the Indian Mutiny'' by T. Rice Holmes, Appendix K.

२५ सितम्बर १८५७ प्रातः कालण आलमबाग से हटकर कुछ चक्कर से अंग्रेजी सेना रेजीडेन्सी की ओर बढ़ने लगी थी। लखनऊ की क्रांतिकारी सेना ने मुड़कर उन पर गोले बरसाना शुरूकर दिया। अंग्रेजी सेना गोलों की बौछार में से निकलती हुई चारबाग के पुल तक पहुँच गई थी। चारबाग के पुल पर भयंकर संग्राम हुआ था। क्रांतिकारियों की सेना पुल के ऊपर और दूसरी ओर मोहड़ा ले रही थी। दोनों तरफ से जोरों के साथ गोले बरस रहे थे। घायलों की संख्या काफी ऊंची हो गई थी। जनरल हैवलाक का एक पुत्र भी बड़ी वीरता के साथ लड़ रहा था। अंग्रेजों की ओर जानो का नुकसान अधिक हुआ था। बावजूद इसके अंग्रेजी सेना लाशों को रौंदती हुई पुल पार कर गई। अर्द्धचन्द्राकार रास्ते से मोती महल सिकंदरबाग खुर्शीदमहल और कैसरबाग तक अंग्रेजी फौजे. पहुँच गई थी। चारबाग के पुल को पार करने के बाद एक–एक कदम पर संग्राम जारी रहा। कैसरबाग में क्रांतिकारियों की लगी चार गने आग उगल रही थी। कैसरबाग की भंयकर गोलाबारी में ''जनरल नील'' की गरदन में एक गोली आकर लगी,

और ''नील '' वहीं ढेर हो गया। जनरल नील की मृत्यु अंग्रेजी सेना के लिए बड़ा गहरा सदमा था।

''25th sept. 1857 a column advanced by the Charbagh bridge which was stormed, and thence by a circuitous route, in which no serious opposition was met with, to the Moti Mahal. Here they were met by a heavy fire from the Qaisarbagh and Khurshed Manzil, but the batteries were silenced, and then the force advanced past the Qaisarbagh, where General "Neill" was killed, and the Chatter Manzil to the Bailey-guard gate of the Residency. The first relief was effected at a heavy sacrifices of life. Out of his small force Havelock lost 119 killed, 77 Missing and 339 wounded.''

Lucknow Gazetteer Volume xxxvii printed Allahabad 1904- page 159.

अंग्रेजी सेना लडते लडते रेजीडेन्सी के अंदर पहुँच गयी थी। यह भी कह सकते है कि क्रांतिकारियों ने खदेड़ कर रेजीडेन्सी के अन्दर तक पहुंचा दिया था। ८७ दिन के लगातार मोहासरे (फौजी घेरा बन्दी) में रेजीडेन्सी के अन्दर ७०० आदमी मर चुके थे। उस समय वहां करीब ५०० अंग्रेज और चार सौ

कैसरबाग पर हमला बोलते हुए जनरल 'नील'

कैसरबाग युद्ध में जनरल 'नील' क्रान्तिकारियों की गोली से मरा था।

हिन्दुस्तानी थे जिनमें अधिकतर घायल अवस्था में पडे थे। रेजीडेन्सी में पहुंचने के पहले तक हैवलाक के ७२२ आदमी मारे गये थे। हैवलाक को एक बार फिर भयंकर निराशा हुई, क्योंकि रेजीडेन्सी का मोहसरा समाप्त न हो सका। लखनऊ की क्रांतिकारी सेना ने एक बार फिर रेजीडेन्सी को पहले की तरह घेर लिया था। लखनऊ का बाकी शहर और अवध का सारा इलाका पूर्ववत् स्वाधीन रहा। हेवलाक और उसकी सेना अब स्वयं रेजीडेन्सी में कैद हो गयी थी, केवल कैदियों की संख्या पहले से बढ़ गई थी।

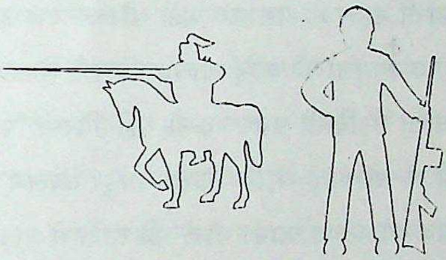

सात

अवध के कांतिकारियों ने, रेजीडेन्सी तक सीधे आने वाली सड़क, पुल और उसके आस–पास की जगहों पर, बड़ी मजबूत मोचेबंदियाँ कर रखी थी। जनरल हैवलाक और जनरल आऊट्रम के रेजीडेन्सी में दाखिल हो जाने के बाद भी वहां कोई खुशी नहीं थी। अंग्रेज अपने को कैदी ही महसूस कर रहे थे। बाहर से यह खबर मिल रही थी कि लगभग एक लाख क्रांतिकारियों की फौज एक मजबूत घेराबंदी किए पड़ी है। उस समय नाना साहब भी विद्रोहियों के साथ मौजूद थे। विप्लवकारियों से घिरी एक अंग्रेजी फौजी टुकड़ी रेजीडेंसी से ११०० गज़ दूर मोती महल में असहाय पड़ी थी। जनरल आऊट्रम को अपनी युद्ध सामग्री,रक्षक सेना की कोई जानकारी नहीं मिल पा रही थी। विद्रोही सेना के साहस में किसी प्रकार कमी नहीं दिखाई पड़ रही थी। आऊट्रम गंभीर रुप से सोच रहे थे,कि किसी प्रकार आलमबाग में पड़े अंग्रेजी सैनिक पड़ाव को लौटा जाय। मौके की ताक में थे। वहाँ पहुंच कर अगली फौजी मदद आने तक का इतजार किया जाय। रेजीडेंसी के सभी बाहरी सम्बंध समाप्त कर दिए गये थे। अंग्रेज सेनापति बाहर से सम्बंध स्थापित करने में नाकामयाब हो रहे थे। विद्रोहियों ने रेजीडेंसी की सप्लाई समाप्त कर दी थी। उस समय रेजीडेंसी में :– आटा एक रू० सेर, घी १० रू० सेर, चीनी १६ रू० सेर, देसी तम्बाकू की एक पत्ती २ रू० की, १५० रू० से १८० रू० प्रतिदर्जन ब्रांडी, बियर ७० से६० प्रति दर्जन, सिगार तीन रु० में बिक रही थी।

नवाब फख महल ने अपने खत में बादशाह से यहाँ की हालत

बयान की थी।

.... हर एक मकान वीरान है, कालों ने ऊधम मचाई है, गोरे ने मात खाई है। दो चार दिन में देखिए क्या हो ....? (पिया जाने आलय के नाम नवाब फख महल का खत रमजान २७४ हिज॰)

दो हजार सिपाहियों की एक फौज रेजीडेन्सी में संगठित की गई, जिसके संचालन का भार २६ सितम्बर १८५७ को आऊट्रम ने संभाला था। दिन के २ बजे, २७ सितम्बर १८५७ को मद्रास फसलियर को यह हुक्म हुआ कि मेजर स्टीफेंसन सिकंदर बाग की बटालियन पर कब्जा करने के लिए धावा बोले। इसके लिए टेढ़ी कोठी से हो कर सड़क पार करके जैसे ही आगे बढ़े थे। एक बड़ेमकान से गोलियों की बौछार होने लगी थी। अंग्रेजों की सभी टुकड़ियाँ दौड़ पडीं। विद्रोहियों की संख्या कम थी, २४ पौंड और १८ पौंड की गनो को छोड़कर आगे की मोर्चाबंदी को सम्हालने चले गये थे। गनों को अपने कब्जें में करके ज्यों ही आगे बढ़ी क्रांतिकारियों की भंयकर गोलाबारी शुरु हो गई थीं कारपोरल विलियम डाऊलिंग ने अपने पेज में इसका वर्णन किया था:-

a .... being at the same time under a wost heavy fire from the enemy."

"He found that, owing to the number of the enemy, it was impossible to hold the position."

G.W. Forvest- A Hist of the India Mutiny Vol. page 66 & 67

थोडी देर में ही स्थिति बत्तर हो गई थी मेजर स्टीफेन्सन ने लौटने का आदेश दे दिया, पर वह भी बेकार क्योंकि लौटने के सभी रास्तों में बडे. अवरोध थे। कई अधिकारी मारे जा चुके थे। बड़ी मुशकिल से जिस रास्ते आगे बढे. थे उसी से वापस लौटे थे। लेफ्टीनेन्ट वारनर ने लिखा है :– कि *''With great difficulty managed to get kim back to the main body''*

२८ सितम्बर १८५७ को विद्रोहियों पर तीन ओर से हमला किया गया था। पहला विद्रोही ब्रिगेड मेस की ओर से, दूसरा विद्रोही ब्रिगेड के दाहिनी तरफ से, तीसरा रेदान ने लोहे वाले पुल की ओर धावे किये थे। ब्रिगेड मेस की टुक्ड़ी में २० आदमियों के साथ ३२वीं बटालियन के लेफ्टीनेन्ट 'कूकोकस' तथा कैप्टन ''लखरट' थे, इनके साथ १४० यूरोपियन सिपाही तथा ७८वीं हाईलैंडर के ९० आरक्षित लोग थे। पहली मद्रास फुसलियर के कैप्टन गालिवे के अधीन मौजूद थे। कैप्टन मोरिसन चीना और खास बाजार को अपने नियंत्रण में ले रखा था। वे एक मकान में अपने सैनिकों के साथ स्थिति के अनुसार सुरक्षा में तत्पर थे। लोहे के पुल तक पहुंचने में लोहे लग रहे थे। आउट्रम की यह आशा समाप्त हो चली थी, कि शहर से खाद्य सामग्री की प्राप्ति हो जायेगी। लोहे के पुल तक पहुंचने और वहां के विद्रोही सेना को हराने में नाकामयाब हो गया था। स्वेच्छा पूर्वक जो सामान कैप्टन बाजार (रेजीडेन्सी के बाहर

आज के गांधी भवन में यह बाजार लगता था) में बिकने आता था, उससे भी वंचित हो गया था। इसी समय आलमबाग के सैन्य दस्ते से रसद समाप्ति की खबर आयी। आउट्रम विचलित हो गया। उसने तुरन्त ही अपनी सेना को आलमबाग तक पहुंचने का मार्ग बनाने का आदेश दिया था। मार्ग बनाने से यह तात्पर्य है कि रास्ते के सभी विद्रोहियों को हटाया जाय, हर कीमत पर।

"The failure to secure the in on Bridge deprived Outram of the hope of receiving a voluntary supply of food from city, and at her savue time he got a massage from the Alum Bagh, detachment saying that were in urgent need of provisions He therefore, determined to open out communication with them and ordered the cavelny to make their way to Alum Bagh."

G.W. Forvest-A hist of the Indian Multiny-page 73.

कम्पनी सरकार बडे.ही दबाव से लखनऊरेजीडेन्सी में फंसी सेना और अंग्रेजों को छुड़ाने का आदेश दे रही थी, आउट्रम हैनलाक विद्रोही सेना से बार–बार मुंह की खा रहा था। पासी तिलंगों के गोरिल्ला युद्ध से बहुत भयभीत थे। शहर के बीच मकानों से होते हुए, आउट्रम ने

आलमबाग तक का रास्ता बनाया था। नेपियर सिकंदरबाग के पासी राजा गुरुबख्श के पासी सैनिकों से बचता हुआ पेनबाग, बादशाह बाग बिबियापुर (आज का मिलेट्री डेरी फार्म)के पूर्व अर्जुनगंज के नाले में छिपते हुए आलमबाग की ओर गया था। रास्ते में काफी सिपाहियों को धर्नुधारी पासी तिलंगों ने अपने तीरों से मार डाला था। अंग्रेजो के पास युद्ध सामग्री ढोने के आदमी भी नहीं थे।

''*The situation seemed desperate as the enemy had unlimited labour especially its expert ''passees'' where as British had a permanent shortage of labour.''*

''*It was the urgent desire of the Govt. that the garrison should be relitved. and the women and children ammounting to upwards of 470 souts, should be with drawn.''*

'State papers', Vol,ii page 226.

११ जुलाई १८५७ को सर कैम्पवेल कम्पनी का नया कमांडर–इन–चीफ नियुक्त हो कर १३ अगस्त सन् १८५७ को कलकत्ते पहुँचा था, कलकत्ते में मद्रास, बम्बई लंका और चीन से नयी–नयी अंग्रेजी पलटनें जमा की गई। कासिम बाजार के कारखाने में नई तोपें ढ़ाली गई। यह तैयारी दो महीने तक होती रही। २७ अक्तूबर १८५७ को हैवलाक और

आऊट्रम जैसे सेनापतियों को रेज़ीडेन्सी की कैद से आज़ाद कराने और लखनऊ को फिर से विजय करने के लिए ''कैम्पवेल'' स्वयं कलकत्ते से चला। साथ ही एक जहाज़ी बेड़ा, कर्नल पावेल और कप्तान पील के अधीन गंगा नदी के रास्ते से इलाहाबाद की ओर भेजा गया। श्रीमती लार्ड कैनिंग ने कैम्पवेल के सहयोगी कर्मचारियों की बाबत अपनी डायरी में लिखा है कि :–

Lady Canning enters in her diary: "Tuesday Otc. 27th. Sir Colin started offer an early dinner. He goes up as fast as possible by dok carriage from the railway. He takes his four Adies-de-Camp, the two Alisons, Fir David Baird, Captain Foster, Captain Metcalf, General Mausjield, and Captain Hope-Johansten, and, I believe they have got a doctor. Tbe superintendent of telegraphs, Patrick Stewart goes to lay down a flying line to Lucknow if possible we begged them all to take care of Sir Colcin, who has the habit of exposing himself very rashly. He has a nice set of what he call "boys" who are very

fond of him: that he storms at them sometimes they all allow. To one he has behaved like an old Cavalier, and I have thought him charming. He would tell me every thing and show me every letter and tellgraph I could care to see or that would interest me."

"The Story of Two Noble Lives" Vol 2. Pege-232

कर्नल पावेल और कप्तान पील को रास्ते में कई जगह क्रांतिकारियों से कड़ा मुकाबला करना पड़ा था। खुजवा (खागा) के युद्ध में ९५ सिपाही मारे गए, इन्ही में कर्नल ''पावेल'' भी मारा गया था। कप्तान ''पील'' बड़ी मुश्किलों में कानपुर पहुँच पाए थे। कानपुर की सैन्य शक्ति को और मज़बूत करने के लिए दिल्ली से चुने हुए २७९० सिपाहियों को अवध का विद्रोह दबाने के लिए रवाना कर दिया गया था। दिल्ली आगरे की ये फौजें कानपुर पहुँच चुकी थीं। होप ग्रांट ने २७ अक्तूबर १८५७ को कानपुर में, कमांडर–इन–चीफ के कलकत्ता छोड़ने का सामाचार भी प्राप्त कर लिया था। ३० अक्तूबर १८५७ को ९३ वें हाई लैंडर की चार कम्पनियों व पैदल सेना को लेकर गंगा पार कर के अवध में दाखिल हो गया था। ३१ अक्तूबर १८५७ को बन्नी पुल पर ही सर कैम्पवेल (कमांडर–इन–चीफ) के कानपुर पहुँचने पर टेलीग्राम मिला था। आलम बाग से छः मील की दूरी पर २ नवम्बर १८५७ को बनीपुल से आकर बन्थरा में पड़ाव डाल दिया था। बनी से फौजों

के कूच के बाद ही विद्रोही सेना से मुठभेड़ हो गई थी। विद्रोही सेना से जमकर युद्ध हुआ था। इसमें आस पास के सभी पासी आ गये थे। कई घंटों तक लड़ाई जारी रही। अंत में अपार अंग्रेजी सेना के आगे विद्रोहियों को हटना पड़ा, फिर भी एक अच्छा नुकसान अंग्रेजी सेना का हुआ था। सर होप ग्रांट की फौज के तीस कुशल सिपाही काम आए थे। विद्रोही सेना की एक पीतल की तोप छूट गयी थी। जिसे होप ग्रांट ने अपने कब्ज़े में कर लिया था। कमांडर–इन–चीफ के आदेशानुसार होप ग्रांट उनके आने तक बंथरा में रुका रहा।

तीन नवम्बर १८५७ को सर कालिन कैम्पवेल कानपुर आ गया था। उसने देखा कि स्थिति बड़ी भयाबनी है। पूरा अवध विद्रोही सेनाओं से भरा पड़ा है। इनमें सभी प्रशिक्षित थे। ग्वालियर की विद्रोही सेना पचपन मील दूर थी। जिसने धमकी की ख़बर दी थी। जनरल आऊट्रम ने सबसे पहले इन को समाप्त करके बाद में लखनऊ रेजीडेन्सी की ओर ध्यान देने का अपना विचार रखा था। सर कालिन कैम्पवेल ने लखनऊ रेजीडेन्सी को मुक्त कराने को पहले महत्व दिया था। १८ नवम्बर १८५७ को ''डयूक ऑफ कैम्पनीज़ '' को यह लिखा कि :–

"लखनऊ में जनरल आऊट्रम बड़ी भारी मुसीबत में है, पूरा अवध इनके विरोध में उमड़ पड़ा है। रेजीडेंसी की सप्लाई खत्म हो गयी है। ब्रिगेडियर होप ग्रांट आलम बाग से १० मील दूरी पर पड़ाव डाले हुए हैं।" ये कहीं से भी रसद प्राप्त नहीं कर पा रहे थे।

On the 8th of November he wrote to the

"Duke" of Cambridge: "All accounts from Lucknow show that Sir James Outram is in great straits. The whole country has arisen around him and the most trifling supplies can not be obtained from the country for Brigadier Grants force which is encamped about ten miles from the Alum Bagh."

G. W. Forrest - A History of the Indian Mutiny V- 2-Page-118

थामस हेनरी कैवनाग के पिता अंग्रेज सिपाही थे। यह अपने पिता की भांति हृष्ट पुष्ट था। लखनऊ में कम्पनी सरकार के दफतर में कलर्क के पद पर कार्य कर रहा था। लड़ाई के दिनों में इसमें क्षात्र धर्म जागा, कई हमलों में इसने सहायक फील्ड इंजिनीयर की हैसियत से भाग लिया था। इसके तत्कालीन अफसर कर्नल ''नेपियर'' थे। जनरल आऊट्रम के समय उनकी योजनाओं तथा विभिन्न प्रकार की जानकारियों और रास्तो से परिचित हो गया था। सर कालिन कैम्पवेल के मार्ग दर्शन के लिए इससे उपयुक्त व्यक्ति और कोई नहीं था। थाम्स हेनरी कैवनाग को मार्ग दर्शक (गाईड) के लिए चुना गया था। इसका काम कमान्डर–इन–चीफ को यहाँ की स्थिति तथा रास्ते की जानकारी देना व विद्रोहियों की मोर्चा बंदी को बताते हुए, अंग्रेजी फौजों को रेजीडेन्सी

तक लाना था। काम आसान नहीं था। पहले तो रेजीडेन्सी से निकल कर वहाँ तक पहुँचना ही टेढ़ी खीर था। चप्पे–चप्पे पर विद्रोही सेना नज़र गड़ाए बैठी थी। पूरी जनता खिलाफ़ थी। शहर के बीच से जाने में तुरन्त पहचान लिया जाता, आऊट्रम ने साफ–साफ कहा था रक्षक सेना का मार्ग दर्शक यूरोपियन अधिकारी ही हो। थामस हेनरी कैवनाग ने स्वं इच्छानुसार इस को अंजाम देने का बीड़ा उठाया था। प्रातः काल ६ बजे कैवनाग अपने परिवार से विदा लेकर मुहिम पर चला था। पहले रेजीडेन्सी में बधशाला के मैदान में बने एक छोटे कमरे में गया जहाँ पर उसने शेखीबाज़ दबंगका भेष बनाया जिसमें चमरौधे देशी जूते, ढाल, तलवार ली। कसी बंडी (सलूका) के ऊपर पीला रेशमी कुर्ता व गले में पीला गमछा सिर पर क्रीम कलर की पगड़ी कमर में कमर बंद बांधा। कंधे से लेकर हाथों पैरो व चेहरों को तेल में कालिख मिला कर पोता। शेखी बाज़ बदमाश का भेष बना कर जब कर्नल नेपियर के पास गया तो वह पहचान नहीं पाया। आऊट्रम भी देख कर दंग रह गया। बताने पर खुश हुये शुभ कामनाएँ दीं।

अवध में जन्मे विशुद्ध भारतीय मिसिर कनौजीलाल जो इस काम को करने देने में, यहाँ की पूरी जानकारी देने और कैवनाग को रास्ता बताने में, पूरी मदद करने के लिए आये थे। साढ़े आठ बजे श्री कनौजीलाल मिसिर को साथ में लेकर कैवनाग ब्रिटिश सीमा पार कर के गोमती के दाहिने किनारे पहुँचा।

"The master spies of Lucknow were

"Angod Tewori" and "Missar Kanauji Lal, Angad was a pensioned sepoy and Kanauji Lal a miner cmpleryee of a mofussil court. Both of them gave eidenee of uncommon doring and auterprice and established communication between the besieged garrison and the relieving armies."

S. N. Sen-Einglsheen Fifty-Seven-Page-195.

`कपड़े उतार कर सिर के ऊपर रख लिया और गोमती के ठंडे पानी में छलांग लगाई। गोमती के बायें किनारे होते हुए लोहे का पुल पार करके, पक्के पुल से शहर के वीरान इलाके में गये थे। वहाँ से शहर की तंग गलियों से छिपते छिपाते शहर पार कर गए थे। रात्री स्माप्त होने को थी। चांदनी बड़ी तेज़ी से अदृश्यता की ओर अग्रसर हो रही थी। कैवनाग बड़ी थकान में था। उसकी पलकें नींद के मारे बोझिल हो रही थी। एक घंटे सोना चाहता था। परन्तु हमारे मिसिर कनौजी लाल सर कालिन कैम्पवेल के कैम्प में दिन निकलने के पहले पहुँचने के लिए व्यग्र थे।

सर कैम्पवेल को ११ जुलाई १८५७ को ब्रिटिश भारतीय सेना का कमांडर–इन–चीफ बनाया गया था। २७ अक्टूवर १८५७ को विपुल अंग्रेजी सेना व सैन्य सामग्री के साथ लखनऊ की घेराबंदी तोड़ने के लिए, कलकत्ता से बनारस, इलाहाबाद, के रास्ते से कानपुर को रवाना

हुआ था। रास्ते में क्रांतिकारियों से मुकाबला करते हुए, नवम्बर के प्रथम सप्ताह में कानपुर आ पहुँचा था। ९ नवम्बर १८५७ को इसने कानपुर छोड़ा और बनी के पुल पर आ गया था। यहीं पर एच० एम० शैनन का समुद्री बेड़ा अन्य रक्षक दल तथा युद्ध सामग्री लिए अंग्रेजी दस्ते साथ में आ मिले थे। ब्रिटिश सेना की ८वीं, ५३वीं ७५ वीं, ९३वीं बटालियने, दो सिख रेंजीमेंट, और एक इंजीनियरों का दल जिसे शार्पर माइनर कहते थे, के मिल जाने से सेना का स्वरुप बहुत बड़ा हो गया था। यहाँ से आगे बढ़ कर आलमबाग में पड़ाव डाल दिया था। हो रही वर्षा थम गई थी, दोपहर को भीषण गर्मी हो रही थी।

सुबह होने को थी, धुंधलापन अभी गया नहीं था। दो व्यक्ति ब्रिटिश सेना में छिपते हुए आगे बढ़ रहे थे, तभी एक अंग्रेज सैनिक ने आवाज दी, तुरन्त ही सुरक्षाद्वार पर तैनात सिख सवार दौड़ा,व्यक्ति आगे बढ़ा और ठोकर खा कर लड़खड़ाते हुए एक टेन्ट के सामने गिर पड़ा। जैसे वह द्वार की ओर बढ़ा एक अधेड़ व्यक्ति जिसका चेहरा बड़ा कठोर था, बाहर आ गया,गिर पड़ा व्यक्ति कैवनाग था,उसने सर कैम्प वेल के बारे में पूछा। बाहर आने वाले व्यक्ति ने कहा की ''में सर कैम्पवेल हुँ। इतना सुन कर कैवनाग ने अपनी पगड़ी उतार कर उसकी परते खोलकर जनरल आऊट्रम का परिचय पत्र और पत्र दिया। कैवनाग सैनिक सिपाही न था फिर भी इस कार्य के करने पर ''विक्टोरिया क्रास '' जैसा पारितोषक रू० बीस हजार के साथ प्रदान किया गया था। साथ ही कैवनाग की प्रोन्नोति ''असिस्टेंट कमिश्नर '' के पद पर हो गयी

थी। इस इनाम पर कर्नल नारमन की यह प्रतिकिया थी :–

"The Government of India bestawed on him a donation of Rs. 20,000 equal to several year's pay at the rate he was then drawing and promoted him from a clerk to a civil officer to be a Assistant Commissoiner ou Rs. 700, a month - great rewards, but certaiuly not more than were deserved."

"A Lecture on the Relief of Lucknow-by-Colouel. H. W. Norman, C.B.

आगे बढ़ने के पूर्व हमारे भारतीय बहादुर मिसिर कनौजी लाल की प्राप्ति को जान ले, शायद आगे कुछ काम आये? मिसिर कनौजी लाल को कैवनाग को रेजीडेन्सी से कैम्पवेल के पास तक पहुॅचाने के उपलक्ष में ''तहसीलदार'' बना दिया गया था। नकद ५००० रूपये और रू० ८३७ मालगुजारी सालाना के गावों को दिया गया था।

"Kanauji Lal Kavanagh's guide, was Loter oppointed a tahsildar. He got a cost reward of Rs. 5000, and villages assessed at
837 rupees per aunum were settled on him."

S. N. Sen-Eighteen-Fifty-Seven-Page 228 & See official list of Persons rewarded.

सिकंदर बाग की निस्बत, सर कालिन कैम्पवेल के पास कैवनाग से मिली जानकारी यह थी कि :– ''सिकंदर बाग राजा मानसिंह के अधिकार मे है। वहाॅ पर उनके साथ दो तीन सौ रजवाड़े, पासी राजा गुरु बख्श के साथ अनगिनत पासी तिलंगें अपनी गनों के साथ मोर्चावन्दी किये हैं। २००० भयंकर क्रांतिकारी भी सिकंदर बाग में डटे हैं। ''

सिकंदर बाग में जमी ५३ हजार की विद्रोही सेना की ख़बर अंग्रेज कमांडर–इन–चीफ को लग गई थी। इसी के साथ सिकंदर बाग की रक्षक पासी महिला दल के साथ नवाबी जनानी फौजें अख्तरी, वादरी, नजीब भी पासी वीरांगनाओं के साथ आ मिली थी। कुछ अफ्रीकन औरतें जो वाजिद अली शाह के समय की शाही फौजों में भर्ती की गई थी, जिनको ''ब्लैक कैट '' कहा जाता था। अपनी घात में लगी हुयी थी। सिकंदरबाग को एक ओर गोमती नदी, दुसरी ओर से केनाल, पश्चिम की ओर से कांतिकारियों की घेराबंदी फौज और लोहे वाले पुल पर देशी सेनाएँ सुरक्षा प्रदान कर रही थी। सिकंदर बाग में विद्रोही सेना की बाहरी सुरक्षा पासी सरदार /तिलंगे तथा पासी महिलाएं प्रदान कर रही थीं।

जनरल आऊट्रम के द्वारा भेजे गये मानचित्रों और सूचनाओं के

आधार पर सर कैम्पवेल ने अपना पक्का निर्णय ले लिया था। १२नवम्बर १८५७ को आलमबाग कैम्प से आऊ ट्रम के प्रस्तावित मार्ग से सर कैम्पवेल नहर (हैदर कैनाल) के बाहर – २ शहर के पूर्वी भाग की ओर से किनारे–किनारे चला था। कैवनाग एक गुप्त संकेत आऊट्रम से लाया था। उस संकेत स्तम्भ को आलमबाग में गाड़ा गया था। उसी तरह का संकेत स्तम्भ रेजीडेन्सी में भी गाड़ा गया था।

Outram perposals were that the force should cross the Coual by or near bridge on the aliguwent of the Huzrat gung road. attack the old infantry barrack and the Begum's Palace and them turn to the Secundra Bagh. But Sir Colin recomiotring that this route was held in great strength by the enemy. He resolved therefore to cross the canal further. north. near the rever bank towards the Motee Mahal. Where he expected Outram to sortie and meet him."

Lieutenant Geural M' Leod Innes
Lucknow and Oudh in the Meetiuy
Page-256.

१४ नवम्बर की सुबह जब रेजीडेंसी की ओर बढ रहे थे तो विद्रोहियों नें आगे नहीं बढ़ने दिया। प्रस्तावित मार्ग में थोडा परिवर्तन करके कैनाल के उत्तर की ओर बढ़ कर गोमती के नज़दीक पार किया जाय। वहाँ से मोती महल की ओर से आगे बढ़ा जाय यह भी आशा की गई थी कि वहाँ पर रेजीडेंसी की ओर से हैवलाक और आऊट्रम के धावे (हमले) भी शुरु हो जायेंगे। १४ नवम्बर शाम तक अंग्रेजी सेना दिलकुशा के बाग में पहुँच गई थी।

सर कालिन कैम्पवेल अन्दर ही अन्दर काफी परेशान था। क्योंकि जितनी सेना वह चाहता था वह नहीं मिल पायी थी। लखनऊ के आस पास के ज़िलों में क्रांति की ज्वाला जल रही थी। कैम्पवेल को साफ – २ दिखाई दे रहा था।

''आज़मगढ, गोरखपुर, शाहजहाँ पुर और कानपुर जो अवध के आस पास थे, अपने पूरे जोश पर थे। अवध की सेनाएं यत्र–तत्र से आकर नवाबगंज बाराबंकी में एकत्र हुईं। .... नवाबगंज स्वातंत्रय सेनाओं का पवित्र संगम क्षेत्र बन गया था।''

अमृत लाल नगर – गदर के फूल पृ० १९८

कैम्पवेल ने सेना को पूरी तरह से लैस करने बाद आगे बढने का आदेश दिया था। कैम्पवेल की व्यग्रता का पता उस समय अपनी बहिन को लिखे गये पत्र से मिल जाती है " कि उत्साह, में मेरी फौज शक्तिशाली तो है पर संख्या में बहुत कम है। लखनऊ में रसद ५ या ६ दिन की बची है।''

"My force is high and powerful in spirit and courage but our numbers are not so many as may be desirable. Our friends in Lucknow have food only for five or six days, and the effort must be made to save them at any cost."

He life of Colin Campvell, Lord Clyde by Lieutenant - Geveral Shad well, C.B. vol ii P.5

कैम्पवेल का आंशिक भय बे वजह नहीं था। क्योंकि विद्रोही सेना में भी कमियाँ थीं। रुपये पैसे का अभाव, योग्य और विश्वस्त सलाहकारों में पारस्परिक फूट, फौजी संगठन में खींचतान, शिया, सुन्नी समस्या, शहरी शासन में ढ़ील–ढ़ाल और प्रजा में भयजनित अस्थिरता, इन सबके साथ रेजीडेंसी व सिकंदर बाग की लड़ाई चल रही थी और जिसे चलाते रहना ही आन की बात थी। ऐसी विषम और निराशाजनक परिस्थिति में भी नित्य नये प्राण फूकने वाली पासी शक्ति का एक अपना अलग ही स्थान था। पासी तिलंगे कर्नल स्लीमन की ज्यादतियों को नहीं भूल पायें थे जिनसे वे बेघरबार हुए थे।

सर कालिन कैम्पवेल ने हर प्रकार से सोच विचार कर अपनी संतुष्टि कर लेने के उपरांत निश्चय कर लिया, कि गोमती नदी के दाहिने किनारे का खुला भाग सेना के आगे बढ़ने के लिए बड़ा ही

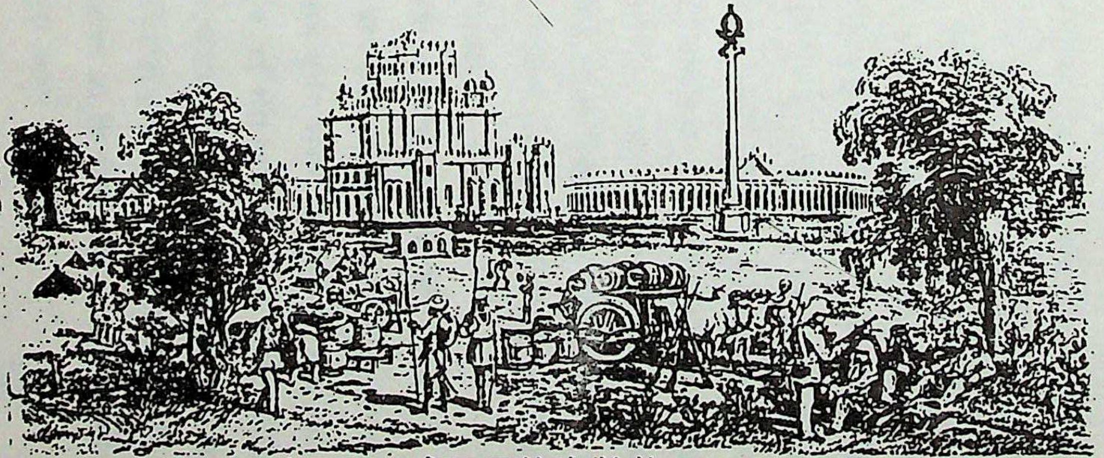

दिलकुशा, लामारटीनीयर में अंग्रेजी फौजें सन् १८५७

THE DIL KHOOSHA PALACE AND THE MARTINIEER

उपयुक्त है। १५ नवम्बर १८५७ को मार्टिन कोठी के ऊपरी मैदानी भाग में जहाँ पर संकेत सूचक खड़ा किया गया था। वहीं पर संध्या बेला में एक बहुत बड़ा अलाव, होली जैसा जलाया गया। यह जनरल आउट्रम और हैवलाक के लिये संकेत था कि सुबह यहाँ से अंग्रेजी रक्षक सेनाएरवाना होगी। साथ ही दिलकुशां की फौज गोमती नदी पार करके लोहे के पुल की ओर बढ़ेगी। संकेत मिलने पर आऊट्रम और हैवलाक को रेजीडेंसी से निकल कर मोती महल की ओर बढ़ना था।

१६ नवम्बर १८५७ की सुबह ८ बजे का नाश्ता खत्म करने के बाद अंग्रेजी सेनाए हरकत में आगई थी। हडसन के घुड़सवारों का दस्ता आगे – आगे और उनके पीछे होप ग्रांट तथा रसल की टुकिड़याँ पूरे सामान सहित जियामऊ के किनारे से होते हुए गोमती नदी के किनारे – किनारे कछारी भाग से छिपते हुए सिकंदर बाग की ओर बढ़ने लगी थीं।

५३वीं, ९३वीं बटालियन गोमती नदी के मोड़ से निकल कर सिकंदर बाग की ओर जैसे मुड़ी कि गोलियों की बौछार आ गई, किसी प्रकार बचते, बचाते दुर्गम रास्तों को पार करके अंग्रेजी रक्षक सेना सिकंदर बाग पहुँच गईं थी। ९३वें हाईलैंडर, ५३वीं बटालियन, सिख रेजीमेंट डाऊसन, वैलस, भी साथ में थे। सिकंदर बाग चारों ओर से चाक चौबंद था। विद्रोही सेना वहीं पर पड़ाव डाले हुए थी। सर कालिन कैम्पवेल यह जानता था, कि बिना सिकंदर बाग को खत्म किए हम रेजीडेंसी नहीं छुड़ा सकते हैं।

आठ

सिकन्दर बाग में विद्रोही सेना ने एक बड़ी अच्छी मोर्चा बन्दी कम्पनी की सेनाओं के लिए कर रक्खी थी। बाग के मैदान में भारी संख्या में क्रांन्तिकारी जमे हुए थे। वाजिद अली शाह के लखनऊ से जाने के पश्चात् से ही सिकंदरबाग पासी रक्षक महिलाओं के कब्ज़े में था। ये महिलाए और पासी तिलंगे ही इसकी सुरक्षा कर रहे थे। गदर शुरू होने के बाद से सिकंदरबाग विद्रोही सेनाओं और क्रॉन्तिकारियों का सुरक्षित स्थान बन गया था। इसके हर बुर्ज पर चौबीसों घण्टे पासी तिलंगे पहरेदारी करते थे। सभी विद्रोही पासी राजा एवं सरदार तथा अन्य राजा महाराजाओं के पड़ाव इसी में पड़े थे। बेगम हजरत महल की जनानी फौज़े अख्तरी, वादरी, नज़ीब भी यहीं आकर पासी रक्षक महिला दल के साथ मिल गई थी और संगठित होकर कम्पनी की सेना से लडने को मरदाने लिबास पहनकर तैयार थी। बेगम हजरत महल घूम घूम कर सैनिकों और सैनिक महिलाओं का उत्साह बढ़ाती रहती थी। इनकी बनाई महिला जासूस फौज़ पूरी तत्परता से लगी हुई क्षण-क्षण की खबरें सिकंदरबाग में दे रही थी। रसल ने बेगम हज़रत महल के बारे में लिखा है- ''वह अपने बादशाह पति से अच्छी मर्द थी।'' अंग्रेज सेनापतियों की आंखों में सिकंदरबाग की किलेबंदी बराबर खटक रही थी। सर कालिन कैम्पवेल को इसकी पूरी जानकारी अंगद तिवारी और मिसिर कन्नौजीलाल से पहले ही मिल चुकी थी (इनका वृतांत आगे के पन्नो में दिया गया है)

१६ नवम्बर १८५७ को दोपहर होते-होते हडसन के सैन्य,

घुडसवारों, होपग्रांट, रसल की फौजी टुकडियों और सिखों की रेजीमेंटो ने सिकंदर बाग को चारों ओर से घेर लिया था। कहना न होगा कम्पनी की सेनाओं के पहुंचते ही युद्ध शुरू हो गया था, जिसमें एक तरफ क्रांतिकारी सेनायें और दूसरी तरफ सिखों की सेनायें मोर्चा ले रही थीं।

सिकंदरबाग की ऊंची-ऊंची दीवारों को अंग्रेज लांघ नहीं पा रहे थे,इनकी सीढ़ियां भी छोटी थी। ऐसे में सिखों ने अच्छी वीरता दिखलाई थी,एक सिख सिपाही सबसे पहले गोलो की बौछार में सिकंदर बाग की दीवार पर चढ़ता दिखाई दिया था। सामने से उसकी छाती में एक गोली आकर लगी, वह वहीं पर ढेर हो गया। उसके बाद जनरल कूपर और जनरल लम्सडेन उसी दीवार पर चढते हुए मारे गए। अथक प्रयासों के बाद अन्तत: अपने साथियों की लाशों पर कूदते हुए सिख और अंग्रेज सिपाही, अधिकारी सिकंदरबाग के अन्दर पहुँच गए थे। उनके अंदर पहुँचने के तुरन्त बाद ही दूसरी ओर से ९३वें हाईलैण्डर ५३वीं बटालियन मेजर डाउसन, कैप्टन वैलेस आदि भी पहुंच गए थे। जी० वी०, मालेसन ने इंडियन म्यूटनी नामक पुस्तक के वाल्यूम ४ में पृ० १३२ में लिखा है

''इस बाड़े (सिकंदर बाग) पर कब्जा करने के लिए जो संग्राम हुआ वह अतयन्त रक्तमय था और जानों को हथेली पर रख कर लड़ा गया। क्रॉन्तिकारियों ने अपनी जानों पर खेल कर पूरी वीरता के साथ युद्ध किया। हमारी सेना रास्ता चीरती हुई अन्दर घुस आई तब भी संग्राम बन्द नहीं हुआ। एक-एक- कोने के लिए संग्राम होता रहा। न किसी ने

किसी से दया चाही और न किसी ने किसी पर दया की। अंत में जब आक्रमक सेना ने सिकंदरबाग पर कब्जा कर लिया, तो दो हजार से ऊपर क्रॉन्तिकारियों की लाशों के ढेर उनके चारों ओर थे। कहा जाता है कि जितनी सेना सिकंदरबाग की रक्षा के लिए नियत थी उसमें से केवल चार आदमी अपनी जगह छोडक़र निकल गए थे, किन्तु इन चार का बाग़ छोडक़र जाना भी संदिग्ध है।"

इस संग्राम में रक्षक पासी महिलाएं जनानी फौज़ो के साथ लड. रही थीं ये वीरागनायें अलग–अलग दल बनाकर अंग्रेजो को मार रही थीं। श्री सुन्दरलाल ने जार्ज विकर्स की सन् १८५८ ई० में छपी पुस्तक के आधार पर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "भारत में अंग्रेजी राज" में लिखा है, " अवध निवासियों की इस आजादी की लड़ाई में बेगम हज़रत महल के अधीन अवध की अनेक स्त्रियां तक मरदाना भेष पहनकर, हथियार बांधकर अपने अलग दल बनाकर लड. रही थीं। "

श्री सुरेन्द्रनाथ सेन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक अट्ठारह सौ सत्तावन में लिखा है कि :–

" कम प्रतिष्ठित पंक्तियों की स्त्रियों ने नगर की
रक्षा निमित अपने प्राण अर्पित कर दिये। "

श्री सेन ने अपनी इसी पुस्तक में गार्डन एलेक्जेंडर का एक उद्धरण भी दिया है कि "सिकंदरबाग की लडाई में अनेक हब्शिनैं भी लड. रही थी और उनकी मृत्यु हो जाने से पहले यह पता न चल सका कि वे औरतें थी।"

अमृतलाल नागर–गदर के फूल पृ० २१४

नवाबी काल की जनानी फौजे जो १८५७ मे लड़ी थी।

दिये गये उद्धरणों से उस समय की पासी महिला रक्षक दल का मेल खाता है। रक्षक पासी महिलाओं का रंग भी स्याह था। गार्डन एलेक्जेंडर ने स्याह रंग और बलिष्ठता के आधार पर हब्शिने शब्द का प्रयोग इन औरतों के लिए किया है। श्री सेन नीचे तबक़े की स्त्रियों की बात कही है। मैने पहले ही कहा है कि इस बाग़ की चौकीदारी पासी औरतों पर थी। समाज में पासियों को नीचा दर्जा प्राप्त था जो आज भी है। इन आधारों पर लड़ने वाली महिलाओं की फौज़ में पासी महिलाएँ अधिक संख्या में थीं यह बात निश्चित थी। जिन चारित्रक गुणों का बखान इतिहासकारों ने किया है, उनमें यही खरी उतरती हैं। अंग्रेजों को जाति का ज्ञान उस समय नहीं हो पाया, न ही नाम का पता चला। इनकी वीरता का वर्णन इनके नाम और जाति से करने पर भारतीय इतिहास के पन्नों की छवि में कोई चमक नहीं आती। अंग्रेज लेखकों ने जो कुछ लिखा उसे लघुता में दिया, जो उनके लिये पर्याप्त था। मेरी यह मान्यता हे कि नारी की उस महान शक्ति को दिखाना, नारी उत्थान और गौरव को बढ़ावा देना है। उस पासी महिला के कारनामों को जानकर प्रत्येक नारीसमाज में चेतना की लहर दौड़ जाती है, नारियां भी अपने में गौरव महसूस करती हैं। फोर्बिस मिचाईल ने अपने संस्मरणों में उस पासी वीरांगना का भरपूर वर्णन किया है, जिसको उसने ९३वीं बटालियन के एक अंग्रेज सिपाही से सुना था, जो प्रत्यक्षदर्शी था।

दोपहर बारह बजे तक आधी से ज्यादा सेना समाप्त हो गई थी। लड़ाई जोरों पर थी, जनानी फौजें अपना अलग दल बनाकर लड़ रही

थीं, जिनमें अधिकांशतः शहीद हो गई थीं। त्राहि-त्राहि मची हुई थी, निरन्तर लड़ाई से सिकंदरबाग एक आग का दरिया बना हुआ था, गोलाबारी से भीषण गर्मी उत्पन्न हो गयी थी। ५३वीं और ९३वीं बटालियन ने अपने सामने के सभी विद्रोहियों को समाप्त कर दिया था। एक क्षण की राहत में अंग्रेज सिपाही प्यास से तड़पने लगें थे। सिकंदरबाग में पानी के स्थान पर ख़ून ही खून नजर आ रहा था। बाग़ के बीच में एक बड़ा पीपल का पेड़ अंग्रेजो को लीलने के लिए खड़ा हुआ था। इस पेड़ के नीचे बड़े-बड़े मिट्टी के घड़े पानी से भरे रखे थे।

जब महिलाओं का दल लड़ते-लड़ते समाप्त हो रहा था, तो एक पासी महिला उनमें से आकर इस पेड़ पर चढ़ कर बैठ गई थी। पत्तेदार पतली डालियों से इसने अपने को छुपा लिया, यहीं से यह गोलियों और तीरों की बौछार अंग्रेज सैनिकों पर कर रही थी। इसके जब सारे तीर समाप्त हो गए तो अपनी कमर से पिस्तौल निकाल कर अपनी सुरक्षा हेतु अपने हाथ में ले लिया था। नीचे असंख्य कम्पनी के सिपाही लड़ रहे थे। ५३वीं और ९३वीं बटालियन के सिपाही पानी की तलाश में पेड़ के नीचे आए, तो पासी महिला ने ऊपर से गोलियाँ बरसाईं जब तक गोलियों की दिशा का ज्ञान होता, तब तक सारे अंग्रेज एक-एक गोली के शिकार हो चुके थे। उधर पासी महिला की पिस्तौल भी खाली हो गई थी।

दोपहरी ढल रही थी विद्रोही सेना का गोला बारूद समाप्त हो चला था अभी भी कुछ स्थानों पर बहादुरशाह ज़फ़र और वाजिद अली

शाह के झंडे लहरा रहे थे। हिन्दु सिपाहियों ने गंगाजली और मुसलमानों ने क़ुरआन उठाकर प्रतिज्ञा की थी कि हम सब, जब तक एक बूंद खून भी शरीर में रहेगा तब तक लडे.गें। सहस्त्र अंग्रेज मारे जा चुके थे। मेजर डाऊसन ने देखा कि अंग्रेज सिपाही पानी पीने में देरी कर रहे हैं तो उसी ओर बढ़ा,जाकर देखा कि सभी अंग्रेज सिपाही पेड. के नीचे मरे पड़े हैं। घोडे. से नीचे उतर कर उन अंग्रेज सैनिकों की लाशों का सूक्ष्म निरीक्षण किया तो पाया कि इनको ऊपर से मारा गया है, पर वहां कोई नही दिख रहा था। न तो इधर उधर ही। तब उसने कैप्टन वैलेस को आवाज दी कि देखो! इनको मारने वाला कौन है– तभी वैलेस चिल्लाया कि सर मैनें देख लिया है। अपनी रायफल में गोली भर, अन्दाज लगा कर गोली चलाई। आह की आवाज के साथ पीपल के पेड़ से एक सैनिक भेष का शरीर नीचे गिरा जो सीने में गोली लगने से मर चुका था।

डाऊसन ने जाकर देखा तो गोली लगने से, गिरने से, लाल जैकट का ऊपरी भाग खुल गया थां खुले भाग से तुरन्त पता चल गया कि वह वीर महिला थी। डाऊसन ने तुरन्त हैट उतार कर सलामी दी। बैलेस भी विहव्ल हो गया। रोते–रोते कहने लगा कि यदि मुझे यह पता होता कि यह महिला है तो मै कभी गोली नही चलाता भले ही कितने अंग्रेज मर जाते। यह उन्ही रक्षक पासी दल की महिला थी जिसके पास गोलियां समाप्त हो गई थीं यदि गोलियां होतीं तो डाऊसन वैलेस् भी जिन्दा न बचते। धन्य है वह पासी वीरांगना जिसने सिकंदरबाग की

लड़ाई में अपने जौहर दिखाये, और हंसते–हंसते सीने पर गोली खाई। पासी समाज अपनी इस पासी वीरागंना पर बार–बार न्योछावर होकर शत–शत प्रमाण करता है। यही नहीं इस पासी वीरागंना की वीरता, साहस से नारी जगत अपने को गौरान्वित महसूस करता है। यह सही है, वीरता, लिंग, जाति, समूह, व्यक्ति विशेष की बपौती नही है।

Garden Alexender Noted that among the slain of Sikander bayh .... their sez was ever suspected. Garden aloude op. cit p. 104

फर्बिस मिचाइल ने इसका उल्लेख इस प्रकार किया है –

As told by Sergeant William Forbes-Michell of tles 93rd High landers:-

"In the centre of the inner court of the Secunderbagh there was a large Peepul tree with a bushy top, round the foot of which were set a number of jars full of cool water. when the slaughter was almost over many of our men went under the tree for the sake of its shade, and to quench their burning thirst with a draught of the cool water from the jars. A number, however, lay dead under this tree, both of the 53rd and the

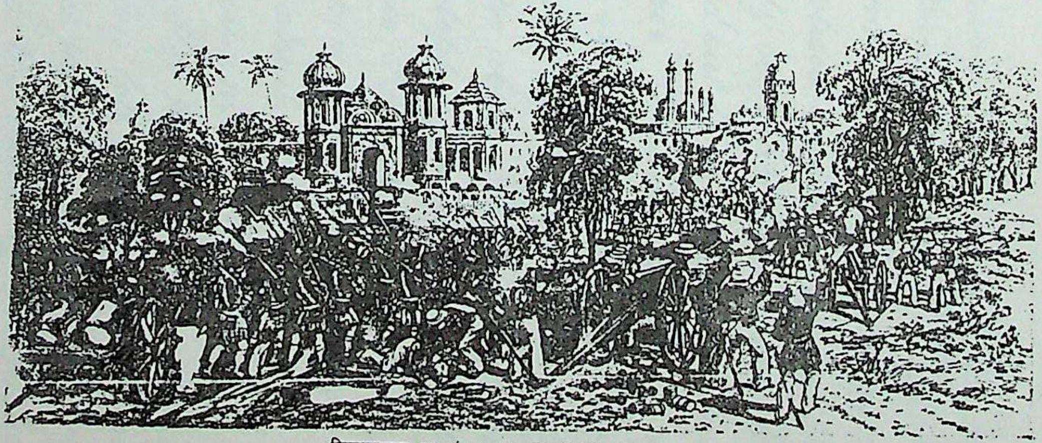

सिकन्दरबाग का संग्राम १६ नवम्बर सन् १८५७

93rd, and the many bodies laying in the particular spot attracted the notice of Captain Dowson, After having carefully examined the wounds, he noticed that in every case the men had evidently been shot from above, He there upon stepped out from beneath the tree, and called Quaker'' Wallace to looh up if he could see any one in the top of the tree, because all the dead under it had apparently been shot from the above. Wallaee had his rifle loaded and stepping back he care fully scanned the top tree, He almost immediately called out. I see him Sir! and cocoking his rifle he repeated aloud.

'I'll pay vows now to the Lord,
Before His people all".

He fred, and down fell a body, dressed in a tight-fitting red jacket and rose coloured silk trouser's, and the breast of the jacket bursting open with the fall, shwed that the wearer was a women, When the Wallace saw

that the person whome he shot was a woman, he brust in to tears, exclaning. If I had known if was a women, I would rather have died a thousund deaths than have harnmed her."

"Reminiscences of the great Mutuiny" by Willium Forbes. Mitechell. --- a women who perched on a large peepul tree in the court of Sikandar Bagh shot a number of British soldiers and was shot in her turn
Forbes Mitchell op cit pp 57- 58

१६ नवम्बर १८५७ को सिकन्दराबाग शब्दत रक्त की झील बना हुआ था। सिकंदरबाग के इस युद्ध का वर्णन तबस्सुम निज़ामी भारतीय ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक लखनऊ जनपद का राष्ट्रीय इतिहास में पृ० २७ और २८ पर इस प्रकार किया है।

''निश्चय पूर्वक कालिन कैम्पवेल को मोती महल आकर जनरल आउटरम और सर हेनरी हैवलाक से मिलना था परन्तु उसने मोती महल का मार्ग छोड़कर बेगम कोठी पर गोलियां बरसाई, उसके पश्चात १६ नवम्बर १८५७ को सिकंदरबाग पर आकमण किया। सिकंदरबाग के ऊपर

मुगल सम्राट बहादुर शाह ज़फ़र तथा नवाब वाजिद अली शाह के झंडे लहरा रहे थे। २ हजार विद्रोही सिपाही रिसालदार सैयद बरकत अहमद के नेतृत्व में एकत्रित थे यहाँ हिन्दु सिपाहियों ने गंगाजली और मुसलमानों ने क़ुरआन उठाकर प्रतिज्ञा की थी कि हम सब देश को स्वतंत्रता के लिए बलिदान हो जायेंगे पर रणक्षेत्र से पीछे नहीं हटेंगे। अतएव इन वीरों ने पूर्ण उत्साह के साथ अंग्रेजो से युद्ध किया और सहस्त्रों अंग्रेजी सैनिकों को काट कर रख दिया, परन्तु उनकी संख्या अत्यधिक थी। कालिन कैम्पवेल ने अपने तोपखाने को कुछ आगे बढ़ा दिया। इस प्रकार उसने चार बजे संध्या समय अपनी सेना द्वारा एक और भरपूर धावा किया। यद्यपि विद्रोही सेना ने उसका भी दृढ़ता के साथ मुक़ाबला किया परन्तु इस बीच उसके पास गोला बारुद समाप्त हो गया और कोई कुमुक भी उसके लिए न पहुँच सकी, इस कारण विद्रोहियों क़ा मोर्चा टूट गया तत्काल ही कालिन कैम्पवेल अपनी सेना द्वारा दीवार तोड कर सिकंदरबाग के भीतर प्रवेश करने में सफल हो गया। सिक़ंदरबाग के भीतर भी घमासान युद्ध हुआ परन्तु विद्रोही सेना विजयी न हो सकी और सूर्य डूबने से पूर्व ही उसका एक-एक सैनिक प्रतिज्ञानुसार इस मोर्चे पर बलिदान हो गया।''

१७ नवम्बर १८५७ को सिकंदरबाग के निकट शाहनज़फ कदम रसूल और मोतीमहल के बाग़ में जो युद्ध हुआ वह सिकंदरबाग से किसी प्रकार कम नहीं था। सुबह से जो लड़ाई शुरुहुई तो दोपहर तक चलती रही। बड़ी मुशकिल से सर कालिन कैम्पवेल मोतीमहल और खुर्शीद

मंज़िल (आज कल इसमें लड़कियों का स्कूल है) तथा चक्कर वाली कोठी पर आधिपत्य कर पाया था। तीन बजे सर कैम्पवेल रेजीडेन्सी पहुँच गया था। विद्रोही सेना ने अपनी वीरता दिखाई परन्तु हज़रतगंज और चौपड़ के अस्तबल में लगी तोपों को नही बढ़ा पाये थे। शाहनजफ़ और कदमरसूल की बारूद का पता अंग्रेजों को लगा, तो उसे उठवा लिया गया था। कदम रसूल की एक जगह की बारूद में नदी पार से हो रही गोलाबारी से आग लग गई थी जिसमें कदमरसूल की मस्जिद स्वाहा हो गयी। १७ नवम्बर १८५७ को तीनो जनरल आऊटरम और हैवलाक और सर कालिन कैम्पवेल आपस में मिले थे। १७ नवम्बर १८५७ की रात में क्रांतिकारियों ने रेजीडेन्सी पर एक जबरदस्त आक्रमण किया था, जिससे बेलीगारद की सेना शक्तिहीन हो गई थी।

''कालिन कैम्पवेल ने रात्रि को, अंधकार का लाभ उठाते हुए १३० फौज़ी अफसर, ७४० अंग्रेजी व ७०० हिन्दुस्तानी सिपाहियों १०५ नगर सेवक, २३० अंग्रेज औरते २६० बालक, ५० लामारटीनियर कालेज के छात्र अन्य ७०० असैनिक तथा उपस्थित राजबंदियों को जो २ माह २६ दिन के घेरे में थे, साथ लेकर सुरक्षित रूप से सिकंदरबाग व दिलकुशा मार्ग से लखनऊ की सीमा के बाहर निकल गया। ''

तबस्सुम निज़ामी भारतीय– लखनऊ जनपद.
का राष्ट्रीय इतिहास– पृ० २८–२९

कहना न होगा कि कालिन मैदान छोड़कर भाग गया था। युद्ध की दृष्टि से कालिन कैम्पवेल इसमें पराजित हो गया था। २४ घण्टों तक

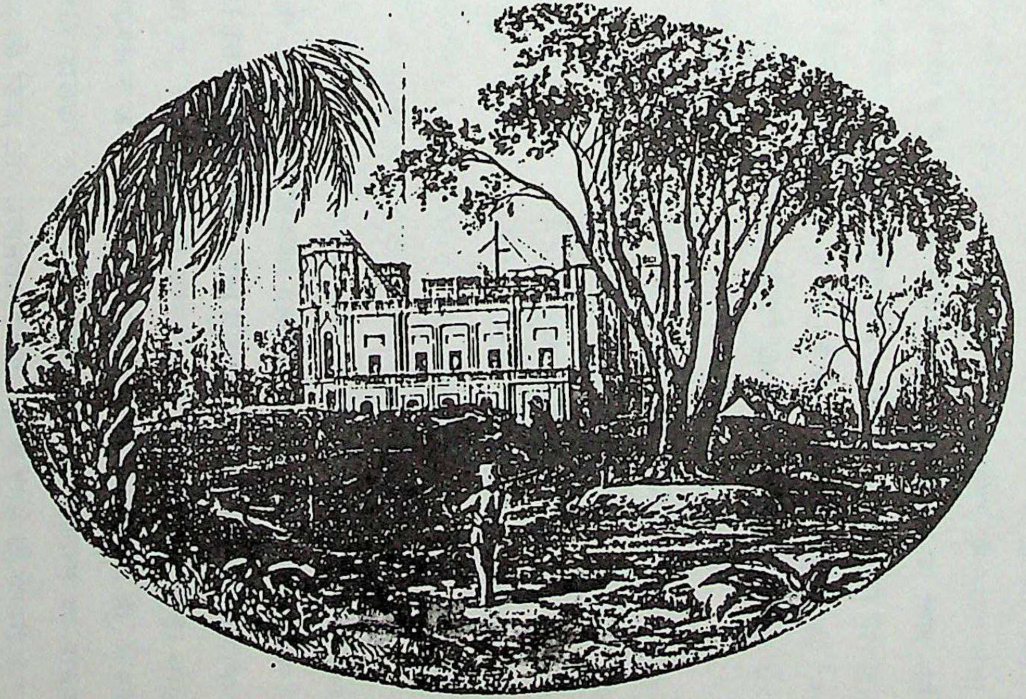

हैवलाक की कब्र, आलमबाग । पिकेट हाउस।

लगातार घमासान संग्राम होते रहे। २३ नवम्बर १८५७ तक लडाई जारी रही। नौ दिन की लडाई के बाद ही सर कालिन की रक्षक सेना और आऊटरम व हैवलाक की सेनाएं २३ नवम्बर १८५७ को मिल पाई थी। २४ नवम्बर १८५७ तक लड़ाई में ४९६ ब्रिटिश सेनाधिकारी मारे जा चुके थे। हेवलाक मृत्यु शैय्या पर पडे थे। २४ नवम्बर १८५७ को हेवलाक ने अपने प्राण त्यागे थे, उसको आलमबाग में आम के पेड़ के नीचे दफ़नाया गया था।

"He passed away on 24th November and lies last remains were interred under the mango tree an Alambagh not for from the city with which his country men will always associate his name."

S.n eightee fifty seven - page 229.

जब विद्रोहियों को यह पता चला कि बेलीगारद से अंग्रेज निकल गए है तो तुरन्त ही नारे लगाकर बेलीगारद पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। इस शुभ समाचार से सभी हर्षित हुए, लेकिन युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ था, क्योकि अंग्रेजी सेना ने अभी लखनऊ नही छोड़ा था। सर कैम्पवेल ने जलालाबाद कोट (मोहम्दी नगर में यह कोट थी) के निकट पड़ाव डालकर मोर्चेबंदी कर रखी थी। सर आऊटरम को सेनापति नियुक्त किया और लखनऊ शहर पर फिर से हमले की तैयारी शुरूकर दी थी। इसी समय कैम्पवेल को समाचार मिला कि नाना साहब के प्रसिद्ध

मराठा सेनापति तात्या टोपे ने कानपुर की अंग्रेजी सेना को हराकर फिर से कानपुर नगर पर कब्जा कर लिया। कैम्पवेल ने आउट्रम को लखनऊ के लिए छोड़ कर स्वयं फिर से कानपुर विजय करने के लिये चल दिया था।

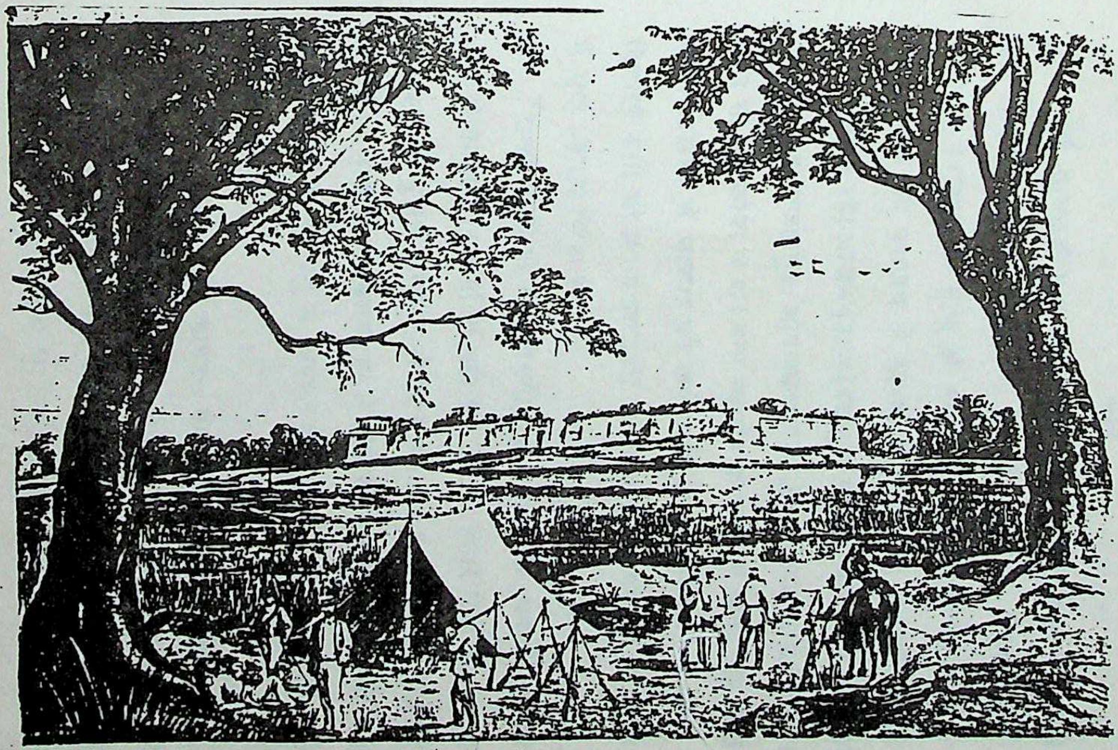

जलालाबाद JELLALABAD.

नौ

लखनऊके भाग्य का निर्णय १६ नवम्बर १८५७ को ही हो गया था। सिकंदरबाग की लड़ाई में कम्पनी की सेना विजयी हुयी थी। सेनापति हेवलाक की मृत्यु हो गयी थी। लखनऊ के स्वाधीनता-प्रेमी सिकंदरबाग की पराजय से हताश न होकर १५ जनवरी १८५८ तक बराबर लडते रहे। आजमगढ, गोरखपुर, गोण्डा, बाराबंकी, दरियाबाद, फैजाबाद, शॉहजहांपुर, और कानपुर आदि जो अवध के आस-पास थे, अभी भी पूरे जोश मे थे। बम्म महादेव के नारों में कमी नहीं आई थी। पासी तिलंगों में उत्साह की कमी नहीं आयी थी। हां एक चीज जरूर दिखाई देती थी वह बेतरतीबी। अमृत लाल नागर जी ने इसके बारे में एक इशारा किया है :-

"उम्दा घड़ी के बेशक़ीमती पुर्जे मौजूद हैं, पर वे सुनियोजित रूप से एकत्र और संगठित नहीं है......... हमारे देश की यह तस्वीर है। महाराज पुरूके समय से लेकर सन १८५७ ई० तक यही बात दिखाई देती है। रेजीडेन्सी पर बराबर हमले होते रहे। हमारे पासी जाति के पुरखे सुरंगे उडाने में बडे पटु थे, अक्सर बेलीगारद वालों को उनसे नुकसान पहुँचता रहा।"

अमृत लाल नागर- गदर के फूल पृष्ठ २१०

कैम्पबेल के जाने के बाद बेलीगारद के साथ-साथ विप्लवकारियों ने दिलकुशां को भी अपने कब्जे में कर लिया था। आलमबाग में जनरल आउट्रम मोर्चा लगाए हुये था पर अंग्रेजी सेनाएं शान्त थीं, परन्तु

नौ

लखनऊके भाग्य का निर्णय १६ नवम्बर १८५७ को ही हो गया था। सिकंदरबाग की लड़ाई में कम्पनी की सेना विजयी हुयी थी। सेनापति हेवलाक की मृत्यु हो गयी थी। लखनऊके स्वाधीनता–प्रेमी सिकंदरबाग की पराजय से हताश न होकर १५ जनवरी १८५८ तक बराबर लडते रहे। आजमगढ़, गोरखपुर, गोण्डा, बाराबंकी, दरियाबाद, फैजाबाद, शॉहजहांपुर, और कानपुर आदि जो अवध के आस–पास थे, अभी भी पूरे जोश मे थे। बम्म महादेव के नारों में कमी नहीं आई थी। पासी तिलंगों में उत्साह की कमी नहीं आयी थी। हां एक चीज जरूर दिखाई देती थी वह बेतरतीबी। अमृत लाल नागर जी ने इसके बारे में एक इशारा किया है :–

"उम्दा घड़ी के बेशक़ीमती पुर्ज़े मौजूद हैं, पर वे सुनियोजित रूप से एकत्र और संगठित नहीं है......... हमारे देश की यह तस्वीर है। महाराज पुरूके समय से लेकर सन १८५७ ई० तक यही बात दिखाई देती है। रेजीडेन्सी पर बराबर हमले होते रहे। हमारे पासी जाति के पुरखे सुरंगे उडाने में बडे पटु थे, अक्सर बेलीगारद वालों को उनसे नुकसान पहुँचता रहा।"

अमृत लाल नागर– गदर के फूल पृष्ठ २१०

कैम्पबेल के जाने के बाद बेलीगारद के साथ–साथ विप्लवकारियों ने दिलकुशा को भी अपने कब्जे में कर लिया था। आलमबाग में जनरल आउट्रम मोर्चा लगाए हुये था पर अंग्रेजी सेनाएं शान्त थीं, परन्तु

विप्लवकारियों ने उन्हे शान्त न बैठने दिया था। क्रॉन्तिकारी फौज़े अंग्रेजो से युद्ध करके बाहर निकालने पर तुली थी। २२ दिसम्बर १८५७ को ४००० पैदल चार सौ सवार और चार तोपें मौजा गेली व भदरूख के रास्ते से मौजा बिलनी की ओर गई थी, अंग्रेजी सेना के यातायात को रोकने के लिए इसके पहुँचने के दो दिन पहले ही गुप्तचरों ने इसकी सूचना जनरल आउटरम को दे दी थी। तत्काल ही क्रांतिकारियों की इस योजना को असफल कर दिया था। चार गनों को गवांकर विप्लवकारी दिलकुशा लौट आए थे।

"The rebels were at first depressed by the severe blows dealt them; but when no decisive action was taken by the British, their spirits revived. They began at once to threaten Outran. On the 22 December they seut a force to 'Guili' a village beyond Dilkusha. Here they were attached and routed by a small force under brigadier Stokes, who captured their four guns."
-Lucknow Gazatteer- Vol XXX Vii- page 161

११ जनवरी सन् १८५८ तक वातावरण शान्त रहा किन्तु दोनों ओर की सेनायें आगामी युद्ध की तैयारियां करती रही। १२ जनवरी १८५८ को प्रातः काल ३०,००० क्रांतिकारियों ने आलमबाग पर चढ़ाई कर

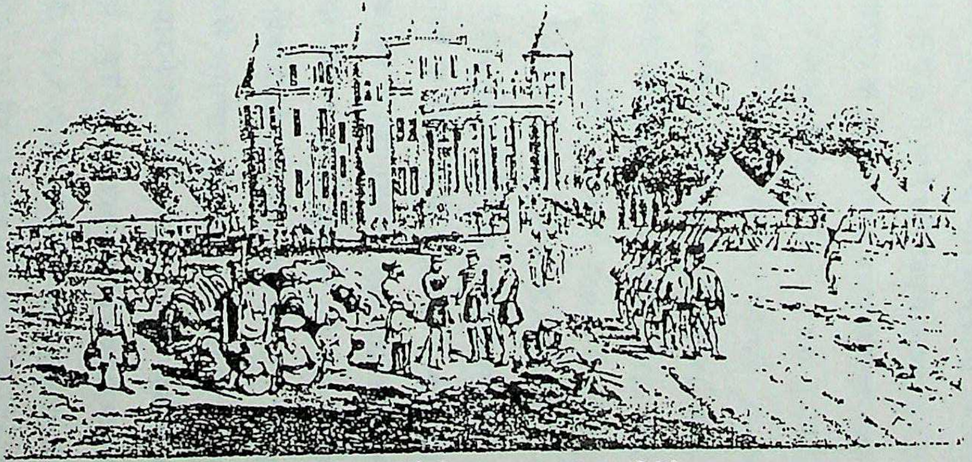

टिलकुशा में हैवलाक की फौजें सन् 1857

दी, जहाँ पर आउटरम की फौजे लगी थी। आमने–सामने की लडाई हुई। अंग्रेजों की विशाल सेना के सामने क्राँतिकारी ज्यादा देर तक नहीं टिक पाये थे। भारी नुकसान के साथ वापस शहर लौटना पड़ा था।

''12th January 1858, some 30,000 of the enemy attacked the whole front and flanks of Ourtams extened position. They failed in their attempt, how ever, and were driven back with great loss to the city'' Lucknow Gazatteer Vol-XXXVii P- 161

१४ जनवरी १८५८ को बडे़ ही गुप्त रूप से कानपुर से आने वाली रसद पर छापा मारने के लिए पासी तिलंगों ने मोर्चा लगाया, पर जासूसों ने खबर कर दी थीं। आउटरम ने एक बडी फौज 'बनी' की ओर रवाना कर दिया था, जिसने पासी तिलंगों को मार भगाया था। १५ फरवरी १८५८ को विद्रोही सेना ने फिर अंग्रेजी मोर्चे पर धावा बोला था। ९०वीं रेजीमेंट से, घमासान युद्ध हुआ। अंग्रेजी तोपे गरजने लगी, नये हथियारों के मुकाबले विद्रोहियों की तोड़ेदार बन्दूके काम न आयी, इसमें भी अंग्रेजों के मुकाबिले शिकस्त का सामना करना पडा था। १६ फरवरी व २८ फरवरी १८५८ के आकमणों से अंग्रेजी सेना के छक्के छूट गये पर कान्तिकारियों को विजय हासिल न हो पायी थी। लखनऊ की भूमि पर २५ फरवरी १८५८ ई० को अंग्रेजों से अन्तिम युद्ध मूसाबाग के मोर्चे पर हुआ था। कर्नल मालेसन का कथन है कि –

''इस मोर्चे पर प्रथम बार बेगम हज़रत महल हाथी पर सवार होकर रण क्षेत्र में आयी और अपनी शाही सेना का साहस बढ़ाती रहीं। जब अंग्रेजी सिपाहियों ने देशी सिपाहियों से तोपे छीनने की पेशकश करने लगे तो बेगम ने उन्हे बडी दृढ़ता के साथ रोका था। तोपों को अपने अधिपत्य से नही निकलने दिया। परन्तु बाद में अंग्रेजों ने तोपें छीन ही लीं। उन्हे पुनः प्राप्त करने के लिए सहस्त्रों विद्रोही सिपाहियों ने जान की बाजी लगा दी और बढ़-बढ़ कर आक्रमण करते रहे। पचासों तो तोपों पर चढ़-चढ़ कर बलि हो गए। अंत में यहाँ भी अंग्रेज ही विजयी रहे।''

तबस्सुम निज़ामी भारतीय-लखनऊ जनपद का राष्ट्रीय इतिहास
पृष्ठ ३३ व ३४

क्राँतिकारियों के पास गोला बारूद और नये हथियारों की भारी कमी और इनके विरुद्ध भारतीय मुख़बिरों की तत्परता के कारण बार-बार शिकस्त मिल रही थी। कैम्पवेल २८ फरवरी १८५८ को दोबारा बन्थरा आ गया था। सर कालिन कैम्पवेल को ३० दिसम्बर १८५७ को ही लार्ड कैनिंग का पत्र मिल चुका था, कि लखनऊपर किसी भी हालत में कब्जा करो। चाहे जितनी फौज लगें। सभी की निगाहें लगी हैं, लखनऊअवध की राजधानी है कोई फौजी सिपाहियों के लिये जमघट का स्थान नहीं। इसी पत्र के बाद सर कालिन कैम्पवेल ने पूरी शक्ति एकत्र करके दोबारा लखनऊ में अंग्रेजी हुकूमत स्थापित करने आया था। लार्ड कैनिंग के पत्र में लिखा था कि:-

"On the 30th Dec 1857 Lord Canning worte that he had given the most anxious attention to the memorandum but he still hold the opinion that communications being made safe, oudh should be taken in hand with the least delay possible. He however. added, "that it should not be considerd as a necessary consequence of outering Oudh that the whole province should be subjugated. It it were possible to collect a force equal to taking Lucknow and holding it without attampting more for the present, it should be done. Paradoxical as it may appear, I think it of more importance to re-establish our power in the centre and capital of Oudh which has scarcely been in our possesion two years than to recover our older prossessions. Every eye in India is upon Oudh, as it was upon Delhi, Oudh is not only the rallying- place of the sepoys the place to which they all look and by the derings in which their own hope and prospect's rise or

fall but it reprenents a dynesly, there is a King of Oudh, seeking his own. Oudh and our dealing with it have been in every native's mind for the lost two years. The attention of all native chiefs is drawn to see whether or not we can retain hold of what we have taken".

G.W. Forrest. A History of the India Mutiny vol 2 p- 253-254

हमारे पाठक इसी के बाद से यह समझ गए होंगे कि लखनऊ को हर कीमत पर कम्पनी सरकार लेना चाहती थी। कमाडर–इन–चीफ को लखनऊ छोड़ने पर कितनी लानत–मलामत हुई होगी। सर–कालिन कैम्पवेल ने बहुत बडी विशाल सेना इकट्ठा की जो आउटरम के नेतृत्व में आलमबाग में प्रतीक्षा कर रही थी। उस समय लखनऊ शहर की आबादी लगभग ७ लाख थी। आउट्रम की १ लाख २० हजार की संगठित सेनायें १३० गनों के साथ आलमबाग और जलालाबाद के किलों में मौजूद थीं। दो मार्च को सर कालिन केम्पवेल ने पूरी तैयारी के साथ पुनः लखनऊ विजय करने के लिए कूच का बिगुल बजा दिया था। इस कूच में तीन घुड़सवारों की टुकड़ियां और शैनन ब्रिगेड की चार गने थीं। दिलकुशा में बडी भयंकर गोलाबारी की गई। दो तोपें महमूदाबाग (आजकल का महमूदाबाद क्लब) में लगाई गई थी। इंजीनियर ब्रिगेड

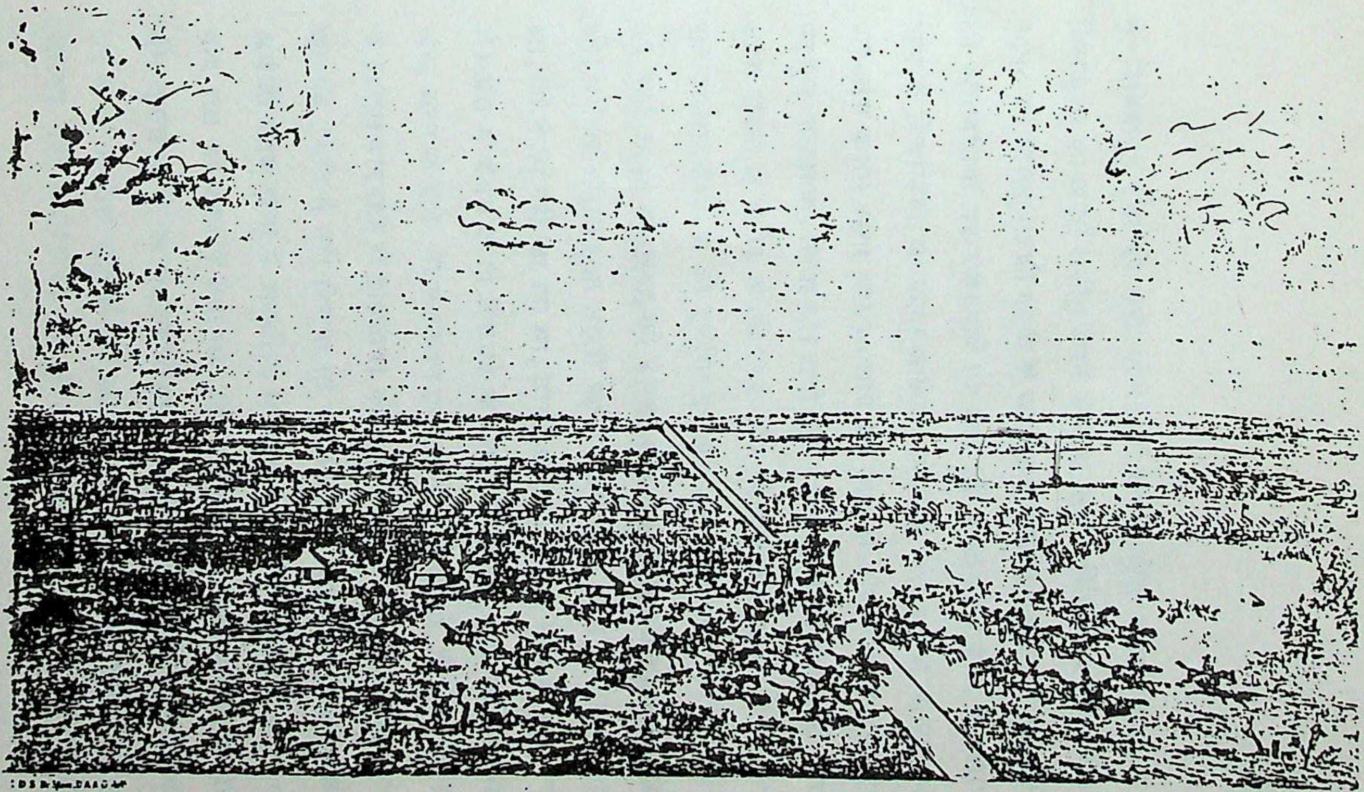

हैवलाक की अंग्रेजी सेना आलमबाग के पड़ाव में १८५७-५८

ने विबियापुर (मलेट्री डेरी फार्म) में अपना डेरा डाल दिया था। दिलकुशा को अपने अधीन करने के बाद, सर कालिन कैम्पवेल ९ मार्च १८५८ को दिलकुशा की कोठी के ऊपर छत में लगी दूरबीन से आउट्रम की गतिविधियों पर नजर रखे हुए था। वहीं से कुकरैल पुल, बादशाह बाग में विद्रोहियों की कारगुजारियों को देख कर, अपनी योजना में परिवर्तन करता रहता था। १० मार्च को दिन के २ बजे लामारटीनियर पर पुनः कब्जा कर लिया था। रातों रात बेगम कोठी को उड़ाने के लिए बैक्स हाऊस के करीब अपनी तोपे और गोलाबारूद पहुंचा दिया था। सर कालिन कैम्पवेल की दूरबीन इस काम में बडी मदद कर रही थी। ११ मार्च १८५८ की सुबह को बेगम कोठी पर गोलाबारी शुरू हो गई थी। भंयकर संग्राम हुआ लाशों का ढेर लग गया। हृदय विदारक दृश्य था, जो देखा नहीं जा रहा था, दोनों ओर से असंख्य सिपाही मारे गये थे। अंत में बेगम कोठी अंग्रेजों के कब्जे में आ गई, एक बड़ी कीमत अदा करने के बाद, मेजर हडसन एक वहशी दरिन्दा था, जिसने दिल्ली के अतिंम बादशाह के शहजादों का खून चुल्लू में भर के पिया था, यह कह कि ''यदि मै नहीं पियूगां तो मेरा सिर फट जायेगा।'' लखनऊ की अंग्रेजी रक्षक सेना में सम्मलित था। बेगम कोठी को कब्जे में करने के बाद रात को कैम्प में बैठा था, वहीं पर गोली की एक आवाज सुनाई दी, तुरन्त घोडे. पर चढक़र दौड़ा। स्टीवर्ड ने रोकने की कोशिश की पर न माना। पीछे स्टीवर्ड गये थे। आवाज का पता नहीं चला, तो वह लालच वश बेगमकोठी की ओर मुड. गया था। इस इरादे से कि

बेगम कोठी में जवाहरात भरे पडे. हैं। उन्हे अकेले ही समेट लिया जाय। बेगम कोठी सुनसान थी। अंदर के दरवाजे में दाखिल हो रहा था। वहाँ पर मौजूद दो क्राँतिकारियों को ललकारने पर एक क्राँतिकारी की गोली हडसन की छाती के आर पार हो गई थी। ९३वीं बटालियन के सारजेंट फोरविस मिचाइल दूर से सीने से निकले खून के फौव्हारे को देख कर सहम गये थे। पूरे कैम्प में यह बात बिजली की तरह फैल गयी थी, कि मेजर हडसन लूट करते हुये मारे गये। क्राँतिकारियों ने उस वहशी अंग्रेज दरिंदे का अंत कर दिया था।

"It was current in camp and the story has often been repeated that Hodson was killed in the act of looting."

Forty one year in India by Field Marshal Lord Robert K.G. vc. Vol. 1 Page 404

"Major Hodson lost his life by is own rashness,"

Reminiscence of the great Mutiy- Forbes Mitchell- p- 211

११ मार्च १८५८ से १४ मार्च १८५८ तक अंग्रेजो ने छोटा इमामबाड़ा, कैसरबाग पर कब्जा कर लिया था। १५ मार्च १८५८ को बिग्रेडियर सर होपग्रांट को एक सैन्य दस्ते के साथ सीतापुर की ओर

भेजा गया था। सर कालिन कैम्पवेल सेना को लेकर संण्डीला की ओर बढे थे। १६ मार्च १८५८ को आउटरम गोमती पार करके सर कालिन कैम्पवेल से मिलकर साथ ही रेजीडेन्सी की ओर मुड. गये थे। यहां पर अधिक संघर्ष नही करना पडा था। वीरान रेजीडेन्सी कब्जे में कर ली थी। यहीं पर खबर मिली कि गऊघाट में अवध के वजीर आला के मकान को क्रान्तिकारियों ने अपना अड्डा बना रखा है। फिर क्या था? १९ मार्च १८५८ को सुबह छः बजे आउट्रम सेना सहित पहुंचकर गोलीबारी शुरू कर दी थी। उसके बाद मूसाबाग की ओर चल पड़ा था। मूसाबाग में कई घण्टे लड़ाई होती रही। कैप्टन हैचिसन सरीखे कई अंग्रेज अधिकारी मारे गये। अंतोगत्वा मूसाबाग के विद्रोहियों को दबा कर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया था। अब कोई स्थान बाकी नही था, जहां पर अंग्रेजो का क़ब्जा न हुआ हो। मूसाबाग का युद्ध आखिरी था। अंग्रेज लखनऊ की घेरा बन्दी को दो वर्ष के सतत् प्रयास के बाद समाप्त कर पाये थे

लखनऊ पर अंग्रेजो का पुनः कब्जा हो गया था पर आस-पास के जिलों में क्रॉति की ज्योति अभी भी जल रही थी। न अंग्रेज चुप थे न ही अवध के क्रांतिकारी।

धधकती~हवायें

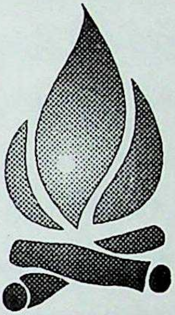

अवध विलीनीकरण के बाद १८५७ में
आजादी की जंग में पासी जाति का
अविस्मरणीय योगदान,
इतिहास के पन्नों की
जुबानी।

धधकती~हवायें

बलिष्ठ सौष्ठव शरीर ऊंचा कद चौडे. तगडे. कंधे ,चेहरे पर लम्बी दाढ़ी , में एक अनोखा प्रभावशाली व्यक्तित्व बरबस ही लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करता था। आंखों में झील की गहराई थी, नेतृत्व करने का जन्मान्तर अधिकार प्राप्त था। ऐसे उन्नत ललाट के सामने लोग स्वत: नत मस्तक होजाते थे। अंदर दुकानदार ने बडी शिष्टता से, उसको बैठने का आसन प्रदान किया। यह दुकान पुस्तकों की थी। पुस्तक विक्रेता एक अंग्रेजी अखबार का हवाला देते हुए कहने लगा कि ''इसमें अंग्रेजो के द्वारा शताब्दी समारोह करने की बात लिखी है, साथ–साथ यह भी लिखा हे कि इन लोगो ने (अंग्रेजो ने) सौ बरस पहले ही यह तयकर लिया था कि हिन्दुस्तान का राज्य मिलने के एक वर्ष के बाद जब यहां के लोग पूर्ण रूपेण ईसाइ धर्म को ग्रहण कर लेगें , तब हम समारोह मनाऐगें[१]। इसको कहते–कहते पुस्तक विक्रेता को आक्रोश आया, पर द्रवित स्वर में ही आवाज गले से भर्रा गयी। एक क्षण भर के लिए चुप हो गया, और पुन: कहना शुरु किया : ''अवध के ३५ हजार ज़मींदार उजाड़ दिए गए, मालगुजारी इतनी बढ़ा दी गयी कि वहां की जनता भूखों मर रही है। किसानों पर बेइंतेहा जुल्म ढाये जा रहे हैं, बड़े बडे घरानों के नर–नारी पेट भरने के लिए लखनऊ में भीख मांगते दिख रहे हैं। रेजीडेंट की मर्जी के अनुसार सिपाहियों को न्याय मिलता है। आम

१–वृन्दावन लाल वर्मा, १८५७ के अमर वीर पृ० ३५

लोगों को जबरन ईसाई बनाया जा रहा है। मंदिरों और मस्जिदों कोबरबाद किया जा रहा है।[२] आगे वह कुछ न बोल पाया केवल मूक होकर, बेबस आंखो से पूरी व्यथा को व्यक्त किया। आगन्तुक ने मुस्कुराते हुए कहा– ''हिन्दू मुसलमानों के धर्म व कर्म को बिगाड़ने में कोई कोर कसर नहीं उठाई जा रही है, सब तरह से हम लोगों को गिराने की कोशिश की जा रही है। सेना में सिपाहियों को अपना धर्म, ईमान छोड़ने पर उनको हवलदार और हवलदार को सूबेदार बना दिया जाता है। किसान कारीगर भूखों मर रहे हैं, जबरिया ज़मीने छीनकर गोरे लोग नील की खेती करते है, बोलने और बेगार न करने पर मारते पीटते है। धुनिये, बुनकर, जुलाहे, सुनार, और कुम्हार सभी बेकार हो गए है। ज़मीदारों से मनमाने ढंग से दुहरा/तीहरा टैक्स लिया जा रहा है।'' यह कहते–कहते आगन्तुक की मुस्कान चली गई, चेहरा लाल हो गया, भृकुटी तन गई, तैश में आकर कहाकि– ''अब सहा नहीं जाता है, आगरा अवध का सारा प्रदेश भी गोरों ने हड़प लिया, लखनऊनगरी रो रही हे, झांसी बिलख रही है।''

पुस्तक विकेता ने पुष्टि में कलकत्ते के एक अंग्रेजी दैनिक मे प्रकाशित समाचार की ओर इंगित किया। अखबार को देखते हुए आगन्तुक का चेहरा और लाल हो गया। आंखों से अंगारे बरसने लगे, आक्रोश में कहना शुरूकिया– ''क्या समझते है? हम लोग यूं ही सर झुका देंगे। हथियारों को प्रतिबंधित करके कम्पनी सरकार यहसोचतीहै

२–जान पियम्बल, राज, इंडियन म्यूटिनी एण्ड किंगडम आफ अवध पृ० १६७

कि हम लोग हाथ पैर नहीं हिला सकतें हैं। उठकर खडे. नहीं हो सकेंगे। जब तक दम में दम है, छाती फुलाकर संघर्ष करेंगे। मर जायेंगे तब भी पीढ़ियां लड़ती रहेंगी। सभी छोटे बड़े और सेना के सिपाही तक इस हवा से लहरा उठें हैं, केवल मौके की तलाश है '' बीच में ही पुस्तक विकेता ने इधर–उधर देख कर कहा कि– ''बिठूर के नाना साहब, ढोढूं पंत, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, लखनऊ की हजरत महल और दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र आदि के खत आ चुके हैं। सब मौके की बात जोह रहे हैं। चिंगारी लगने की देर है। बहावी जमात के लोग भी पूरी तैयारी कर चुके है।'' आगुन्तक कोई और नहीं, बिहार के कांतिकारी वीर शिरोमण राजा कुंवर सिंह थे, और पुस्तक विकेता शहीदेआजम़ पीर अली थे। काफी देर की मंत्रणा के बाद दोनों ने यह तय किया कि– आज रात बहावी जमात के मुखियों और काशी के पंडितों की एक गुप्त सभा हो जाये।[३]

समाज के हर तबके पर अंग्रेज कहर बरसा रहे थे, इस वजह से जनसाधारण भी तन, मन, धन से आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़ा था। उस समय की सामाजिक दशा का,आर्थिक दशा का, और अत्याचारों का चित्रण राही मासूम रज़ा ने अपनी नज़मों बड़ी साफगोई से किया है। उन्ही के शब्दों में :–[४]

३–हिस्ट्री आफ सिपाय वार वालयू०।।।, सप्ताहिक हिन्दुस्तान, गुप्त सभा– वृन्दावन लाल वर्मा

४–राही मासूम रजा– १८५७

लोगों को जबरन ईसाई बनाया जा रहा है। मंदिरों और मस्जिदों कोबरबाद किया जा रहा है।[2] आगे वह कुछ न बोल पाया केवल मूक होकर, बेबस आंखो से पूरी व्यथा को व्यक्त किया। आगन्तुक ने मुस्कुराते हुए कहा– ''हिन्दू मुसलमानों के धर्म व कर्म को बिगाड़ने में कोई कोर कसर नहीं उठाई जा रही है, सब तरह से हम लोगों को गिराने की कोशिश की जा रही है। सेना में सिपाहियों को अपना धर्म, ईमान छोड़ने पर उनको हवलदार और हवलदार को सूबेदार बना दिया जाता है। किसान कारीगर भूखों मर रहे हैं, जबरिया ज़मीने छीनकर गोरे लोग नील की खेती करते है, बोलने और बेगार न करने पर मारते पीटते है। धुनिये, बुनकर, जुलाहे, सुनार, और कुम्हार सभी बेकार हो गए है। ज़मीदारों से मनमाने ढंग से दुहरा/तीहरा टैक्स लिया जा रहा है।'' यह कहते–कहते आगन्तुक की मुस्कान चली गई, चेहरा लाल हो गया, भृकुटी तन गई, तैश में आकर कहाकि– ''अब सहा नहीं जाता है, आगरा अवध का सारा प्रदेश भी गोरों ने हड़प लिया, लखनऊनगरी रो रही हे, झांसी बिलख रही है।''

पुस्तक विकेता ने पुष्टि में कलकत्ते के एक अंग्रेजी दैनिक मे प्रकाशित समाचार की ओर इंगित किया। अखबार को देखते हुए आगन्तुक का चेहरा और लाल हो गया। आंखों से अंगारे बरसने लगे, आकोश में कहना शुरुकिया– ''क्या समझते है? हम लोग यूं ही सर झुका देंगे। हथियारों को प्रतिबंधित करके कम्पनी सरकार यहसोचतीहै

२–जान पियम्बल, राज, इंडियन म्यूटिनी एण्ड किंगडम आफ अवध पृ० १६७

कि हम लोग हाथ पैर नहीं हिला सकतें हैं। उठकर खडे. नहीं हो सकेंगे। जब तक दम में दम है, छाती फुलाकर संघर्ष करेंगे। मर जायेंगे तब भी पीढ़ियां लड़ती रहेंगी। सभी छोटे बड़े और सेना के सिपाही तक इस हवा से लहरा उठें हैं, केवल मौके की तलाश है '' बीच में ही पुस्तक विक्रेता ने इधर–उधर देख कर कहा कि– ''बिठूर के नाना साहब, ढोदूं पंत, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, लखनऊ की हजरत महल और दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र आदि के खत आ चुके हैं। सब मौके की बात जोह रहे हैं। चिंगारी लगने की देर है। बहावी जमात के लोग भी पूरी तैयारी कर चुके है।'' आगुन्तक कोई और नहीं, बिहार के क्रांतिकारी वीर शिरोमण राजा कुंवर सिंह थे, और पुस्तक विक्रेता शहीदेआजम़ पीर अली थे। काफी देर की मंत्रणा के बाद दोनों ने यह तय किया कि– आज रात बहावी जमात के मुखियों और काशी के पंडितों की एक गुप्त सभा हो जाये।[३]

समाज के हर तबके पर अंग्रेज कहर बरसा रहे थे, इस वजह से जनसाधारण भी तन, मन, धन से आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़ा था। उस समय की सामाजिक दशा का,आर्थिक दशा का, और अत्याचारों का चित्रण राही मासूम रज़ा ने अपनी नज़मों बड़ी साफगोई से किया है। उन्ही के शब्दों में :–[४]

३–हिस्ट्री आफ सिपाय वार वालयू०।।।, सप्ताहिक हिन्दुस्तान, गुप्त सभा– वृन्दावन लाल वर्मा

४–राही मासूम रजा– १८५७

भगवान को डसने पे तुले बैठे है मूज़ी
इनके लिए इंसान है किस खेत की मूली
दुनिया में नहीं बढ़ के फिरंगीसे सितमगर
घर वाले भी बेघर हैं जो बेघर थे वे दरदर

पिछले राजा जैसे थे अच्छे थे अंग्रेजों से
आंख निकल आई खेतों की सख्त लगान के फुंदों से
घर की दुनियां उजडी–२ उन नैनों का जादू बंद
एक लगान अदा करने में खुल–२ जाए बाज़ूबंद

अंग्रेज़ो की जेब में जा पहुंची अपनी बदहाली तक
गेहूं की बाली से लेकर कानों की हर बाली तक
साहब लोंगो से तो अच्छे निकले चोर उचक्के भी
खेतों की चुगली खाते है इन तारों के खम्भे भी

फ़ाक़ों के क़रीब आ गए गोरों की बदौलत
लानी ही पड़ेगी हमें अब कोई क़यामत
मैदान में जौ बेच के आना ही पड़ेगा
अंग्रेज़ को इस मुल्क से जाना ही पड़ेगा

रात्रि की गुप्त सभा में यह तय किया गया, कि कमल का फूल और रेटियां जगह–जगह घुमाकर संदेश भेजा जाय, क्योंकि उनका संकेत चिट्ठियों में भी था। कमल का फूल भारत की संस्कृति का प्रतीक है और रोटी भारत की जनता का प्रश्न है। इनको सुनियोजित ढंग से घुमाने का निर्णय लेकर सभा की कार्यवाही तुरन्त समाप्त कर दी गई थी। निर्णीत क्रान्ति संदेश को क्रांति के लिए तुरन्त चारों ओर फैलाया जाने लगा था मंदिरों, मस्जिदों और छावनियों में कमल के फूल पहुंचे। गांव–गांव में फूल और रोटी पहुंची, चारों ओर लोगों के कानों में फ़ूंका जा रहा था, कि हम अपने प्राणों को धर्म–ईमान और भारत की संस्कृति के लिए न्योछावर कर देंगे। देश को गुलामी से आजाद करवा कर दम लेंगे। इंग्लैंड की पार्लियामेंट में भारत को ईसायीकरण करने के निर्णय को सुनाया जाने लगा था। सन् १८५७ में ही ईस्ट इंडिया कम्पनी के चेयरमैन मैगल्स ने हाउस आफ कामन में यह कहा था कि:– ''परमात्मा ने हिन्दुस्तान का विशाल साम्राज्य इंग्लिस्तान को सौंपा है इसलिए, ताकि हिन्दुस्तान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ईसा मसीह का विजयी झंडा फहराने लगे। हममें से हर एक को अपनी पूरी शक्ति इस काम में लगा देनी चाहिए, ताकि भारत को ईसाई बना लेने के महान काम में देश भर के अन्दर कहीं पर किसी कारण ज़रा सी ढील न आने पाए।[५]

५- "Provided once has entrusted the extensiveempire of Hindustan to England

क्रांति की बारूद में चिंगारी पड़ गई थी, जगह–जगह विस्फोट होने शुरूहो गए थे। हवायें धधकने लगीं।

पहली जुलाई १८५७

बेली गारद (रेजीडेन्सी) की दूसरी मंजिल के उत्तरी पूर्वी भाग के एक कमरे में सर हेनरी लारेंस अपना मोर्चा जमाये बैठे थे।[६] अपनी मातृ भूमि को आज़ाद कराने के लिये बेलीगारद के चारों ओर अवध के वीर सामन्तों राजाओं ने अपने–२ रणबाकुरों को लेकर घेरा डाले हुए थे। रेजीडेन्सी पर चारों ओर से गोलियों की बौछार के कारण अंग्रेजो में डर व्याप्त हो गया था। मुख्य रूप से यही उत्तरी पूर्वी भाग बड़ा महत्वपूर्ण एवं अधिक गोलाबारी का केन्द्र था। गोलियाँ कमरे के भीतर प्रवेश करने लगीं। ऐसे समय में सर हेनरी लारेंस ने कमरा छोड़

---

order that the banner of christ should moretruumphant from one end India to the other. Every one must exert all his strength that there may be no dilatoriness on any account in continuing in the country the grand work of making all India Christian."

Mr. Mangles Chairman of the Directors of the East India Company, in the House of Common 1857, 26-668/80.

६- *''Oudh was annexed in Feb. 1 856 ,it*

देने को कहा। या यूँ कहे कि मोर्चा हटा लने का हुक्म दिया[७] २ जुलाई की प्रात: ९ बजे कैप्टन हडगिल ने बताया की सर हनेरी लारेंस घायलावस्था में डा० कैयरिर के घर में उत्तरी बरामदें में पड़े हैं। सर हेनरी ने घायलावस्था में हथियारों एवं औरतों को बचाने को कहा था। चार जुलाई को प्रात: तक वह जीवित रहे। अवध की फौजे घेरा डाले पडी थी उनके साथ आजादी के दीवानों एवं तालुकेदारों की फौजे आकर मिल गयी थी। मुख्य रूप से जो वीर सैनिक अंग्रेजों से लड़ने के लिये आये वे साहसी थे, उनके तीर कमानों की लड़ाई से अंग्रेज बहुत

---

was not until March 1857 that Sir Henry Lawrence was called upen to assume the office of Chief Commissioner and to cenciliate the dis-affected elements by prompt attention to their genuine grievances. Sir Henry was not in the good books of Lord Dalhousie. 1857- Surendra Nath Sen page No. 179.

७ " On the Ist. of July, an 8 inch Shell had entered it and burst without doing injury to any one. Sir Henry had then been entreated toabondowth room.

Freedom Struggle in U.P. Volume -II page No190.

डरते थे। यही नहीं अंग्रेजों ने अपनी रिपोर्ट में मुख्यरूप से पासियों का वर्णन किया है।[८] पासी राजा गुरबख्श सिंह के अवध फौजों के साथ मिल जाने एवं उनका नेतृत्व करने से बड़े चिंतित हो गये थे।[९] अंग्रेजों को अब चारों ओर शेर ही शेर दिखायी देने लगे थे। यही नहीं बेलीगारद के घेरा डालने में राजा नवाब अली खान महमूदाबाद भी थे बाद में मलिहाबाद के तअल्लुक़ेदार आफ़रीदी भी आ मिले थे। पासियों को

---

८ व ९- *By this time it had becomeknown that some of the native Taleeqdars had joined our besigers, with their fellowers These later were chiefly pasies, whose predatory habits have been already described and who were usually armed with sword and bow and arrows or matchlock. We learnt the name of two Taloogdars who had thus joined our enemies, and who were Raja Goor Buksh Singh of Ram Naggar-Dhumeyree and Raja Nawab Aly Khan of Mehmudabad. The Afreedies of Malihabad had also come in.*

Freedom Struggle in U.P. velume II *Page No. 192.*

अंग्रेजों ने यहां की मूल जाति माना है उनके अस्तित्व को बड़ा महत्व दिया है तथा वीरोचित माना है। पर वाह रे भारत भूमि! यहॅा जो–जो विदेशी आये, लूट खसोट की, छल किया यहॅा की भोली–भाली जनता के साथ विश्वासघात किया। जब यहॅा के लोग उनके खिलाफ आवाज़ उठाने लगते तो उन्हे दुश्मन व देश द्रोही क़रार दिया गया। मातृभूमि की रक्षार्थ एक साथ मिलकर खड़े हुये लोगों को बदमाश, लुटेरे, हत्यारे, देश द्रोही आदि की संज्ञा से विभूषित किया गया। जबकि हमारे देश के दुश्मन, लुटेरे प्रमादी, मुफ़्तख़ोरे आदि स्वयं विदेशी ही थे। कया ये हास्यापद नहीं है? कि यहॅा के मूल निवासी दुश्मन हो गये। और विदेशी यहॅा के मूल निवासी हो गये । यह भी हमारी शस्य श्यामला भारत भूमि की विशेषता है कि विदेशियों को विशाल हृदयता से अपना तो लेती है और यदि वे अपनी सीमाओं के बाहर जाने लगते हैं तो फेंक भी देती है। इतिहास इसका साक्षी है अपनी पूर्णता लिये आज भी गौरान्वित है और रहेगी। धान्य है भारत भूमि।

जहानी हाऊस:–

अंग्रेज़ों को यह ज्ञात हुआ कि जहानी हाऊस ही आंदोलनकारियों का गढ़ है उसको कब्ज़े में करके वहां पर तहस नहस किया जाये, ताकि पूरी क्रांति का एक भाग दब जाये। इसी ख़्याल से ७ जुलाई को जहानी हाऊस पर अंग्रेजों ने धावा बोला और उसे चारों ओर से घेर लिया। इस अंग्रेज़ी टुकड़ी में पचास यूरोपियन और २० शेख़, कैप्टन मैनसफील्ड के नेतृत्व में तथा कैप्टन फुल्टन, लेफ़्टीनेन्ट एडरसन, और

इंजीनियरों ने भाग लिया था।[१०] इंजीनियरों ने भवन के चारों ओर मुआयना किया, यह देख कर बडे असमंजस में पड़ गये कि कोई स्थान ऐसा नहीं था, जहाँ दीवार तोड़ कर अन्दर पहुँचा जा सके। ऐसे में वे बड़े ही निराश एवं–हतोत्साहित थे। बड़ी मेहनत के उपरान्त अंग्रेज़ इंजीनियरों ने बाहरी दीवार से संलग्न एक सूराख़ किया, वहीं से जहानी हाऊस के दरवाजे को उडाया। सर्व प्रथम कैप्टन लारेंस एच०एम० ने डरते हुए भवन के अन्दर प्रवेश किया।[११] अन्दर एक बहुत बड़ी संख्या

१०- That party consisted of 50 Eurepeans and 26 Seikhs under command of Captain Mansfield 32nd. Foot. Captain Fultan and Lieutenant Anderson Engineers accompanied the sortie.

Freedom Struggle in U.P. Vol. II page 192.

११ व १२ - Captain Lawrence H.M. 32nd. was the first to enter the building, which was found filled with the enemy, a large number of them being Passies. Some of whome were armed with bows and arrows. They did not attempt resistance. but fled immediately and about tewenty of them were killed. Our loss (was) trifling. Ibid. 192.

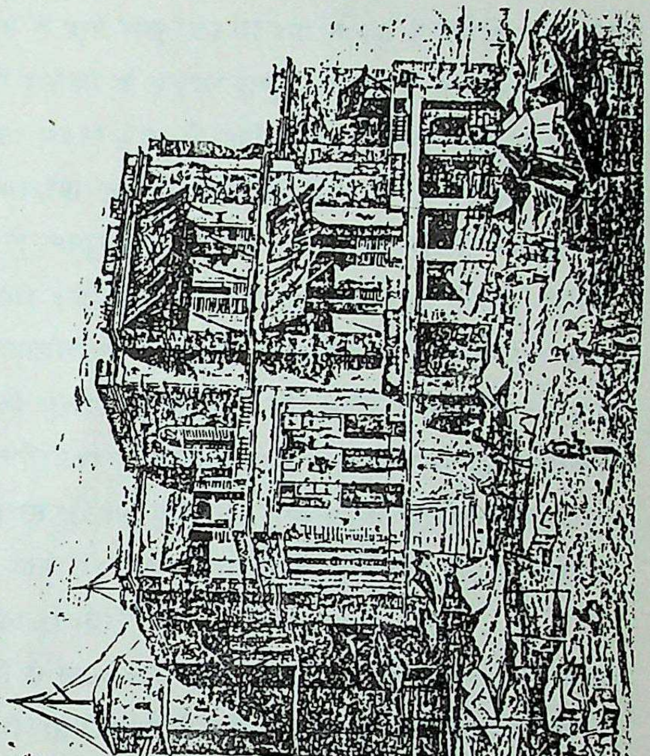

में देश भक्त पासी धर्नुधर अपने धनुष तीरों और तलवार के साथ भरे पड़े थे। अंग्रेज़ों ने इन्हे शत्रु कहा है। क्यों न कहें ? क्योंकि यह पासी धर्नुधर वीर तो अंग्रेजों के भयंकर शत्रु थे। पासियों का राज्य अंगेज़ों ने छीना, उनको घर से बेघर ही नहीं किया, बल्कि समाज में घृणित स्थान प्रदान करवाया। लुटेरा, देशद्रोही करार दिया। पर वाह रे पासी वीर जो अपनी मातृभूमि की रक्षा में सदैव लड़े। अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार न की, भले ही निम्न श्रेणी को प्राप्त हो गये, जंगलों में चले गये अत्याचारों को सहन करते रहे अपना सर कटवा लेना मंजूर किया। जीते जी गुलामी मंज़ूर नहीं की। अभेद्य भवन में अचानक आक्रमण से विचलित होना स्वाभाविक था। लेकिन अपनी युद्ध कुशलता से अपने को प्रथम सुरक्षित करते हुये गुप्त रास्तों से बाहर निकल गये क्योंकि इनको आगे लड़ना था। फिर भी २० पासी वीर इस आजादी की लड़ाई में शहीद होगये।[१२]

घेराबंदी के समय बेलीगारद (रेजीडेन्सी) में अंग्रेज सैनिक एवं उनके परिवार थे। तीन महीने से रेजीडेंसी को घेरे हुये अवध की फौजें एवं मूल ताल्लुकेदारों की टुकड़ियां जमी हुयी थीं। अंग्रेज अंदर ही अंदर बिलबिला रहे थे, बाहरी मदद का कोई आसरा नहीं रह गया था:- क्योंकि ''३० मई १८५७ ई० को कम्पनी की ७१वीं नम्बर की पलटनों नें विद्रोह किया था। १० जून को मेरठ में क्रांतिकारियों का अधिकार

१२–इसके लिये पृष्ठ ९४ का ११ देखें।

हो गया था। ३१ मई को बरेली में क्रांति हो गई थी। २८ जून को कानपुर स्वतंत्र हो गया था। २९ जून को चिनहट (लखनऊ) पर हमला करके ३० जून को विजय प्राप्त करके, लखनऊ पर अक्रमण कर दिया था।[13] इसी बीच में बिरजिस कदर का राज्याभिषेक क्रांतिकारियों ने किया था।[14] लखनऊ के आसपास क्रांतिकारियों एवं अवध की फौजों ने अपना अधिकार जमा लिया था। रेजीडेन्सी के चारों ओर क्रांति की तीव्र ज्वाला धधकती हुयी निरंतर आगे की ओर बढ़ रही थी।

रेजीडेंसी का बाहरी सम्बंध बिल्कुल टूट गया था, बाहरी मदद का पहुँचना असम्भव ही नहीं नामुमकिन था। ऐसी घेराबंदी, जिससे रेजीडेन्सी में घिरे सभी अंग्रेज मृतप्राय: से हो गये थे। अपने आखिरी क्षणों को गिन रहे थे बाहरी संचार व्यवस्था ठप हो गयी थी। अंग्रेज अधिकारियों के सामने सबसे चुनौती भरा अत्यंत आवश्यक कार्य यह था कि संचार व्यवस्था को पुन: अति सक्षमता के साथ पुनर्गठित किया

---

१३ व १४– अवध की लूट–अनु०–राजेन्द्र पाण्डेय, फ्रीडमस्ट्रेगल इन यू०पी०

On the 6th. August the besieger exultingly announced to their enemies the coronation of their King. "We have crowned our King." they said "The rule of the Feringhee is over, and we' ll soon be in your Bailey Guard."

1857 S.N.Sen-Page 209.

जाये।[१५] छद्मवेशी के रूप में मेजर गाल इस कार्य के लिये इलाहाबाद को गये, पर अवध के कुशल सेनानियों की नज़रों से न बच पाये, उन्हें समाप्त करके अंग्रेजों को एक चुनौती दे दी। सतर्कता विभाग के विभागाध्यक्ष गाबिन्स (मेजर गाल के खत्म हो जाने के बाद बनाया गया था) के पास काफी संख्या में वफादार संदेशवाहक थे।[१६] ये शायद हिन्दुस्तानी गद्दार ही रहे होंगे।

क्रांतिकारियों की घेराबन्दी के अन्दर पहुँचना ही कठिन था, और यदि पहुँच गया तो निकलना कठिन था। गतिविधियों की खबर किसी प्रकार भी नहीं पहुँच सकती थी और रेजीडेंसी से कोई सन्देश बाहर नहीं भेजा जा सकता था। ऐसे में अयोधन सिंह को अंग्रेजों ने संदेश देकर भेजा, जो पहुँचा तो, लेकिन उत्तर न ला सका।[१७]

१५, १६ व १७– *With the beginning of the siege the reorganisation of the Intelligence Department became doubly necessary because communication with the world outside had been completely cut-off. Major Gall had volunteered to go to Allahabad in disguise but he was deducted and killed. Gubbeis was in charge of the Intelligence Department and he had at his disposal*

अंगद तिवारी प्रधान जासूस पेंशन याफ्ता, और मिसिर कनौजी लाल मुफसिल कोर्ट का साधारण कर्मचारी था।[१८] ये दोनों अंग्रेजो के लिये जासूसी का कार्य करते थे। रेजीडेन्सी की घेराबन्दी में इन दोनों ने जिस असाधारण साहस के द्वारा बेलीगारद में घिरे अंग्रेजों का संदेश कानपुर सितम्बर के आखिरी महीने में हैवलाक के पास पहुँचाया था,

---

many trust worthy messangers. Audhan Singh, a sepoy of the Ist. Oudh Irregular Infantary, safely delivered a dispatch entrusted to him, but he could not bring a reply.

1857- S.N. Sen Page 195

१८. *The Master spies or Lucknow were Angad Tewari and Missar Kanauji Lal. Angad was a pensioned sepoy and Kanauji Lal a minor employee of a Mofassil Court. Both of them gave evidence of uncommon daring end enterprise and established Communication between the besieged garrison end the relieving armies.*

1857 S.N. Sen Page No.195.

वह काबिले तारीफ़ था। बेलीगारद की घेराबन्दी का यह तीसरा महीना चल रहा था और करीब–करीब क्रांतिकारियों का कब्जा होने ही वाला था। संदेश के मिलते ही हैवलाक ने लखनऊमें मदद के लिये पूरी शक्ति लगा दी थी। इसके पूर्व भी हैवलाक बेलीगारद में फंसी अंग्रेजी सेना और लोगों को छुड़ाने की कोशिश कर चुके थे। परन्तु क्रांतिकारियों से मुँह की खाने के बाद वापस लौटना पड़ा था। अब की बार पूरी स्थिति से अवगत होकर रेजीडेन्सी को खबर भिजवा कर, मदद करने चला था। श्री अंगद तिवारी ने गुप्त संदेशों को पहुँचा कर, मदद दिलवा कर लखनऊ पर पुन: अंग्रेजी शासन की नींव डलवा दी। इसका सम्पूर्ण श्रेय अंग्रेजो पर न जाकर हमारे कर्तव्यपारायण, वीरशिरोमणि जासूस श्री अंगद तिवारी और श्री कनौजीलाल मिसिर को ही जाता है। अंगद तिवारी को हर बार भारी इनाम मिलता था। २२ सितम्बर को जनरल आऊट्रम का खत लाया था, इस प्रकार आखिरी बार मे ५ हजार रूपयें ३ हजार रूपये जमा इनाम में मिला था। कनौजी लाल और डिप्टी कमिशनर का कलर्क थामस हेनरी कैबनाग हिन्दुस्तानी भेष बनाकर सर कालिन कैम्पवेल तक जोखिम उठाते हुये पहुँचे थे। इसकार्य पर पदो उन्नति, विक्टोरिया कास और २० हजार रू० के अतिरिक्त ८३७रू० सालाना आमदनी के गाँव दिये गये थे, कनौजीलाल मिसिर को इस तरह के भारी इनाम दिये गये थे। इनके परिवारों को नौकरियाँ दी गयी, ऐसे थे हमारे कलयुगी अंगद जो त्रेतायुग के अंगद से बिलकुल अलग थे।

सुरंगी विस्फोटों की लड़ाई :-

घेराबंदी के दौरान जुलाई और अगस्त के ही महीनों में सुरंगों के द्वारा विस्फोट किया गया था। इन विस्फोटों से अंग्रेज बहुत ही आतंकित हो गये थे। मुख्य रूप से अगस्त १८५७ का महीना सुरंगों का महीना था।[१९] सुरंगों को खोदने का कार्य और उनसे विस्फोट करना, यह अभियान क्राँतिकारी पासी ही करते थे। ये बड़े अच्छे सुरंगी थे।[२०] इस कला में ये कुशल ही नहीं बल्कि बहुत माहिर थे। चौकसी का यह आलम था, कि तिंनके हिलने की आवाज़ का पता अंग्रेजों को लगता था, साथ-साथ गोलियों की बौछार भी होने लगती थी। ऐसे समय में कठिन पहरे के बावजूद ये पासी बडे सुनियोजित ढंग से सुरंगों के खोदने का कार्य करते तथा विस्फोट कर देते थे। विस्फोटों की लड़ाई से अंग्रेज सैनिक बडे भयभीत होगये थे एवं भारी नुकसान से क्षत-विक्षत थे। कैप्टन फुलटन इसकी चौकसी करते हुये, बड़ा भयातुर था। रेजीडेन्सी को दूसरी बार बड़ा ही भयंकर ख़तरा पैदा हो गया था।[२१]

१९- *August was mainly month of mining.*

1857 S.N. Sen

२०,२१,२२ और २३ :-

The Pasis were excllent tunnellars and the ground favoured their operations. The subterranean contest really began from July.

यह साबित हो रहा था, कि अबकी बार रेजीडेन्सी पर काँतिकारियों का कब्जा हो ही जायेगा। ११ अगस्त को मार्टिन के कटघरे से पचास फीट की दूरी पर जो भयंकर विस्फोट हुआ, वह फिरंगियों के लिये जान लेवा साबित हुआ था।[२२] पूर्व की ओर के सुरंगी विस्फोट में दो यूरोपियन उड़ गये थे।[२३]

२०, २१, २२, और २३ जारी :

A strick watch had to be kept for any suspicious sound and the mines had to be countermind. The burst of the mining compaign fell on Captain Fulten who would patiently wait at a suspected spot for hours like a terrier at a rat-hole. Sometimes the two contending parties had only a thin wall of a few feet of earth between them. The Residency was for the second time seriously threatened on the 10th. August. About eleven in the merning a mine exploded near the Martineire clearing about fifty feet of the palisades. They fellowed a

निरन्तर सतर्कता के बावजूद भी सिःख रेजीमेंट के पास एक सुरंगी विस्फोट हुआ। इन सबका संचालन पासी सैनिक अपनी जान की परवाह न करते हुये कर रहे थे। अंग्रेज मौके की नज़ाकत को जान रहे थे, फिर

२०, २१, २२ और २३ जारी :

furious fusillade. Colenel Inglish had a narrow escape the man nezt to him being shot dead. Another mine exploded on the east side and two Europeon soldiers were blown into the air but they sufferred nothing more than a little shaking, One fell within the compound, the other was thrown outside but he jumped over the wall and ran to safety. Despite un-remitting vigilance another mine was exploded near the Sikh square causing a breach thirty feet wide.

1857 S.N. Sen

भी योजनाएं बनाते जा रहे थे। इसी पर श्री राही मासूम रजा साहब ने अपनी किताब १८५७ में बयान किया है।

हाँ फ़िरंगी को है मौ.क़े की नज़ाकत की ख़बर,
दिल की धड़कन बढ़ी, आई जो शबे ग़म की सहर
जंग के नक़्शे वह मिलजुल के बनाते हैं मगर
अपने अन्जाम पे रह रह के ठहरती है नज़र।

क्योंकि :–

कई रातों की सहर आई, लड़ाई न रूकी,
दोपहर बारहा कजलाई, लड़ाई न रूकी।

अवध की आज़ादी के लिये, कितने ही वीरों ने अपनी–अपनी जानें दांव पर लगा दीं, पर आज इनको देखने वाला कोई नहीं है। सच्चे आज़ादी के मतवालों की याद ही पासी जाति की कहानी कहती है।

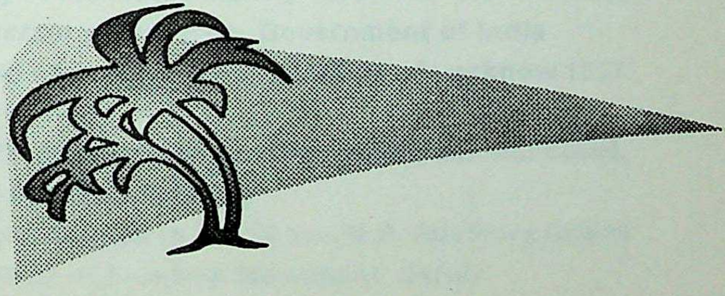

निरन्तर सतर्कता के बावजूद भी सि:ख रेजीमेंट के पास एक सुरंगी विस्फोट हुआ। इन सबका संचालन पासी सैनिक अपनी जान की परवाह न करते हुये कर रहे थे। अंग्रेज मौके की नज़ाकत को जान रहे थे, फिर

२०, २१, २२ और २३ जारी :

furious fusillade, Colenel Inglish had a narrow escape the man nezt to him being shot dead. Another mine exploded on the east side and two Europeon soldiers were blown into the air but they sufferred nothing more than a little shaking, One fell within the compound, the other was thrown outside but he jumped over the wall and ran to safety. Despite un-remitting vigilance another mine was exploded near the Sikh square causing a breach thirty feet wide.

1857 S.N. Sen

भी योजनाएं बनाते जा रहे थे। इसी पर श्री राही मासूम रजा साहब ने अपनी किताब १८५७ में बयान किया है।

हाँ फ़िरंगी को है मौ.क़े की नज़ाकत की ख़बर,
दिल की धड़कन बढ़ी, आई जो शबे ग़म की सहर
जंग के नक़्शे वह मिलजुल के बनाते हैं मगर
अपने अन्जाम पे रह रह के ठहरती है नज़र।

क्योंकि :–

कई रातों की सहर आई, लड़ाई न रुकी,
दोपहर बारहा कजलाई, लड़ाई न रुकी।

अवध की आज़ादी के लिये,कितने ही वीरों ने अपनी–अपनी जानें दांव पर लगा दीं, पर आज इनको देखने वाला कोई नहीं है। सच्चे आज़ादी के मतवालों की याद ही पासी जाति की कहानी कहती है।

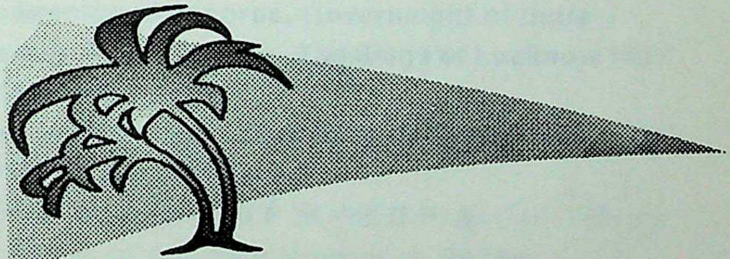

सहायक पुस्तकों की सूची

विगत बीस वर्षो के अध्यन तथा परिश्रम से प्रस्तुत इस पुस्तक के लिखने में जिन पुस्तकों मूलपत्र, दस्तावेज आदि से सहायता ली गई है, उनकी सूची निम्न है। दुर्लभ सामग्री देने वाले कुछ कृपालु अपना नाम अज्ञात रखना चाहते हैं। अधिकांश सहायक ग्रंथ अथवा काग़ज़ात जो उपलब्ध हो पाये हैं, उन्हे ख़रीद कर संग्रह कर लिया गया हैं पुस्तक में स्थान–स्थान पर जिन ग्रंथों का उद्धरण दिया गया है, वे प्रायः वही ग्रंथ हैं, जिनको मैनें स्वयं पढ़ा है या अपने सामने पढ़वाकर सुना है। (उर्दू ग्रंथ या काग़ज़ात) दुर्लभ चित्रों को भी खोजने में काफी समय लगा है, जो विभिन्न वाचनालयों एवं विद्वानों के पास से मिले हैं।

1- AWADH UNDER WAJID ALI SHAH- G.D. BHATNAGAR (Thisis for Docter degree)

२– अवध की लूट (डक्वायटी इन एक्सेलसिस) मेजर आर० डब्लू० वर्ड अनुवादक राजेन्द्र पाण्डेय

३– अफ़सानये लखनऊ– आग़ा हज्जू शरफ़ (उर्दू) ल० वि०

4- EIGHTEEN FIFTY SEVEN- Surendra Nath Sen

५– अट्ठारह सौ सत्तावन– राही मासूम रजा

6- Awadh IN REVOLT 1857-1858, A STUDY OF POPULAR RESISTANCE
RUDRANGSHU MUKHERJEE..

7- A History of the Indian Mutiny Three vol- G.W. Forrost CIE, Ex director of Records, Government of India

8- A. Feeling of Quiet power- The Siege of Lucknow 1857 P.J.O. TAYLAR.

9- Clash of culture (the end of the Awadh Imperial court, 1847-1856) Michael. H.Fisher

10- Freedom Struggle in U.P III Vol. U.P. Advisory Board for the History of Freedom Movement Series- Information Department.

११– सवानेहाते सलातीन अवध–सैय्यद कमालुद्दीन हैदर उर्फ/सैय्यद मोहम्मद मीर ''ज़ायर'' और कैसरे तवारीख भाग–२

१२– भारत में अंग्रेजी राज़ (दो भाग) सुन्दर लाल

13- History of Awadh- (As told by their Historian) H.M. Elliot & Dawanson

14- Journey through- The Kingdom of oudh in 1849-1850 two vol.- Sir William Henery sleeman

15- गुजश्त: लखनऊ मौलाना अब्दुल हलीम शरर अनुवादक श्री मती हुमैरा सिद्दीकी, एम०ए०

१६– ग़दर के फूल – अमृत लाल नागर

17- Lucknow Gazatteer vol. xxxvii of the District Gazetteers of the unitel prouinces of Agra and Oudh Compiled and edited by H.R. NEVILL. I.C.S. Allahabad.

१८– लखनऊ जनपद का राष्ट्रीय इतिहास (स्वतंत्रता संग्राम का दिग्दर्शन) तबस्सुम निज़ामी भारतीय

19 Lucknow : THE LAST PHASE OF AN ORIENTAL CULTURE ABDUL HALIM SHARAR-Translated And Edited By E.S. HARCOURT AND FAKHIR. HUISSIN.

२०– पुरुषोत्तम– लक्ष्मीनारायण लाल

21- Reminiscences of the great Mutiny 1857-1859- Forbes Mitehell.

22- The Raj the Indian Mutiny and the Kingdom Oudh 1801-1859 John Pemble, Reecerch Fellow, University of Leicester.

२३– ग़दर के पत्र – ख्वाजा हसन निज़ामी अनुवादक – आचार्य चतुर सेन शास्त्री।

डी० के० पंत

मेरी जुबानी :-

श्री कृष्ण कान्त रावत जी द्वारा तथ्यो और साक्षों पर आधारित ''धधकती हवाये'' ''सिकन्दर बाग की कहानी किताबो की जुबानी'' हमारे इतिहास का सूक्ष्मदर्शी निरीक्षण है। जो इतिहास को बनाने वाले तानो-बानो का ज्ञान देता है। हर व्यक्ति और उससे सम्बन्धित समष्टि इतिहास का ही प्रमाण है। यदि कोई भी व्यक्ति उस रास्ते का इतिहास जानने की चेष्टा करे जिसके कारण आज वो हो सका तो अवश्य ही उसके रास्ते के साथ-साथ जुडे हुये अतीत के सत्य भी उसे ज्ञात हो जायेंगे जो कि सच्चा इतिहास होगा।

इस पुस्तक मे श्री रावत जी ने अपने व्यष्टि का अतीत देखना चाहा पर उसके साथ-साथ बडे इतिहास के खत्म होते टुकडे का सूक्ष्म अवलेखन बहुत सुन्दर बन पडा है।

मेरी कामना है श्री रावत जी इसमे और आगे बढे, मेरी ये भी कामना है कि मै और सभी यदि अपने-अपने धरातल पर कुछ थोडी भी चेष्टा करे तो स्यात् हमे अपने इतिहासिक गौरव को उचित दर्शन हो सके।

देवेंद्र कुमार पंत